

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 371

पश्चिम बंगाल राज्य

बनाम

भारत संघ

(न्यायमूर्तिगण बी. पी. सिन्हा, सी. जे., जाफर इमाम, के. सुब्बा राव, जे. सी. शाह,
एन. राजगोपाला आयंगर और जे. आर. मुधोलकर)

भूमि, अधिग्रहण-राज्य की संपत्ति-भारत संघ द्वारा अधिग्रहण किए गए कोयला वाले क्षेत्र-
संसद, अधिनियम बनाने की शक्ति

कानून-भारतीय संविधान, यदि संघीय नहीं-संप्रभुता, यदि राज्यों में भी निहित है-मौलिक
अधिकार, क्या इसके द्वारा दावा किया जा सकता है राज्य-"व्यक्ति" और "संपत्ति", कोयले का
अर्थअसर क्षेत्र (अधिग्रहण और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का XX)-भारत का
संविधान, कला। 13 , 31 , 73 , 162 , 245 , 246 , 248 , 249 , 254 , 294 , 298 ,
सातवीं अनुसूची, सूची I प्रविष्टियाँ 52,54,97, सूची II प्रविष्टियाँ 23,24, सूची III
प्रविष्टियाँ 42।

संसद द्वारा अधिनियमित कोयला धारक क्षेत्र (अधिग्रहण और विकास) अधिनियम, 1957 के
तहत, भारत संघ ने पश्चिम बंगाल राज्य में कुछ कोयला धारक क्षेत्रों का अधिग्रहण करने का
प्रस्ताव रखा। राज्य ने यह तर्क देते हुए एक मुकदमा दायर किया कि यह अधिनियम राज्य में
निहित या उसके स्वामित्व वाली भूमि पर लागू नहीं होता है और यदि यह ऐसी भूमि पर लागू
होता है तो यह अधिनियम संसद की विधायी क्षमता से परे है।

आयोजित, (सिन्हा सी. जे., इमाम, शाह, अय्यंगर और मुधोलकर, जे. जे. के अनुसार) , कि
प्रासंगिक की उचित व्याख्या पर अधिनियम के प्रावधानों से यह स्पष्ट था कि यह अधिनियम
राज्य में निहित या उसके स्वामित्व वाले कोयला वाले क्षेत्रों पर भी लागू होता है। अधिनियम की
प्रस्तावना इस तर्क का समर्थन नहीं करती कि अधिनियम का उद्देश्य केवल व्यक्तियों के अधिकार
प्राप्त करना था, न कि कोयले वाले क्षेत्रों में राज्यों के अधिकार। यद्यपि उद्देश्यों और कारणों के
कथन ने राज्य के तर्क का समर्थन किया, लेकिन इसका उपयोग अधिनियम के मूल प्रावधानों के
सही अर्थ और प्रभाव को निर्धारित करने के लिए नहीं किया जा सका।

आगे आयोजित किया गया (सिन्हा सी. जे., इमान, शाह, अय्यंगर और मुधोलकर जे. जे. के
अनुसार। जे. सुब्बा राव, इसके विपरीत) ने कहा कि कोयला वहन क्षेत्र (अधिग्रहण और

विकास) अधिनियम, 1957, संसद की शक्तियों से परे नहीं है और वैध है। संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची III की प्रविष्टि 42 के तहत, संसद किसी राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण के लिए कानून बनाने में सक्षम है।

भारत का संविधान वास्तव में संघीय नहीं है। चरित्र। के बीच शक्तियों के वितरण का आधार संघ और राज्यों का कहना है कि केवल वे शक्तियाँ जो स्थानीय समस्याओं के विनियमन से संबंधित हैं, राज्यों में निहित हैं और शेष विशेष रूप से वे जो देश की आर्थिक, औद्योगिक और वाणिज्यिक एकता को बनाए रखते हैं, संघ पर छोड़ दिए जाते हैं। यह कहना सही नहीं है कि पूर्ण संप्रभुता राज्यों में निहित है। संसद जो सक्षम है

विनाशकारी राज्य को निरपेक्ष के सिद्धांत पर नहीं रखा जा सकता है। राज्यों की संप्रभुता, द्वारा प्राप्त करने में अक्षम होना संविधान को एक संघ माना जाता था और राज्य संघ को संप्रभु मानते थे, संघ की शक्ति राज्यों में स्थित संपत्ति के संबंध में कानून अप्रतिबंधित रहेगा। द्वारा प्रदत्त संसद की शक्ति प्रविष्टि 42, सूची III, प्रविष्टि 52 और 54, सूची I के तहत शक्ति के प्रभाव के लिए सहायक के रूप में, संविधान के किसी भी प्रावधान द्वारा प्रतिबंधित नहीं है और इसका उपयोग करने में सक्षम है

राज्यों की संपत्ति का भी सम्मान। इस तथ्य से कि कला। 294 संपत्ति को राज्यों में निहित करता है और वह कला। 298 राज्यों को उस संपत्ति को हस्तांतरित करने का अधिकार देता है जो राज्यों की संपत्ति के अनुरूप नहीं है।

संवैधानिक संशोधन के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है, अनुच्छेद 294 में राज्यों की संपत्ति के हस्तांतरण के खिलाफ कोई निषेध नहीं है और यदि संपत्ति हस्तांतरण करने में सक्षम है।

राज्य द्वारा हस्तांतरित यह अधिग्रहण करने में सक्षम है।

एस के तहत। 127 भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत केंद्र सरकार प्रांत से भूमि अधिग्रहण की मांग कर सकती है 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 373

संघ की ओर से यदि यह निजी भूमि थी और इसे संघ को हस्तांतरित करने के लिए यदि यह प्रांत की भूमि थी, और प्रांतीय सरकार के पास निर्देश का पालन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। केंद्र सरकार को ऐसी शक्ति सौंपना प्रांतीय स्वायत्तता का उल्लंघन नहीं माना गया था। वर्तमान संविधान में इसी तरह के प्रावधान की अनुपस्थिति से कोई फर्क नहीं पड़ा। भारत सरकार अधिनियम के तहत अनिवार्य रूप से संपत्ति हासिल करने की शक्ति विशेष रूप से प्रांतों में निहित थी, लेकिन संविधान के तहत संघ के पास भी वह शक्ति है।

यदि पर्याप्त आयाम के संदर्भ में संविधान के अन्य प्रावधान अधिग्रहण के लिए कानून बनाने की शक्ति प्रदान करते हैं। राज्य की संपत्ति, शक्ति को पराजित नहीं किया जा सकता है

क्योंकि संपत्ति प्राप्त करने की व्यक्त शक्ति आम तौर पर विशेष रूप से और शब्दों में राज्य की संपत्ति को संदर्भित नहीं करती है। सम्पत्ति अर्जित करने और माँगने की शक्ति का प्रयोग संघ और राज्यों द्वारा समवर्ती रूप से किया जा सकता है, लेकिन इस कारण से शक्ति के प्रयोग में कोई संघर्ष नहीं हो सकता है क्योंकि इस तरह के संघर्ष को कला द्वारा रोका जाता है। 31 (3) और 254।

संविधान के तहत मौलिक अधिकारों का दावा न केवल व्यक्तियों और निगमों द्वारा किया जा सकता है, बल्कि कुछ मामलों में

राज्य भी। राज्यों में निहित संपत्ति का अधिग्रहण प्रविष्टि 42, सूची III के तहत बनाई गई कानून के तहत नहीं किया जा सकता है, जब तक कि कानून कला की आवश्यकताओं का पालन नहीं करता है। 31 .

नियम कि राज्य बाध्य नहीं है, जब तक कि यह स्पष्ट रूप से न हो किसी कानून में नामित या आवश्यक निहितार्थ से एक है

व्याख्या। एक संवैधानिक दस्तावेज की व्याख्या करने में। विधायी शक्ति प्रदान करने वाले प्रावधानों को आम तौर पर उदारता से और उनके व्यापक आयाम में अंतरित किया जाना चाहिए। वहाँ कोई नहीं है

संविधान में संकेत है कि "संपत्ति" शब्द में सूची III की प्रविष्टि 42 को किसी भी प्रतिबंधित अर्थ में समझा जाना चाहिए; इसे तदनुसार संबंधित संपत्ति को शामिल करने के लिए माना जाना चाहिए।

राज्यों को भी। कोयला खदानों और कोयला वाली भूमि सहित राज्य सत्ता से बाहर हैं। भारत के संविधान के तहत राजनीतिक संप्रभुता है संवैधानिक संस्थाओं, अर्थात् संघ और राज्यों के बीच विभाजित, जो कानूनी व्यक्तित्व हैं

संविधान द्वारा सृजित साधनों के माध्यम से संपत्ति और कार्य। भारतीय संविधान स्वीकार करता है कि संघीय अवधारणा और संप्रभु शक्तियों को समन्वित संवैधानिक संस्थाओं, अर्थात् संघ और 374 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल के बीच वितरित करता है।

राज्यों। इस अवधारणा का तात्पर्य है कि जब तक संविधान इस तरह के हस्तक्षेप का प्रावधान नहीं करता है, तब तक कोई दूसरे के सरकारी कार्यों या उपकरणों का अतिक्रमण नहीं कर सकता है। द.

इकाइयों को आवंटित विधायी क्षेत्रों में कानून के लिए विषय शामिल हैं और वे अपने आवंटित क्षेत्रों में काम करने वाली समन्वय इकाइयों के बीच संबंधों से संबंधित नहीं हैं। यह संविधान के

अन्य प्रावधानों द्वारा विनियमित है और उनका कोई प्रावधान नहीं है जो एक इकाई को समझौते के अलावा दूसरे की संपत्ति छीनने में सक्षम बनाता है।

सार्वजनिक उद्देश्य के लिए एक नागरिक की संपत्ति हासिल करने की शक्ति संप्रभु की निहित शक्तियों में से एक है। के तहत

भारतीय संविधान में कहा गया है कि संप्रभु शक्ति संघ और राज्यों के बीच विभाजित है। यह शक्ति में निहित है

एक संप्रभु द्वारा अधिग्रहण कि यह केवल शासित की संपत्ति से संबंधित होना चाहिए। क्योंकि एक संप्रभु अपनी संपत्ति हासिल नहीं कर सकता है। अधिग्रहण और अधिग्रहण की अवधारणा में यह भी निहित है कि वे मुआवजे के भुगतान पर सार्वजनिक उद्देश्य के लिए होंगे। कला में "व्यक्ति" शब्द। 31 इसमें "राज्य" शामिल नहीं है; यदि प्रविष्टि 42 संसद को किसी राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण करने का अधिकार देती है, तो राज्य को कला का संरक्षण नहीं मिलेगा। 31 जो अन्य सभी व्यक्तियों के लिए उपलब्ध है। इसलिए, प्रविष्टि 42 सूची III संसद या राज्य विधानमंडल को दूसरे की संपत्ति के अधिग्रहण के लिए कानून बनाने के लिए अधिकृत नहीं करती है।

न ही अवशिष्ट कला। 248 और प्रविष्टि 97 सूची I संसद को किसी राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण करने की कोई भी शक्ति प्रदान करती है।

अवशिष्ट विधायी क्षेत्र संभवतः अंतर-राज्य संबंधों को शामिल नहीं कर सकता है, क्योंकि वह मामला विधायी सूचियों के माध्यम से संघ और राज्यों के बीच वितरित नहीं किया जाता है। जब संपत्ति के अधिग्रहण के लिए कोई विशिष्ट प्रावधान किया जाता है, तो राज्यों के अलावा अन्य संपत्तियों में उस प्रवेश को सीमित करना और राज्यों की संपत्ति के अधिग्रहण के लिए अवशिष्ट शक्ति का सहारा लेना असंगत होगा। इसके अलावा संघ द्वारा मुआवजे के बिना राज्यों की संपत्ति का अधिग्रहण करने की विसंगति अभी भी बनी रहेगी।

न तो सूची 2 की प्रविष्टि 24 और न ही सूची 1 की प्रविष्टि 52 ने संसद द्वारा एक कानून बनाने से पहले राज्य विधानमंडल को यह आदेश दिया कि संघ द्वारा किसी विशेष उद्योग का नियंत्रण, ऐसी घोषणा के बाद, राज्य की भूमि के अधिग्रहण के लिए ऐसा कानून बनाने के लिए जनहित में या संसद के लिए समीचीन है, क्योंकि वे केवल किसी मौजूदा उद्योग या उद्योग के विनियमन से संबंधित हैं, जिसे बाद में शुरू किया जा सकता है, लेकिन भूमि अधिग्रहण के साथ नहीं।

1952 का अधिनियम 12 और 1957 का अधिनियम 67 केवल खानों के विनियमन और आगे की घोषणाओं से संबंधित है।

उक्त अधिनियम स्पष्ट रूप से उसके तहत प्रदान किए गए विनियमन की सीमा तक ही सीमित हैं और इसलिए, अधिनियम की वैधता को बनाए रखने के लिए उसमें की गई घोषणाओं पर भरोसा नहीं किया जा सकता है।

विदेशी संविधानों या उसके तहत लिए गए निर्णयों से हमारे संविधान के व्यक्त प्रावधानों को इसकी अलग व्यवस्था के संदर्भ में समझने में कोई प्रेरणा नहीं ली जा सकती है। राज्यों की संपत्ति का अधिग्रहण संघ द्वारा केवल समझौते द्वारा किया जा सकता है।

मौलिक न्यायनिर्णय: 1961 का वाद सं. 1। एस. एम. बोस, पश्चिम बंगाल राज्य के महाधिवक्ता, बी. सेन, एस. सी. बोस, मिलन के. बनर्जी, वादी की ओर से पी. के. चटर्जी और पी. के. बोस। एम. सी. सीतलवाड़, भारत के अटॉर्नी जनरल, एच. एन. सान्याल, भारत के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल, प्रतिवादी की ओर से बिशन नारायण, एन. एस. बिंद्रा और आर. एच. ढेबर।

बी. सेन और आई. एन. शर्मा, इंटरवेनर के लिए नंबर 1. पंजाब राज्य के महाधिवक्ता एस. एम. सीकरी, आर. गणपति अय्यर और पी. डी. मेनन ने हस्तक्षेपकर्ता संख्या 2. बी. सी. बरुआ, असम राज्य के महाधिवक्ता और नौनीत लाल, मध्यस्थ संख्या 3 के लिए। दीनबंधु साहू, उड़ीसा राज्य के महाधिवक्ता बी. के. पी. सिन्हा और पी. डी. मेनन हस्तक्षेपकर्ता संख्या 4 के लिए।

ए. रंगनाथम चेट्टी। और ए. वी. रंगम, इंटरवेनर नंबर 5 के लिए। लाल। इंटरवेनर नंबर 6 के लिए नारायण सिन्हा और डी. गोबर्धन।

के. एस. हजेला और सी. पी. लाल, मध्यस्थ के लिए नंबर 7. पी. डी. मेनन, इंटरवेनर नंबर 8 के लिए। एस. एम. सीकरी, पंजाब के पट्टाखे के महाधिवक्ता और पी. डी. मेनन, मध्यस्थ संख्या 9 के लिए।

1962. 21 दिसंबर। सिन्हा, सी. जे., इमाम, शाह, अय्यंगार और मुधोलकर, जे. जे. का निर्णय।,

सिन्हा, सी. जे., सुब्बा राव, जे. ने एक अलग निर्णय दिया।

सिन्हा, सी. जे.-यह पश्चिम बंगाल राज्य द्वारा भारत संघ के खिलाफ एक मुकदमा है।

यह कि संसद केंद्र सरकार को किसी राज्य में निहित भूमि और भूमि पर अधिकार प्राप्त करने के लिए अधिकृत करने वाला कानून बनाने के लिए सक्षम नहीं है, और कोयला धारक क्षेत्र

(अधिग्रहण और विकास) अधिनियम (1957 का XX)-जिसे इसके बाद संसद द्वारा अधिनियमित अधिनियम के रूप में संदर्भित किया जाएगा, और विशेष रूप से एस. एस. और उनमें से 7, संसद की विधायी क्षमता से परे थे, और कोयला वहन के संबंध में अधिनियम की इन धाराओं के प्रावधानों के तहत कार्यवाही करने से बचाव करने वाले को रोकने वाले निषेधाज्ञा के लिए भी थे।

वादी में निहित भूमि। जैसा कि वर्तमान में दिखाई देगा, यह मुकदमा महान सार्वजनिक महत्व के सवाल उठाता है, जो संविधान के काफी बड़ी संख्या में अनुच्छेदों की व्याख्या पर असर डालता है। इस मुकदमे में उठाए गए प्रश्नों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, इस न्यायालय द्वारा भारत के राज्यों के सभी महाधिवक्तों को नोटिस जारी किए गए थे। उस सूचना के अनुसरण में, असम, बिहार, गुजरात, मद्रास, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य या तो अपने-अपने अधिवक्ताओं के माध्यम से पेश हुए हैं। सामान्य या अन्य वकील के माध्यम से। राष्ट्रीय

कोयला विकास निगम लिमिटेड, इसके प्रमुख के साथ

बिहार के रांची में स्थित कार्यालय ने भी अपने बीच लंबित मुकदमेबाजी को देखते हुए हस्तक्षेप किया है। प्रतिवादियों और पश्चिम बंगाल राज्य के रूप में वादी। हमने पक्षकारों की सलाह को बहुत लंबे समय तक सुना है।

अभियोग निम्नलिखित एल्लेगा पर आधारित है टियोन। वादी एक राज्य है, जो संविधान की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट है, जो इसके हिस्से के रूप में है भारत, जो राज्यों का संघ है। के आधार पर कला. 294 संविधान, पश्चिम बंगाल में सभी संपत्ति और परिसंपत्तियाँ, जो प्रांत की सरकार के उद्देश्यों के लिए महामहिम में निहित थीं

राज्य के उद्देश्यों के लिए बंगाल राज्य पश्चिम बंगाल राज्य में निहित हो गया। पश्चिम बंगाल राज्य ने अपनी अनन्य विधायी शक्तियों का प्रयोग करते हुए, पश्चिम बंगाल बंगाल संपदा अधिग्रहण अधिनियम, 1954 (1954 का डब्ल्यू. बी. 1) अधिनियमित किया। अधिनियम के तहत जारी अधिसूचना द्वारा, जैसा कि संशोधित किया गया है, खानों और खनिजों सहित उप-भूमि में अधिकारों के साथ-साथ सरकार के उद्देश्यों के लिए राज्य में निहित सभी संपदाओं और बिचौलियों और रैयतों के अधिकार, बाधाओं से मुक्त हैं। संसद ने भारत के किसी भी हिस्से में किसी भी भूमि या भूमि पर किसी भी अधिकार का अधिग्रहण करने के लिए भारत संघ को अधिकृत करने वाला विवादित अधिनियम लागू किया। अधिनियम के तहत अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत संघ ने 21 सितंबर, 1959 और 8 जनवरी, 1960 की दो अधिसूचनाओं द्वारा वादी में निहित भूमि के भीतर कोयले की संभावना व्यक्त करने का इरादा व्यक्त किया है। अधिनियम को लागू करने के लिए संसद की क्षमता और प्राप्त करने की इसकी शक्ति के बारे में वादी और प्रतिवादी के बीच विवाद और मतभेद पैदा हो गए हैं। वादी की

संपत्ति, जो एक संप्रभु प्राधिकरण है। याचिका के पैराग्राफ 9 में, इस बारे में एक विरोधाभासी टिप्पणी की गई थी कि क्या प्रस्तावित अधिग्रहण सार्वजनिक उद्देश्य के लिए था या नहीं, लेकिन मामले की वास्तविक सुनवाई में, बंगाल के विद्वान महाधिवक्ता ने उस तर्क को वापस ले लिया, और इसलिए, वह मुद्दा अब जीवित नहीं है।

एस के तहत। 80 कहा जाता है कि सिविल प्रक्रिया संहिता का विधिवत पालन किया गया है।

प्रतिवादी का लिखित कथन वाद में लगाए गए तथ्य के आरोपों से इनकार नहीं करता है,

लेकिन अधिनियम को अधिनियमित करने के लिए संसद की विधायी क्षमता और किसी राज्य की किसी भी संपत्ति को प्राप्त करने के लिए प्रतिवादी की शक्ति के रूप में प्रत्येक और सभी उप मिशनों या कानूनी तर्कों की शुद्धता से इनकार करता है। इस बात से भी इनकार किया जाता है कि पश्चिम बंगाल राज्य एक संप्रभु प्राधिकरण है। निम्नलिखित

लिखित वक्तव्य के पैराग्राफ 12 में दिए गए बयान में विचाराधीन अधिनियम में अंतर्निहित नीति को सामने लाया गया है:

" प्रतिवादी का कहना है कि यह जनहित में है कि एक योजना बनाई जानी चाहिए और देश का तेजी से औद्योगीकरण। के लिए इस तरह के तेजी से और नियोजित औद्योगीकरण, यह आवश्यक है कि कोयले का उत्पादन बहुत बढ़ाया जाए क्योंकि कोयला बुनियादी आवश्यकता है

उद्योगों के लिए। खानों का विनियमन और के नियंत्रण में खनिज विकास संसद द्वारा संघ घोषित किया गया है कानून जनहित में समीचीन होना। यह. प्रस्तुत किया जाता है कि परिस्थितियों में, संघ द्वारा कोयला वाले क्षेत्रों का अधिग्रहण इसके लिए आवश्यक है। खानों और खनिज विकास का विनियमन और प्रो बढ़ाने के लिए

जनहित में कोयले का डक्शन। द. प्रतिवादी उन दस्तावेजों पर भरोसा करेगा जिनकी एक सूची यहाँ संलग्न है। उन दलीलों पर, निम्नलिखित मुद्दे थे:

उठाया गया:

1. क्या संसद के पास राज्य में निहित या उसके स्वामित्व वाली भूमि और अन्य संपत्तियों के संघ द्वारा अनिवार्य अधिग्रहण के लिए कानून बनाने का विधायी अधिकार है, जैसा कि शिकायत के पैरा 8 में आरोप लगाया गया है?

2 . क्या पश्चिम बंगाल राज्य एक है संप्रभु प्राधिकरण जैसा कि पैरा 8 में आरोप लगाया गया है शिकायत?

3. चाहे यह मानते हुए कि पश्चिम का राज्य बंगाल एक संप्रभु प्राधिकरण है, पार्लिया कम्पुल के लिए एक कानून बनाने का अधिकार है इसकी भूमि और संपत्तियों का आकस्मिक अधिग्रहण?

1. चाहे वह अधिनियम हो या उसका कोई प्रावधान। विधायी क्षमता से परे हैं संसद का?

5. क्या वादी का कोई अधिकार है राहत और यदि है, तो क्या राहत? वादी की ओर से दलीलों के बाद, और वादी के समर्थन में राज्यों का, समाप्त हो गया था, संशोधन के लिए आवेदन किया गया था याचिका में प्रार्थना की गई है कि निम्नलिखित पैराग्राफ को पैराग्राफ 9 ए के रूप में जोड़ा जाए, जो इस प्रकार है:

" वैकल्पिक रूप से वादी प्रस्तुत करता है कि कोयला उत्पादन क्षेत्र (अधिग्रहण और विकास) अधिनियम (1957 का अधिनियम XX) इसके वास्तविक दुष्प्रभावों पर राज्य में निहित भूमि पर निर्माण लागू नहीं होता है।

या वादी पश्चिम राज्य के स्वामित्व में है

बंगाल। आगे कथित अधिसूचनाएँ

उक्त अधिनियम के तहत जारी किए गए हैं

शून्य और कोई प्रभाव नहीं "।

विद्वान महान्यायवादी के अनुरोध पर

इस स्थिति पर विचार करने के लिए एक छोटा स्थगन दिया गया था कि क्या मांगे गए संशोधन का प्रतिवादी की ओर से विरोध किया जाना चाहिए या नहीं। चूंकि मांगे गए संशोधन का विरोध नहीं किया गया था, इसलिए इसे मंजूरी दे दी गई और इनमें एक अतिरिक्त मुद्दा उठाया गया। शर्तें:

" क्या 1957 का अधिनियम XX अपने वास्तविक अर्थ पर है

यह निहित या उसके स्वामित्व वाली भूमि पर लागू होता है

वादी राज्य? "380 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल।

इस प्रकार यह प्रतीत होगा कि पक्ष तथ्य और दृढ़ संकल्प के किसी भी प्रश्न पर मुद्दे पर नहीं हैं।

विवाद का पूरी तरह से अंतर पर निर्भर करता है संविधान के प्रासंगिक प्रावधानों और अधिनियम के दायरे और प्रभाव का ढोंग।

दलों के बीच जुड़े मुद्दे मुख्य रूप से हैं -

दो, (1) चाहे अधिनियम के प्रावधानों के सही निर्माण पर, वे वादी में निहित या उसके स्वामित्व वाली भूमि पर लागू होते हैं; और (2) यदि इसका सकारात्मक उत्तर दिया जाता है कि क्या विधायी क्षमता थी

संसद में विवादित कानून को अधिनियमित करने के लिए। अधिनियम का दायरा और प्रभाव निर्धारण के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है, पहली बार में, क्योंकि उस प्रश्न का निर्धारण दूसरे प्रश्न पर चर्चा के दायरे को प्रभावित करेगा। जैसा कि पहले ही संकेत दिया जा चुका है, जब बंगाल के विद्वान महाधिवक्ता द्वारा पहली बार मामला खोला गया था, तो उन्होंने इस आधार पर आगे बढ़े कि अधिनियम राज्य के हितों को प्राप्त करने के लिए अभिप्रेत था, और इस आशय से अपना पक्ष रखा कि संसद को ऐसा कोई अधिनियम पारित करने की कोई क्षमता नहीं थी जिसका राज्य के हित को प्रभावित करने या प्राप्त करने का प्रभाव था। लेकिन

बाद में उन्होंने यह वैकल्पिक स्थिति भी अपनाई कि अधिनियम, इसके वास्तविक निर्माण पर, राज्य के अंतर-राज्य या संपत्ति को प्रभावित नहीं करता है। अन्य राज्य जो

अपने संबंधित वकील के माध्यम से पेश हुए हैं, उन्होंने वादी के इस रुख का समर्थन किया है और उन प्रावधानों पर विशेष जोर दिया है

अधिनियम, जो उनका तर्क है, उनके इस तर्क का समर्थन करता है कि अधिनियम का उद्देश्य राज्यों के हितों को प्राप्त करना या किसी भी तरह से प्रभावित करना नहीं था। इस संबंध में, तर्क पत्र के पृष्ठों 16-17 पर दिए गए उद्देश्यों और कारणों के विवरण में निम्नलिखित अनुच्छेदों का स्पष्ट संदर्भ देते हुए शुरू हुए।

पुस्तक:

" 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के अनुसार कोयले का भविष्य में विकास राज्य की जिम्मेदारी है। 1 एस. सी. आर. में सभी नई इकाइयाँ।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 381

कोयला उद्योग केवल द्वारा स्थापित किया जाएगा
जैसा कि निर्धारित किया गया है असाधारण परिस्थितियों में राज्य बचत

संकल्प में नीचे।

1953 में भारत में कोयले का उत्पादन था

38 मिलियन टन और उत्पादन का लक्ष्य

दूसरी पंचवर्षीय योजना 60 मिलियन निर्धारित की गई है।

यह तय किया गया है कि

टन प्रति वर्ष।

22 मिलियन टन का अतिरिक्त उत्पादन

प्रति वर्ष की परिकल्पना की गई। सार्वजनिक क्षेत्र को करना चाहिए प्रति वर्ष
अतिरिक्त 12 मिलियन टन का उत्पादन,

शेष राशि निजी उद्योग को आवंटित की जा रही है

मौजूदा कोयला खानों से उत्पादन के लिए और तत्काल

निकटवर्ती क्षेत्र।

इनमें से

अतिरिक्त 12 मिलियन टन

सार्वजनिक क्षेत्र,

थोक (10 मिलियन टन प्रति वर्ष)

करनी होगी।

के विकास से

कोरबा, करणपुरा, कथारा जैसे नए कोयला क्षेत्र

और झिलिमिली और बिसरामपुर। लगभग सभी

हालाँकि कोयला वाले क्षेत्र खनन के दायरे में आते हैं।

निजी व्यक्तियों या संभावित लाइसेंसधारियों द्वारा रखे गए पट्टे जो खनन पट्टे का अधिकार रखते हैं। इसलिए यह

अपर्युक्त कोयले के अधिग्रहण के लिए बिजली लेने का प्रस्ताव

निजी पट्टों या संभावना द्वारा कवर किए गए क्षेत्र अनुज्ञप्तिधारी जो उत्पादन में अधिशेष पाए जाते हैं

निजी क्षेत्र में आवश्यक और इन क्षेत्रों में राज्य सरकार के पट्टेदारों के रूप में काम करना।

द्वारा जमींदारी अधिकारों के अधिग्रहण के साथ

राज्य सरकारों, खनिजों में अधिकार अब राज्य सरकारों के सभी क्षेत्रों में निहित हैं, और

खनिज अधिकारों के अधिग्रहण के लिए भूमि अधिग्रहण अधिनियम, 1894 का उपयोग करना उचित नहीं है।

क्योंकि केंद्र सरकार राज्यों में निहित स्वामित्व अधिकारों को हासिल करने का इरादा नहीं रखती है। कोई अन्य मौजूदा केंद्रीय या राज्य विधान नहीं है जिसके तहत सरकार के पास 382 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल के लिए सरकार द्वारा अधिग्रहित कोयला वाले क्षेत्रों पर पट्टेदार के अधिकारों को तुरंत प्राप्त करने की शक्तियां हैं।

अतिरिक्त कोयला उत्पादन। यह तदनुसार है

विधेयक में अधिकारों के अधिग्रहण के लिए उचित मुआवजे का भुगतान करने का प्रावधान है। संभावित लाइसेंसधारी और खनन पट्टेदार।

कोयला खनन उद्योग और वास्तविक राज्य के मामले में राज्य की नीति निर्धारित करने के अलावा

उसके संबंध में मामलों के, उद्देश्यों और कारणों के कथन में वे महत्वपूर्ण शब्द हैं जिन पर

राज्य, "क्योंकि केंद्र सरकार राज्यों में निहित स्वामित्व अधिकारों को प्राप्त करने का इरादा नहीं रखती है. और", राज्य को प्रभावित किए बिना। मालिकों के रूप में सरकारी अधिकार। हालाँकि यह अच्छी तरह से तय किया गया है कि संसद में पेश किए जाने पर किसी

विधेयक के साथ उद्देश्यों और कारणों के विवरण का उपयोग कानून के मूल प्रावधानों के सही अर्थ और प्रभाव को निर्धारित करने के लिए नहीं किया जा सकता है। उनका उपयोग कानून की पृष्ठभूमि और पूर्ववर्ती स्थिति को समझने के सीमित उद्देश्य के अलावा नहीं किया जा सकता है। लेकिन हम इस कथन का उपयोग अधिनियम के निर्माण में सहायता के रूप में या यह दिखाने के लिए नहीं कर सकते हैं कि विधायिका का इरादा राज्य में निहित स्वामित्व अधिकारों को प्राप्त करने या किसी भी तरह से खनिजों के मालिकों के रूप में राज्य सरकार के अधिकारों को प्रभावित करने का नहीं था। संसद द्वारा पारित एक कानून, की अभिव्यक्ति है

समग्र रूप से विधायिका का सामूहिक इरादा, और किसी व्यक्ति द्वारा दिया गया कोई भी बयान, भले ही

मंत्रि, अधिनियम के इरादे और उद्देश्य

की व्यापकता को कम करने के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता है

विधान में प्रयुक्त शब्द।

तब यह तर्क दिया गया कि 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की प्रस्तावना रिपोर्ट 383

अधिनियम दायरे की समझ की कुंजी थी

और कानून के प्रावधान। प्रस्तावना इन शब्दों में है:

" भारत के आर्थिक हित में कोयला खनन उद्योग और उसके विकास पर अधिक सार्वजनिक नियंत्रण स्थापित करने के लिए एक अधिनियम जिसमें राज्य द्वारा कोयले वाली या कोयले से युक्त भूमि के अधिग्रहण के लिए प्रावधान किया गया है। किसी समझौते, पट्टा, अनुज्ञप्ति या अन्यथा के आधार पर उपार्जित ऐसे अधिकारों के उन्मूलन या संशोधन के लिए और मामलों के लिए ऐसी भूमि में या उस पर जमा या अधिकार

इसके साथ जुड़ा हुआ है "।

अंतिम दो पंक्तियों पर विशेष जोर दिया गया था

प्रस्तावना, यह दर्शाती है कि केवल किसी समझौते, पट्टे, लाइसेंस या अन्यथा के आधार पर उपार्जित अधिकारों को अधिनियम के प्रावधानों द्वारा समाप्त या संशोधित करने की मांग की जा रही थी। लेकिन यह। तर्क प्रस्तावना में पिछले खंड के शब्दों पर ध्यान देना छोड़ देता है जिसमें

इस तथ्य का संदर्भ है कि अधिनियम का उद्देश्य "कोयले वाली या उसमें शामिल होने की संभावना वाली गैर-कार्य भूमि के राज्य द्वारा अधिग्रहण" के लिए भी था।

जमा "। मुख्य तर्कों पर विचार करने के लिए आगे बढ़ने से पहले बंगाल के विद्वान महाधिवक्ता को यह विज्ञापन देना आवश्यक है कि प्रस्तावना में आने वाले "राज्य द्वारा अधिग्रहण" शब्दों में "राज्य" का संदर्भ संघ से अलग "राज्यों" का संदर्भ था। इस तर्क को केवल खारिज करने के लिए उल्लेख किया जाना चाहिए क्योंकि अवैध अधिनियम का पूरा उद्देश्य और उद्देश्य केंद्र सरकार को कोयला खदानों में काम करने की शक्ति प्रदान करना था और उस संदर्भ में "राज्य" शब्द स्पष्ट रूप से केवल केंद्र को संदर्भित कर सकता था।

सरकार।

अतः प्रस्तावना इस तर्क का समर्थन नहीं करती है कि अधिनियम का उद्देश्य केवल अधिग्रहण करना था

व्यक्तियों के अधिकार, पूर्वक्षण अनुज्ञप्ति से प्राप्त या पट्टों के आधार पर, और 384 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1984] वी. ओ. एल. से बाहर करने के लिए।

कोयले के उत्पादन में राज्यों के अधिकारों को अधिनियम की परिधि में लाना भूमि।
धारा 4, प्रारंभिक परीक्षा के मुद्दे से संबंधित

कोयले की संभावना के इरादे की अधिसूचना

किसी भी सन्दूक में, "भूमि" का संदर्भ देता है,

बिना किसी योग्यता के, और एस। 6 , जो एस पर समतुल्य है। 4 इस तरह के प्रभाव को निर्धारित करता है

पूर्वक्षण लाइसेंस और खनन पट्टों पर अधिसूचना। धारा 7 सरकार को नोटिस देने की भी बात करती है।

उपरोक्त के रूप में अधिसूचित भूमि के पूरे या किसी भी हिस्से का अधिग्रहण करने का इरादा। या ऐसी भूमि में या उस पर कोई अधिकार। धारा 9, जो अधिग्रहण की घोषणा का प्रावधान करती है, ने भी इसी अभिव्यक्ति का उपयोग किया है, "ऐसी भूमि में या उस पर कोई भी भूमि या कोई अधिकार"। एस के लिए प्रावधान। 9 , जो इनमें है

शर्तें:

" बशर्ते कि, जहां घोषणा संबंधित है
 किसी भूमि या भूमि में या उस पर किसी अधिकार के लिए
 राज्य सरकार से संबंधित है जिसके पास या
 पट्टे पर नहीं दिया गया है, ऐसी कोई घोषणा नहीं है
 पूर्व परामर्श के बाद के अलावा किया जाएगा

99

राज्य सरकार के साथ

इस संबंध में यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह परंतुक पहली बार किसी भी भूमि या "राज्य सरकार से संबंधित" भूमि में या उस पर किसी भी अधिकार का विशिष्ट संदर्भ देता है। धारा 9 ए केंद्र सरकार को एस के प्रावधानों का पालन करने की आवश्यकता को समाप्त करने के लिए अधिकृत करती है। 8 , जो किसी भी भूमि के अधिग्रहण के प्रस्ताव पर उठाई गई किसी भी आपत्ति को सुनने का प्रावधान करता है जिसे इसके तहत अधिसूचित किया गया है।

एस. 7 विषय के रूप में-अधिग्रहण की बात। आम तौर पर, यदि केंद्र सरकार द्वारा भूमि के पूरे या किसी हिस्से का या भूमि में या उस पर किसी भी अधिकार का अधिग्रहण करने के अपने इरादे की अधिसूचना जारी की जाती है, तो एस के तहत अधिसूचित किया जाता है। 4 , भूमि में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए भूमि के पूरे या किसी हिस्से के अधिग्रहण या ऐसी भूमि में या उस पर किसी भी अधिकार के अधिग्रहण पर आपत्ति करने का अधिकार है। यदि ऐसी कोई आपत्ति उठाई जाती है, तो ऐसी आपत्ति को सुनने का अवसर दिया जाना चाहिए या 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 385

आपत्तियाँ, "सक्षम प्राधिकारी" द्वारा। लेकिन इसके तहत
 सरकार: नहीं, अगर यह संतुष्ट है कि

एस। 9 - ए, केंद्रीय

तत्काल सम्पूर्ण प्राप्त करना आवश्यक है या

भूमि का कोई भाग, या उस में या उस पर कोई अधिकार कर सकता है। 8 ओप में नहीं आएगा

भूमि, उस एस को निर्देशित

राशन, और इसलिए, इसके तहत कोई कार्यवाही नहीं कहा गया है -

मनोरंजक होगा। धारा 10 में

एस के तहत अधिग्रहण की घोषणा की अधिसूचना के परिणाम। 9. ऐसी घोषणा पर

भूमि, या भूमि में या उस पर अधिकार, सभी ऋण शाखाओं से मुक्त, केंद्र सरकार में निहित होंगे, और उप-धारा (2) के तहत जहां अर्जित अधिकार राज्य सरकार द्वारा खनन पट्टे के तहत दिए गए हैं, केंद्र सरकार को राज्य सरकार का पट्टेदार माना जाएगा। एस में निहित प्रावधान के महत्व के बारे में हमें बहुत तर्क दिया गया था। 10 (2) अधिनियम से। इन पर बाद में विचार किया जाएगा।

निर्णय। लेकिन यह सरकार के लिए खुला है कि वह लिखित में एक आदेश द्वारा निर्देश दे कि भूमि या अधिकार या

प्रशंसा पर, एस के तहत केंद्रीय सरकार में निहित होने के बजाय। 10 एक सरकारी कंपनी में निहित होगी, जिसने अनुपालन करने की अपनी इच्छा व्यक्त की है

केंद्र सरकार द्वारा लगाए गए नियम और शर्तें। एक सरकारी कंपनी '

मत

लब

एस में परिभाषित एक कंपनी। 617 कंपनी अधिनियम, 1956। उस मामले में जहां भूमि या भूमि में या उस पर अधिकार किसी सरकारी कंपनी में निहित हो जाते हैं, एस के तहत। 11 (1) , उस कंपनी को राज्य सरकार का पट्टेदार माना जाएगा। मानो कंपनी को दिया गया हो

खनिज रियायत नियमों के तहत राज्य सरकार द्वारा खनन पट्टा। मुआवजे के तहत

प्रत्याशित अनुज्ञप्ति का प्रभाव समाप्त होने के कारण अधिनियम, या खनन पट्टा के तहत अधिकार अर्जित किए जाने के कारण, या एस के तहत अधिग्रहित किसी भी भूमि के लिए। 9 , एस में इस तरह के मुआवजे के निर्धारण के लिए प्रक्रिया का प्रावधान किया गया है और नियम निर्धारित किए गए हैं। 13. प्रावधानों को पढ़ने पर यह स्पष्ट है कि

1 386 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

1962

उस धारा में मुआवजे का प्रावधान किया गया है कि-- नहीं-खनिजों के संबंध में मुआवजे का प्रावधान किया गया है

वेस्ट का खाना

बंगाल

बिना काम के भूमिगत। धारा 14 से 17 मुआवजे और अन्य को निर्धारित करने की विधि निर्धारित करती है।

भारत की स्थिति

मुआवजे के भुगतान से संबंधित संज्ञानात्मक मामले।

इन्हा, सी. जे.

अधिनियम के शेष प्रावधान वर्तमान विवाद पर लागू नहीं होते हैं और इसलिए, इसकी आवश्यकता नहीं है

के लिए विज्ञापित।

. ****

.....

अधिनियम के प्रावधानों को नंगे पढ़ने पर, अभिव्यक्ति "कोई भी भूमि" या "किसी भी अधिकार में या उसके ऊपर"

ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसी भूमि हर ब्याज को कवर करती है।

चाहे वह व्यक्ति या प्राधिकरण जो उनके मालिक हों, जिसमें राज्य सरकार भी शामिल हो। लेकिन यह तर्क दिया गया है कि एक बारीकी से जांच पर अधिनियम के उपरोक्त प्रावधान और कुछ बातों का ध्यान रखना

विधानों की व्याख्या के सामान्य सिद्धांत विचार, निष्कर्ष यह है कि अधिनियम भूमि में या उस पर किसी भी संपत्ति या हित को शामिल नहीं करता है

किसी राज्य सरकार से संबंधित। हम पहले ही संकेत दे चुके हैं कि न तो उद्देश्यों और कारणों के बयान और न ही प्रस्तावना से वादी या उन राज्यों को कोई मदद मिलती है जिन्होंने हस्तक्षेप किया है और

दावा किया कि किसी राज्य की कोई भी संपत्ति

सरकार के दायरे और प्रभाव से बाहर है

एकट करें।

यह ध्यान में रखते हुए कि एस में उपयोग किए गए शब्द। 4 वे व्यापक और अप्रतिबंधित हैं और "किसी राज्य से संबंधित" अपनी व्यापक भूमि में शामिल करने के लिए उपयुक्त हैं और एस में संदर्भ। 7 उन भूमि के लिए है जो एस के तहत अधिसूचित हैं: 4 (1) , अब हम तर्कों की ओर मुड़ेंगे।

कुछ विशिष्ट की व्याख्या पर असर डालना लेकिन जिन प्रावधानों के बारे में दावा किया जाता है कि वे एक विपरीत निष्कर्ष का सुझाव देते हैं। सबसे पहले, यह आग्रह किया जाता है कि "कोई भी।व्यक्ति "एस में उपयोग किया जाता है। 8 के रूप में व्याख्या नहीं की जा सकती है

एक राज्य सहित। यह तर्क इसके साथ जुड़ा हुआ है

की क्षमता से संबंधित अन्य तर्क संसद संपत्ति के संबंध में कानून बनाएगी। एक राज्य में। इसलिए, यह सौदा करने के लिए सुविधाजनक होगा

ए. आई. एस. सी. आर. सुप्रीम कोर्ट रिपोर्ट 387

उस विषय के साथ इस तर्क के साथ। यह यहाँ इंगित करने के लिए पर्याप्त है कि एस के लिए स्पष्टीकरण। 8 (1) , और विशेष रूप से "केंद्र द्वारा किए गए शब्द"

सरकार या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा विद्वान वकील के तर्क का समर्थन किया जाएगा।

सामान्य रूप से "व्यक्ति" शब्द का उपयोग एक प्राकृतिक व्यक्ति और एक न्यायिक व्यक्ति दोनों को शामिल करने के सामान्य अर्थ में किया गया है। दूसरा, यह तर्क दिया गया था

एस के लिए परंतुक के शब्दों का संदर्भ। 9 (1) जहाँ अधिनियम का कोई उल्लेख करने का इरादा था राज्य सरकार ने ऐसा विशेष रूप से किया था जिसमें

एसएस। 9 , 10 , 11 और अधिनियम के 18, और यह कि, इसलिए, अधिनियम के मूल प्रावधानों का उद्देश्य नहीं था

किसी में निहित किसी भी अधिकार या हित पर लागू करने के लिए कटौती

राज्य सरकार। तर्क प्रशंसनीय है लेकिन

आवाज़ नहीं। धारा 9 अधिनियम की प्रभावी धारा है, जो यह प्रावधान करती है कि केंद्रीय सरकार के बाद

एस के तहत एक अधिसूचना जारी होने के बाद, कोयला प्राप्त करने की संभावना की जांच की गई है। 1 , और एस के तहत अधिसूचना द्वारा कवर की गई भूमि के अधिग्रहण के अपने इरादे को अधिसूचित करने के बाद। 7 , और एस के तहत आपत्तियों, यदि कोई हो, का निपटान करने के बाद। 8 , केंद्रीय सरकार को यह आवश्यक घोषणा करनी होगी कि भूमि का अधिग्रहण किया जाना चाहिए। एस के लिए प्रावधान। 9 (1) केवल संबंधित राज्य के साथ परामर्श की आवश्यकता है

सरकार जहाँ वह भूमि का स्वामी है, या ऐसी भूमि में या उस पर उसका कोई हित है। केंद्रीय सरकार की ओर से यह ठीक ही कहा गया है कि यदि किसी राज्य सरकार का अधिकार या हित अधिग्रहण में शामिल नहीं था, तो अधिग्रहण का कोई भी संदर्भ देना पूरी तरह से अनावश्यक होगा।

संबंधित राज्य सरकार। यह आग्रह किया गया था कि जब तक "किसी राज्य सरकार की भूमि" या जिसमें किसी राज्य सरकार का ऐसी भूमि में या उस पर हित न हो, वे धाराओं के मुख्य प्रावधानों के प्रभावी शब्दों के भीतर न हों। 9 (1) , परंतुक में निर्दिष्ट परामर्श के लिए प्रावधान करना अर्थहीन होगा। हम इस अधीनता में बल देखते हैं। राज्य सरकार के साथ परामर्श को 388 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वी. ओ. एल. की घोषणा के लिए एक शर्त पूर्ववर्ती बनाया गया है।

प्रस्तावित अधिग्रहण के संबंध में केंद्र सरकार द्वारा किया जाना है। लेकिन परामर्श का मतलब जरूरी नहीं कि सहमति हो, हालांकि आम तौर पर दो सरकारों या दो सार्वजनिक प्राधिकरणों के बीच परामर्श सहयोग और सहयोग को दर्शाता है।

प्रस्ताव को स्वीकार करने की इच्छा-एक ऐसी स्थिति जिस पर निजी व्यक्तियों के हितों के संदर्भ में विचार नहीं किया जाता है।

खंड के इस भाग के उन कई वैकल्पिक रीडिंग की जांच करने के लिए गंभीरता से इच्छुक हैं। इसी तरह एस के प्रावधान। 10 (2) सहायता के लिए दबाव डाला गया वादी और अन्य हस्तक्षेप करने वाले राज्यों की ओर से सुझाव दिया गया कि राज्य सरकार के हित अधिनियम के दायरे में नहीं हैं। यह तर्क इस धारणा पर आधारित है कि यदि किसी राज्य सरकार के अधिकार या हित भी अधिनियम के दायरे में थे, तो यह प्रावधान करना अर्थहीन होगा कि केंद्र सरकार या एक सरकारी कंपनी, जैसा कि एस द्वारा विचार किया गया है। 11 , राज्य का पट्टेदार माना जाना चाहिए

अर्जित अधिकारों के संबंध में सरकार। हम इस निर्माण को आगे बढ़ाने में असमर्थ हैं। धारा 10 (2) और 11 में उन मामलों का विशेष संदर्भ है जहां अर्जित संपत्ति में राज्य सरकार द्वारा दिए गए किसी भी खनन पट्टे के अधिकार शामिल हैं। एसएस द्वारा विचार की गई संपत्ति के प्रकार के अलावा। 10 (2) और 11 (2), जैसा कि ऊपर कहा गया है, अर्जित अन्य प्रकार की संपत्ति हो सकती है, ग। जी. कोयले वाली भूमि, जिसमें संपूर्ण हित राज्य सरकार में निहित है। ऐसे मामलों में, केंद्र सरकार या किसी सरकारी कंपनी के राज्य सरकार का पट्टेदार बनने या माने जाने का कोई सवाल ही नहीं होगा।

संदर्भ दिया गया था 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 389

से एस। 18 लेकिन धारा में "राज्य सरकार" का उल्लेख एस. एस. के प्रावधानों पर परिणामी है। 10 और 11, अर्थात्, जहां केंद्र सरकार या किसी सरकारी कंपनी के पास अधिनियम के उन प्रावधानों के संचालन द्वारा है। राज्य सरकार का पट्टेदार बनें। केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच इस सवाल पर किसी भी मतभेद की स्थिति में कि पूर्वोक्त कैसे किया जाना है या खनिज रियायत नियमों का कितना पालन किया जाएगा, इस धारा के आधार पर, मध्यस्थता द्वारा या ऐसी अन्य तरीके से हल किया जाना है जो संबंधित सरकारें तय करें।

इस प्रकार यह एक उचित व्याख्या पर दिखाई देगा। अधिनियम के प्रासंगिक प्रावधानों के अनुसार, यह नहीं कहा जा सकता है कि या तो स्पष्ट शब्दों में या आवश्यक रूप से

अधिनियम के प्रावधान राज्य सरकार के अधिकारों या हितों के लिए निहित हैं या ऐसी भूमि को बाहर रखा गया है। यह स्पष्ट है कि इस अधिनियम का उद्देश्य किसी व्यक्ति या न्यायिक व्यक्ति की भूमि में या उस पर भूमि या अधिकारों को शामिल करना है। ऐसी भूमि में न केवल सतह अधिकार बल्कि खनिज अधिकार भी शामिल हो सकते हैं। केंद्र सरकार द्वारा अधिग्रहित की जाने वाली भूमि। यह राज्य या किसी मध्यस्थ द्वारा दिए गए किसी भी संभावित लाइसेंस या खनन पट्टों से मुक्त हो सकती है, जिसमें अभिव्यक्ति का उपयोग राज्य के नीचे के सभी हितों को दर्शाने के लिए किया जाता है। जैसा कि ऊपर कहा गया है, ऐसा हित किसी राज्य में निहित हो सकता है या स्थायी रूप से बसे राज्यों में मालिकों द्वारा दिए गए पट्टों या लाइसेंसों के आधार पर अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग हित निहित हो सकते हैं।

कार्यकाल-धारक जिन्होंने स्पष्ट रूप से खनन अधिकार प्राप्त किए हैं। इसलिए अधिनियम को कंपनी का उपयोग करना पड़ा

केंद्र सरकार द्वारा उन सभी विविध अधिकारों और हितों को शामिल करने के लिए पवित्र भाषा "भूमि या भूमि में या उस पर कोई हित"। सार्वजनिक क्षेत्र में कोयला खनन के लिए भूमि विकसित करने में स्वतंत्र हाथ रखने के लिए अधिग्रहण करने में रुचि होगी, जैसा कि इसे कहा जाता है, अधिनियम का मसौदा अधिक कलात्मक रूप से तैयार किया गया होगा, लेकिन इसे जैसा है वैसा ही समझते हुए, हमें कोई संदेह नहीं है कि 390 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल।

संसद कोयले की संभावना और कोयला वाली खदानों के दोहन के लिए कोयला वाली भूमि में सभी अधिकारों और हितों का अधिग्रहण करने का इरादा रखती है। इसलिए, यह अभिनिर्धारित किया जाना चाहिए कि वाद के संशोधन के परिणामस्वरूप पक्षों के बीच जुड़े अधिनियम की व्याख्या के संबंध में पूरक मुद्दे पर वादी के खिलाफ निर्णय लिया जाना चाहिए। इस स्थिति से शुरू करते हुए कि अधिनियम के प्रासंगिक प्रावधानों के सही निर्माण पर, कोयला धारक भूमि में राज्य सरकार के अधिकारों और हितों को अधिनियम के संचालन से बाहर नहीं रखा गया था, या तो स्पष्ट शब्दों में या आवश्यक निहितार्थ से, अगला प्रश्न जो विचार के लिए उत्पन्न होता है वह पहला मुद्दा है जिसमें शामिल है

मुद्दे 3 और 4 भी। अधिनियम को अधिनियमित करने के लिए संसद की क्षमता का निर्धारण संविधान के विशिष्ट प्रावधानों के संदर्भ में किया जाना चाहिए, जिसमें सातवीं अनुसूची सूची I और सूची III में प्रविष्टियों के आंशिक संदर्भ शामिल हैं।

अनुच्छेद के साथ पठित संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची III में प्रविष्टि 42 द्वारा।
246 (3) के लिए शक्ति

संपत्ति के अधिग्रहण और अधिग्रहण के संबंध में विधान संसद के साथ-साथ राज्य विधानमंडलों को प्रदान किया जाता है, प्रथम दृष्टया, इस शक्ति का उपयोग संसद द्वारा सभी संपत्ति, निजी स्वामित्व वाली या राज्य के स्वामित्व वाली संपत्ति के संबंध में किया जा सकता है। लेकिन पश्चिम बंगाल राज्य और कुछ मध्यवर्ती राज्यों की ओर से यह प्रस्तुत किया गया कि संपत्ति में अधिकार की प्रकृति राज्य में निहित है।

सरकारी उद्देश्यों के लिए संघ संसद की शक्ति के प्रयोग पर एक सीमा लागू की गई, जो राज्य के स्वामित्व वाली संपत्ति को प्रभावित करती है। की ओर से हस्तक्षेप करने वाले राज्यों में से एक पंजाब राज्य से यह आग्रह किया गया था कि यदि संपत्ति का अधिग्रहण आवश्यक है। सूची I और III में किसी भी प्रविष्टि के संबंध में संसद द्वारा शक्ति के प्रभावी प्रयोग के लिए, संसद इस तरह से कानून बना सकती है कि -

राज्य में निहित संपत्ति के अधिकार को प्रभावित करता है 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 391

बशर्ते कि यह राज्य की विधायी शक्ति में हस्तक्षेप न करे।

इस दलील के समर्थन में बार में विभिन्न कारणों का सुझाव दिया गया कि राज्य की संपत्ति थी

संसद की विधायी शक्तियों के बहिष्करण के अधीन नहीं। उन्हें निम्नलिखित शीर्षों के तहत समूहीकृत किया जा सकता है:

(1) संविधान ने सरकार के संघीय सिद्धांत को अपनाया है और राज्य संघ के साथ राष्ट्र की संप्रभुता साझा करते हैं, और

इसलिए संसद की शक्ति नहीं है

संप्रभु प्राधिकरणों के रूप में राज्यों को निहित संपत्ति से वंचित करने के लिए कानून बनाने का विस्तार। इसलिए कानून बनाने की शक्ति को इस तरह से पढ़ा जाना चाहिए कि इसका अर्थ एक प्रतिबंध हो।

की प्रविष्टि 42 के अधीन संसद पर

सूची III जब किसी राज्य के स्वामित्व वाली संपत्ति के संबंध में इसका प्रयोग करने की मांग की जाती है।

(2) कला के आधार पर राज्यों में निहित संपत्ति। 294 (1) यूनियन पुर में नहीं मोड़ा जा सकता है

संसदीय कानून की मजबूरी

लेशन।

(3) भारत सरकार अधिनियम, 1935 प्रदान करता है

बातचीत द्वारा राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण के लिए विशेष तंत्र, न कि विधायी शक्ति के प्रयोग में संबल द्वारा। उस समर्थक दृष्टि ने माना कि भारत सरकार के केंद्रीय विधानमंडल के पास राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण करने की कोई शक्ति नहीं थी

विधायी शक्ति, और भले ही एस के समान कोई प्रावधान न हो। 127 भारत सरकार अधिनियम, 1935 के संविधान में अधिनियमित किया गया है, इकाइयों की संपत्ति की प्रतिरक्षा के उस प्रावधान में निहित मान्यता को भी अभ्यास पर अधिरोपित माना जाना चाहिए।

392 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

संसद में निहित विधायी शक्ति

1962 .

संविधान के तहत।

वेस्ट का खाना

बंगाल

(4) राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण के लिए कानून बनाने के लिए ऑस्ट्रेलियाई संविधान में स्पष्ट रूप से प्रदत्त शक्ति की अनुपस्थिति इंगित करती है कि संविधान निर्माताओं का यह इरादा नहीं था कि वे सामान्य के तहत केंद्रीय संसद को वह शक्ति प्रदान करें।

भारत का निओन फिन्हा, सी. जे.

विधायी प्रमुख।

(5) यदि संघ द्वारा समवर्ती सूची की प्रविष्टि 42 के तहत राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण करने की शक्ति का प्रयोग किया जाता है, तो इसी तरह की शक्ति का प्रयोग संघ द्वारा भी किया जा सकता है। राज्य संघ की संपत्ति के संबंध में और यहां तक कि राज्य की विधायी शक्ति का प्रयोग करके संघ से संपत्ति का पुनः अधिग्रहण करने के लिए। इसलिए प्रविष्टि 42 के तहत शक्ति का संसद द्वारा कभी भी प्रभावी ढंग से प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

1

(6) संविधान निर्माताओं का यह इरादा नहीं हो सकता था कि वे संसद को राज्यों की संपत्ति के अधिग्रहण के लिए कानून बनाने का अधिकार प्रदान करें और इस तरह राज्य के स्वामित्व वाली संपत्ति के अधिकार को और अधिक बढ़ाएं।

.....

संविधान के तहत व्यक्तियों या निगमों को अपनी संपत्ति पर जो अधिकार है, उससे अधिक अनिश्चित। व्यक्तियों और निगमों के पास कला के तहत गारंटी होती है। 31 (2) संविधान का कहना है कि उनकी संपत्ति का अधिग्रहण सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए होगा और संपत्ति प्राप्त करने के लिए मुआवजा दिया जाएगा। प्रविष्टि 42 को 'कला के अधीन' पढ़ा जाना चाहिए। 31 , और जैसा कि मौलिक अधिकार हैं। सम्मानित किया गया कार्यपालिका या विधायिका के खिलाफ व्यक्ति और निगम। कार्रवाई, और राज्यों को किसी भी मौलिक अधिकार अभ्यास के साथ निवेश नहीं किया जाता है जो संघ या अन्य राज्यों के खिलाफ, अनिवार्य अधिग्रहण के लिए कानून बनाने का अधिकार है।

राज्य की संपत्ति का प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

फोर्ड 1 एस. सी. आर. सुप्रीम कोर्ट रिपोर्ट 393

(7) जब तक कि कोई कानून स्पष्ट रूप से या आवश्यक रूप से लागू न हो

इस प्रकार प्रदान करता है कि कोई राज्य इसके लिए बाध्य नहीं है। यह अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त नियम अंतर पर लागू होता है

संविधान का प्रतिपादन। इसलिए किसी भी प्रावधान के अभाव में जो स्पष्ट या आवश्यक रूप से इंगित करता है कि राज्य की संपत्ति संघ द्वारा अधिग्रहित की जा सकती है, संघ द्वारा अधिग्रहण के लिए कानून बनाने का दावा किया गया अधिकार

राज्य की संपत्ति को नकार दिया जाना चाहिए।

विशुद्ध रूप से अंतर-तर्क को छोड़कर ये सभी तर्क अंततः याचिका पर आधारित हैं।

कि राज्यों के पास अपने आवंटित क्षेत्र के भीतर संघ की एजेंसियों, विधायी या कार्यपालिका द्वारा संप्रभुता और अधिकार के प्रयोग के पूर्ण गुण हैं, जो उस संप्रभुता पर खाई डालते हैं जो शून्य है।

री: (1)

द्वारा अधिकार ग्रहण करने के बाद से

कानून 21 और 22, विक्ट के तहत ब्रिटिश क्राउन। (1656) च. 106 , ब्रिटिश भारत का प्रशासन था

एकात्मक और अत्यधिक केंद्रीकृत। गवर्नर जनरल को निरंकुश शक्तियों का निवेश किया गया था

पूरे क्षेत्र का प्रशासन करें। भले ही टेरी टोरी को प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित किया गया था

प्रांतों के संबंधित राज्यपालों का अधिकार गवर्नर-जनरल से प्राप्त होता था और गवर्नर-जनरल ब्रिटिश संसद के प्रति उत्तरदायी होता था। इसलिए, प्रांतीय सरकारों के प्रति उत्तरदायित्व की एक श्रृंखला थी जो केंद्र सरकार के नियंत्रण में थी और केंद्र सरकार राज्य सचिव के नियंत्रण में थी। क्रांति की कुछ प्रक्रिया भारत सरकार अधिनियम, 1919 के तहत हुई, लेकिन वह केवल सरकार के विकेंद्रीकरण के उद्देश्य से थी।

शक्ति लेकिन उस कारण से सरकार एकात्मक होना बंद नहीं हुई। भारत सरकार अधिनियम, 1935 का उद्देश्य प्रांतों और भारतीय राज्यों को एक संघ में एकजुट करना था, लेकिन यह 391 हो सकता है। सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

यह केवल तभी हासिल किया जा सकता है जब भारतीय राज्यों की एक बड़ी संख्या संघ में प्रांतों में शामिल होने के लिए सहमत हो।

पश्चिम का ए. टी. एस.

विभिन्न कारणों से भारतीय राज्य कभी इसमें शामिल नहीं हुए।

बंगाल

प्रस्तावित संघ और फेड से निपटने वाला भाग

भारत का रियान

राशन कभी प्रभावी नहीं हुआ। केंद्रीय सरकार

फिन्हा, सी. जे.

जैसा कि यह मूल रूप से सरकार के तहत गठित किया गया था। भारत अधिनियम, 1919, कुछ संशोधनों के साथ कार्य करता रहा। लेकिन प्रांतों में कुछ बदलाव किए गए। कुछ विभागों को मंत्रियों की सहायता से प्रशासित किया जाता था, जो लोकप्रिय रूप से चुने गए थे, और जो एक तरह से मतदाताओं के प्रति उत्तरदायी थे। राज्यपाल को अभी भी बिना परामर्श के अपने विवेक से कार्य करने का अधिकार था। कुछ मामलों के संबंध में उनके मंत्री। उन्होंने व्युत्पन्न किया। ब्रिटिश क्राउन से उनका अधिकार, और उन निर्देशों के अधीन था जो केंद्र सरकार ने समवर्ती सूची में केंद्रीय कानून के अधिनियमों को लागू करने और रखरखाव के लिए दिए थे। भारत या उसके कुछ हिस्सों की शांति या शांति के लिए गंभीर खतरे को रोकने के लिए संचार के साधनों और सभी मामलों के संबंध में। प्रशासन ने एक एजेंट के रूप में कार्य करना जारी रखा

ब्रिटिश संसद।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 द्वारा भारत का एक अलग अधिराज्य बनाया गया था। 6 इसके विधानमंडल को पहली बार डोमिनियन के लिए कानून बनाने के लिए अधिकृत किया गया था। इस तरह के कानून इस आधार पर अमान्य या निष्क्रिय नहीं होने चाहिए थे कि वे इंग्लैंड के कानून या इंग्लैंड के किसी मौजूदा या भविष्य के अधिनियम के प्रावधानों के प्रतिकूल थे।

"

यूनाइटेड किंगडम की संसद, या ऐसे किसी अधिनियम के तहत बनाए गए किसी भी आदेश, नियम या विनियमन के लिए, और डोमिनियन के विधानमंडल की शक्तियों में किसी भी अधिनियम को निरस्त या संशोधित करने की शक्ति शामिल थी।

ऐसा अधिनियम, आदेश, नियम या विनियम। ब्रिटिश संसद के पास उन क्षेत्रों के शासन के संबंध में जिम्मेदारी नहीं थी जो तुरंत थे। उस तारीख से पहले ब्रिटिश भारत में शामिल, और

भारतीय राज्यों पर क्राउन का आधिपत्य समाप्त आई. एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 395

और इसके साथ क्राउन और भारतीय राज्यों के शासकों के बीच अधिनियम के पारित होने की तारीख को लागू सभी संधियाँ और समझौते। भारत में प्रशासन को ब्रिटिश संसद के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने के लिए बाध्य करने वाले एजेंसी के बंधन को भंग कर दिया गया और उस हद तक भारतीय अधिराज्य संप्रभु बन गया। इसके बाद संविधान आया। क्षेत्र था

स्पष्ट रूप से एक लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए बहुत बड़ा-सरकार के पूरी तरह से केंद्रीकृत रूप के साथ। एक केंद्रीकृत रूप को लागू करने का मतलब राजनीतिक रुझानों को उलटना भी हो सकता है, जिसके कारण प्रशासन का विकेंद्रीकरण हुआ और सत्ता का कुछ वितरण हुआ। इसलिए, संविधान को एक ऐसे रूप में होना था जिसमें अधिकार का विकेंद्रीकरण किया गया था। भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम के अधिनियमन से ठीक पहले के युग में, प्रांतों जैसी आंशिक रूप से स्वायत्त इकाइयाँ थीं। वहाँ भारतीय थे

राज्य जो एक अर्थ में संप्रभु थे लेकिन उनके

विभिन्न विलयों से संप्रभुता समाप्त हो गई थी

जिन समझौतों को उन राज्यों के शासकों ने किया था

इससे पहले भारत सरकार के साथ

संविधान। विभिन्न राज्यों के एकीकरण की प्रक्रिया के आधार पर एक केंद्रीकृत राज्य का उदय हुआ।

प्रशासन का रूप जिसमें राज्यपाल जनरल कार्यकारी प्राधिकरण के फाउंटैन प्रमुख थे। भारत का संविधान भारत सरकार अधिनियम, 1935 की नींव पर बनाया गया था।

कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में बुनियादी संरचना में कोई बदलाव नहीं किया गया था। मामले, और बड़ी संख्या में प्रावधानों को पहले के संविधान से शब्दशः शामिल किया गया था।

सामान्य मामलों पर प्रभाव डालने वाले विषय

संघ सूची में रुचि की तुलना

संविधान की अनुसूची 7 में सूचीबद्ध है -

यह खुलासा करता है कि संघ की शक्तियाँ रही हैं
क्षेत्र में विस्तार

विशेष रूप से आर्थिक एकता के

और यह किया गया क्योंकि यह महसूस किया गया था कि 396 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वी. ओ. एल. होनी चाहिए।

1962

कुछ क्षेत्रों में केंद्रीकृत नियंत्रण और प्रशासन

यदि तेजी से आर्थिक और औद्योगिक प्रगति हुई थी

• पश्चिम का बंगाल

राष्ट्र द्वारा प्राप्त किया जाना। इसे स्पष्ट करने के लिए यह है

वी.

राष्ट्रीय राजमार्ग (प्रविष्टि 24), अंतर-राज्य व्यापार और वाणिज्य (प्रविष्टि 42)-को संदर्भित करने के लिए पर्याप्त है

भारत का एन हा, सी. जे.

सूची II से केवल कुछ को स्थानांतरित किए जाने का उल्लेख करें

संविधान में प्रथम को सूचीबद्ध करने के लिए भारत सरकार अधिनियम

टचूशन, अंतर-राज्यीय नदियों के संबंध में नई प्रविष्टि के लिए

(प्रविष्टि 56), समवर्ती में नई प्रविष्टि 33 के लिए
सूची जिसमें इसे सूची II से स्थानांतरित किया गया है, और

भाग XIII के व्यापक प्रावधान-जो चाहते हैं

के उद्देश्यों के लिए भारत को एकल आर्थिक इकाई बनाना

के समग्र नियंत्रण में व्यापार और वाणिज्य

संघ की संसद और संघ की कार्यपालिका।

परिणाम एक ऐसा संविधान था जो सच नहीं था

इस धारणा के लिए वारंट कि प्रांत थे
संप्रभु, स्वायत्त इकाइयाँ जो अलग हो गई थीं

ऐसी शक्ति जो वे उचित या उचित समझते हैं

केंद्र सरकार को कार्य करने में सक्षम बनाने के लिए

आम भलाई। कानूनी सिद्धांत जिस पर

संविधान वापस लेने या वापस लेने पर आधारित था।

इस देश के लोगों में संप्रभुता की सभी शक्तियों का गठन और इन शक्तियों
का वितरण

संघ और दोनों से रोके गए लोगों को बचाएँ

भाग III के प्रावधानों के कारण राज्य-शर्त
संघ और राज्यों का समर्थन करें।

(क) वास्तव में संघीय सरकार की परिकल्पना की गई है।

एक कॉम्पैक्ट या। स्वतंत्र के बीच समझौता

और संप्रभु इकाइयों को आंशिक रूप से आत्मसमर्पण करने के लिए

उनके सामान्य हित में अधिकार और निहित

यह एक संघ में है और इसके अवशेष को बनाए रखता है

घटक इकाइयों में प्राधिकरण। आम तौर पर

प्रत्येक घटक इकाई का अपना अलग संविधान होता है।

संघ के समक्ष आत्मसमर्पण करने वालों को छोड़कर, और
संघ का संविधान मुख्य रूप से कार्य करता है

इकाइयों के प्रशासन पर। हमारा

संविधान इस तरह के किसी भी परिणाम नहीं था

आई. 1 एस. सी. आर. सुप्रीम कोर्ट रिपोर्ट 397

समझौता या समझौता: एकात्मक राज्य का गठन करने वाली इकाइयाँ जो गैर-संप्रभु थीं, उन्हें सत्ता के त्याग द्वारा परिवर्तित कर दिया गया था

एक संघ।

(ख) संविधान की सर्वोच्चता जिसे घटक इकाइयों को छोड़कर बदला नहीं जा सकता है। हमारा संविधान निस्संदेह सर्वोच्च है लेकिन यह है

केवल संघ संसद द्वारा बदला जा सकता है और इकाइयों के पास इसे बदलने की कोई शक्ति नहीं है।

(ग) संघ और क्षेत्रीय इकाइयों के बीच शक्तियों का वितरण प्रत्येक अपने क्षेत्र में समन्वय करता है, और दूसरे से स्वतंत्र होता है। इसका आधार

शक्ति का ऐसा वितरण राष्ट्रीय महत्व के मामलों में है जिसमें एक समान नीति हो।

इकाइयों के हित में वांछनीय है, प्राधिकरण संघ को सौंपा गया है, और स्थानीय मामलों

चिंता राज्य के साथ बनी हुई है।

(घ) संविधान की व्याख्या करने और संविधान का उल्लंघन करने वाली कार्रवाई को अमान्य करने का न्यायालयों का सर्वोच्च अधिकार। एक संघीय संविधान, अपनी प्रकृति से, नियंत्रण और संतुलन से बना होता है और इसमें संघ के विशेष और विधायी प्राधिकरण और क्षेत्रीय इकाइयों के बीच संघर्षों को हल करने के लिए प्रावधान होने चाहिए।

हमारे संविधान में विशेषता (घ) पूरी ताकत से पाई जाती है, (क) और (ख) अनुपस्थित हैं। विधायी और कार्यपालिका के मामलों में संघ और राज्यों के बीच शक्तियों का वितरण निस्संदेह है; लेकिन वितरण। शक्तियों का होना हमेशा राजनीतिक संप्रभुता का सूचकांक नहीं होता है। आबंटित क्षेत्रों में वैधानिक और कार्यकारी शक्तियों का प्रयोग कई प्रतिबंधों द्वारा किया जाता है, ताकि राज्यों की शक्तियाँ संघ के साथ समन्वय न कर सकें और कई मामलों में स्वतंत्र न हों।

398 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

भारतीय राष्ट्र की कानूनी संप्रभुता भारत के लोगों के पास निहित है जो प्रस्तावना में बताए गए हैं।

भारत को उसमें निर्दिष्ट उद्देश्यों के लिए एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में गठित करने का गंभीरता से संकल्प लिया है। राजनीतिक संप्रभुता भारत संघ और अधिक महत्व वाले राज्यों के बीच विभाजित है, जैसा कि हम वर्तमान में प्रदर्शित करेंगे। संघ के पक्ष में, अनुच्छेद 300 भारत सरकार और राज्यों को अपने-अपने मामलों के संबंध में मुकदमा करने के लिए हकदार और मुकदमा किए जाने के लिए उत्तरदायी अर्ध-निगमों के चरित्र के साथ निवेश करता है। कला द्वारा। 299 संघ और राज्यों द्वारा अपनी-अपनी कार्यकारी शक्तियों और कला का प्रयोग करते हुए अनुबंध किए जा सकते हैं। 298 संघ और राज्यों को अपनी-अपनी कार्यकारी शक्तियों का प्रयोग करते हुए व्यापार या व्यवसाय करने और संपत्ति के अधिग्रहण, धारण और निपटान और अनुबंध करने के लिए अधिकृत करता है। ये प्रावधान और कुछ मामलों पर विशेष रूप से और साथ-साथ कुछ अन्य मामलों में कानून बनाने की शक्तियों को सौंपना और विधायी शक्ति के साथ व्यापक कार्यकारी प्राधिकरण को सौंपना प्राधिकरण के विभाजन की नींव है।

भारत में न्यायिक शक्ति का प्रयोग सिविल, आपराधिक और राजस्व न्यायालयों के एकल समूह द्वारा किया जाता है।

वे विधान के संबंध में विवादों से निपटते हैं जो या तो राज्य विधान या संघ विधान है। संघ या राज्य द्वारा कार्यकारी प्राधिकरण का प्रयोग और कार्यकारी प्राधिकरण से उत्पन्न होने वाले अधिकार और दायित्व उन न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र के अधीन हैं जिनके पास कार्रवाई के कारण के संबंध में क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र है। उच्च न्यायालयों को कला के तहत कुछ शक्तियों के साथ निवेश किया गया है। 226 किसी भी व्यक्ति को संबोधित रिट जारी करना या

भाग 3 द्वारा प्रदत्त किसी भी अधिकार के प्रवर्तन के लिए और किसी अन्य उद्देश्य के लिए और कला के तहत उपयुक्त मामलों में किसी भी सरकार सहित प्राधिकरण। 227 उच्च न्यायालय का उन सभी न्यायालयों पर अधीक्षण है जिनके संबंध में वह न्यायशास्त्र का प्रयोग करता है। बोलचाल की भाषा। उच्चतम न्यायालय शीर्ष पर है

ए. 1 एस. सी. आर. सुप्रीम कोर्ट रिपोर्ट 399

न्यायालयों, दीवानी, आपराधिक, राजस्व और अर्ध-न्यायिक न्यायाधिकरणों का पदानुक्रम। भारत में न्यायालयों के दो समूह नहीं हैं, संघीय और राज्य जो संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान के तहत कार्य करते पाए जाते हैं।

अमेरिका। कला द्वारा। 247 संसद द्वारा बनाए गए कानूनों या संघ सूची में सूचीबद्ध मामलों के संबंध में किसी भी मौजूदा कानूनों के बेहतर प्रशासन के लिए अदालतों की स्थापना का प्रावधान करने की शक्ति कानून द्वारा संसद के लिए आरक्षित है, लेकिन ऐसे किसी भी न्यायालय का गठन नहीं किया गया है।

संघ के कार्यकारी मामलों में संप्रभुता की घोषणा अनुच्छेद द्वारा की जाती है। 73 जो उस विषय को अधिनियमित करता है

संविधान के प्रावधानों के अनुसार, संघ की कार्यकारी शक्ति उन मामलों तक फैली हुई है जिनके संबंध में संसद कानून बना सकती है और ऐसे अधिकारों, प्राधिकरण और अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने के लिए जो किसी संधि या समझौते के आधार पर भारत सरकार द्वारा निर्दिष्ट किए जा सकते हैं। लेकिन यह कार्यकारी शक्ति संविधान या संसद द्वारा बनाए गए किसी कानून में स्पष्ट रूप से प्रदान की गई है, इसके अलावा किसी भी राज्य में उन मामलों में विस्तार नहीं हो सकता है जिनके संबंध में राज्य के विधानमंडल को भी कानून बनाने की शक्ति है। कला द्वारा। 77 भारत सरकार के सभी कार्यकारी कार्य

राष्ट्रपति के नाम पर व्यक्त किया जाना चाहिए। राज्य की कार्यकारी शक्ति कला द्वारा निहित है। 154 राज्यपाल के अधीन है और संविधान के अनुसार उसके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से या उसके अधीनस्थ अधिकारियों के माध्यम से प्रयोग किया जा सकता है। राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और यह राष्ट्रपति के लिए खुला है कि वह ऐसा प्रावधान करे जो वह किसी राज्य के राज्यपाल के कार्य के निर्वहन के लिए उचित समझे।

राज्य के राज्यपाल किसी भी आकस्मिकता में च में कटौती प्रदान नहीं करते हैं। भाग VI का द्वितीय। कला द्वारा। 162 संविधान के प्रावधानों के अधीन, राज्य की कार्यकारी शक्ति उन मामलों तक फैली हुई है जिनके संबंध में

राज्य के विधानमंडल को कानून बनाने की शक्ति है, इस प्रतिबंध के अधीन कि सातवीं अनुसूची की वर्तमान सूची के मामलों में, राज्य की कार्यकारी शक्ति का प्रयोग भी 400 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल के अधीन है।

स्पष्ट रूप से प्रदत्त कार्यकारी शक्ति द्वारा सीमित

1962

संविधान द्वारा या पार्लिया द्वारा बनाए गए किसी कानून द्वारा

वेस्ट का खाना

संघ या उसके प्राधिकारियों को। Exer

बंगाल

राज्यों के कार्यकारी प्राधिकरण का बड़ा हिस्सा है

भारत का आयन

विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों द्वारा प्रतिबंधित। द.

इन्हा, सी. जे.

प्रत्येक राज्य की कार्यकारी शक्ति का इस प्रकार उपयोग किया जाना चाहिए

द्वारा बनाए गए कानूनों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए संसद और कोई भी मौजूदा कानून जो उस राज्य में लागू होते हैं, और कार्यपालिका को बाधित या पूर्वाग्रहित नहीं करते हैं।

संघ की शक्ति। की कार्यकारी शक्ति

संघ किसी राज्य को ऐसे निर्देश देने का विस्तार करता है जो भारत सरकार को उन उद्देश्यों के लिए आवश्यक प्रतीत हों और राष्ट्रीय या सैन्य महत्व के घोषित संचार के साधनों के निर्माण और रखरखाव और रेलवे की सुरक्षा के लिए। संसद ने राजमार्गों या जलमार्गों को घोषित करने की शक्ति

राष्ट्रीय महत्व, और संघ उन शक्तियों को निष्पादित कर सकता है, और नौसेना, सैन्य और वायु सेना के कार्यों के संबंध में अपने कार्य के हिस्से के रूप में संचार के साधनों का निर्माण और रखरखाव भी कर सकता है। राष्ट्रपति निम्नलिखित की सहमति से भी कर सकता है: किसी राज्य की सरकार, जो उस सरकार या उसके अधिकारियों को सौंपी जाती है

किसी भी मामले के संबंध में कार्य जिसके लिए

संघ की कार्यकारी शक्ति का विस्तार: कला. 258 (1) .

फिर से संघ संसद कानून द्वारा बनाई जा सकती है विशेष रूप से इसके भीतर के मामलों के संबंध में अधिकार का प्रयोग। क्षमता राज्य या उसके अधिकारियों या प्राधिकरणों को शक्तियां और कर्तव्य प्रदान करती है या शक्तियों के प्रदान करने और कर्तव्यों के अधिरोपण को अधिकृत करती है: अनुच्छेद 258 (2)। कला. 365 राष्ट्रपति को यह अभिनिर्धारित करने के लिए प्राधिकृत करता है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसमें किसी राज्य की सरकार को संविधान के प्रावधानों के साथ तालमेल में नहीं रखा जा सकता है, यदि राज्य राज्य की कार्यकारी शक्ति का प्रयोग करते हुए दिए गए किसी भी गंभीर प्रावधानों का पालन करने या उन्हें प्रभावी बनाने में विफल रहता है।

संघ।

ये सामान्य समय में राज्यों द्वारा कार्यकारी शक्ति के प्रयोग पर प्रतिबंध हैं; 1 एस. सी. आर. सुप्रीम कोर्ट रिपोर्ट 401 में

राज्य की कार्यकारी शक्ति के प्रयोग को ओवरराइड करने के लिए आपातकालीन शक्ति का समय सौंपा गया है

संघ। फिर से विधायी अभ्यास का क्षेत्र राज्यों की विधायी शक्ति के प्रयोग के साथ-साथ व्यापक होने के कारण, विधायी शक्ति पर लगाए गए प्रतिबंध कार्यकारी शक्ति के प्रयोग पर भी लागू होते हैं।

विधायी शक्तियों का वितरण प्रभावित होता है -

कला. 246. सातवीं अनुसूची की सूची I में निर्धारित मामलों के संबंध में संसद के पास अनन्य शक्ति है

राष्ट्र की वाणिज्यिक एकता संघ के पास रह जाती है। कला द्वारा। 123 राष्ट्रपति। उन मामलों पर अध्यादेश जारी करने की शक्ति के साथ निवेश किया जाता है जिन पर संसद कानून बनाने के लिए सक्षम है, संसद के अवकाश के दौरान। इसी तरह कला के तहत। 213 राज्य के राज्यपाल को उन मामलों पर अध्यादेश जारी करने की शक्ति प्रदान की जाती है जिन पर राज्य विधानमंडल इस दौरान कानून बनाने के लिए सक्षम है। विधानमंडल का अवकाश। लेकिन वितरण पर

इस प्रकार बनाई गई विधायी शक्तियाँ और

राज्य विधानमंडल को शक्ति, प्रतिबंध

हैं।

सामान्य समय में भी लागू किया गया। अनुच्छेद 249 संसद को राज्य सूची के किसी भी मामले के संबंध में कानून बनाने के लिए अधिकृत करता है यदि राज्य परिषद ने उपस्थित और मतदान करने वाले कम से कम दो-तिहाई सदस्यों द्वारा समर्थित प्रस्ताव द्वारा घोषणा की है कि यह राष्ट्रीय हित में आवश्यक या समीचीन है कि संसद

== 402 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

संकल्प में निर्दिष्ट राज्य सूची में उल्लिखित किसी भी मामले के संबंध में कानून बनाना चाहिए। कला द्वारा। 252 दो या दो से अधिक राज्यों के लिए सहमति से कानून बनाने की शक्ति संसद को प्रदान की जाती है, भले ही संसद के पास अनुच्छेद के तहत कोई शक्ति न हो। 246 अनुच्छेद में दिए गए प्रावधानों को छोड़कर राज्य के लिए कानून बनाना। 249 और 250। ऐसा कानून किसी अन्य राज्य के विधानमंडल द्वारा अपनाया जा सकता है। कला द्वारा। 253 अनुच्छेद में किसी भी बात के होते हुए भी संसद के पास शक्ति है। 246 किसी अन्य देश या देश के साथ किसी संधि, समझौते या संधि या किसी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, संघ या अन्य निकाय में किए गए किसी भी निर्णय को लागू करने के लिए भारत के पूरे या क्षेत्र के किसी भी हिस्से के लिए कोई कानून बनाना। संसद द्वारा बनाए गए कानूनों और विधानमंडलों द्वारा बनाए गए कानूनों के बीच विसंगति के मामले में राज्यों के कानून, संसद द्वारा बनाए गए कानून, चाहे वे राज्य के कानून से पहले या बाद में पारित किए गए हों, समवर्ती सूची में उल्लिखित हैं -

राज्य के कानूनों पर प्रतिकूलता की सीमा प्रबल है। यह केवल किसी राज्य के विधानमंडल द्वारा बनाया गया एक कानून है जिसे राष्ट्रपति के विचार के लिए आरक्षित किया गया था और जिसे संसद या किसी मौजूदा कानून के प्रावधानों के प्रतिकूल प्रावधान वाली समवर्ती सूची से संबंधित मामले पर उनकी सहमति प्राप्त हो गई है। उस मामले के संबंध में राज्य में कानून प्रचलित है।

कराधान की शक्ति (जो तुलनात्मक रूप से छोटे क्षेत्रों में राज्यों द्वारा प्रयोग की जाती है, उतनी ही अधिक

आय-कर, धन-कर, कुछ निर्दिष्ट वस्तुओं के अलावा अन्य शुल्क, और सीमा शुल्क, जो संघ के लिए आरक्षित हैं) जैसे महत्वपूर्ण राज्यों पर सूची II के तहत विभिन्न प्रविष्टियों द्वारा लगाए गए प्रतिबंध भी गंभीर रूप से प्रतिबंधित हैं। संघ की संपत्ति, जहाँ तक संसद कानून द्वारा कर सकती है, के अलावा। राज्य द्वारा या राज्य के भीतर किसी भी प्राधिकरण द्वारा लगाए गए सभी करों से मुक्त है। कला द्वारा। 286 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 403 की बिक्री या खरीद पर कर का अधिरोपण

माल जहाँ ऐसी बिक्री या खरीद राज्य के बाहर या माल के आयात के दौरान होती है।

भारत के क्षेत्र में माल का प्रवेश या निर्यात केवल संसदीय कानून द्वारा लगाया जा सकता है। किसी राज्य को तब तक प्रतिबंधित किया जाता है जब तक कि संसद कानून द्वारा भारत सरकार द्वारा खपत की जाने वाली बिजली की खपत या बिक्री पर या किसी भी रेलवे के निर्माण, रखरखाव और संचालन में कर लगाने का प्रावधान नहीं करता है। न ही किसी अंतर-राज्यीय नदी या नदी घाटी को विनियमित करने या विकसित करने के लिए किसी मौजूदा कानून या संसद द्वारा बनाए गए किसी कानून द्वारा स्थापित किसी प्राधिकरण द्वारा उपभोग किए गए या वितरित किए गए या बेचे गए पानी के संबंध में कर लगाने को अधिकृत किया जा सकता है, सिवाय इसके कि संसद कानून द्वारा इस तरह का प्रावधान करे। राज्य काफी हद तक संघ की वित्तीय सहायता पर निर्भर हैं। संघ द्वारा लगाए गए और एकत्र किए गए कुछ करों में एक हिस्सा जैसे गैर-कृषि आय पर कर, कृषि भूमि के अलावा अन्य संपत्ति के लिए शुल्क, कृषि के अलावा अन्य संपत्ति के संबंध में संपत्ति शुल्क।

सांस्कृतिक भूमि, रेलवे, समुद्र या हवाई मार्ग से ले जाए जाने वाले सामान या यात्रियों पर अंतिम कर, रेलवे किराए और माल ढुलाई पर कर, समाचार पत्रों की बिक्री या खरीद पर कर और उसमें प्रकाशित विज्ञापनों पर कर, समाचार पत्रों के अलावा अन्य वस्तुओं की बिक्री या खरीद पर कर जहां ऐसी बिक्री होती है। या खरीद अंतर-राज्य व्यापार या वाणिज्य के दौरान होती है, राज्यों को दी जाती है। असम, बिहार, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल राज्यों को जूट और जूट उत्पादों पर निर्यात शुल्क के प्रत्येक वर्ष में शुद्ध आय के किसी भी हिस्से के आवंटन के बदले में राजस्व की सहायता के लिए कुछ अनुदान भी दिए जा सकते हैं। औषधीय और शौचालय की तैयारी पर शुल्क को छोड़कर उत्पाद शुल्क के केंद्रीय शुल्क संघ द्वारा एकत्र किए जाते हैं, लेकिन वितरण के ऐसे सिद्धांतों के अनुसार राज्यों के बीच पूरे या आंशिक रूप से वितरित किए जा सकते हैं जो तैयार किए जा सकते हैं। कला द्वारा। 275 401 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वी. ओ. एल. जैसे राज्यों के राजस्व की सहायता के लिए अनुदान।

संसद निर्धारित कर सकती है कि उसे सहायता की आवश्यकता है

1962

भी किया जा सकता है।

वेस्ट का खाना

बंगाल।

वी.

यह स्पष्ट है कि राज्य वित्त के लिए निर्भर हैं।

भारत का क्षेत्र

संघ और उनके अपने संसाधनों पर व्यक्तिगत सहायता,

इन्हा, सी. जे.

उनके कराधान के सीमित क्षेत्रों के अपर्याप्त होने के कारण। कला के तहत राज्यों द्वारा उधार लेने की शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है। 293 , लेकिन ऐसा नहीं हो सकता

भारत सरकार की सहमति के बिना प्रयोग किया जाता है, यदि ऋण का कोई हिस्सा अभी भी बकाया है जो भारत सरकार या उसकी पूर्ववर्ती सरकार द्वारा राज्य को दिया गया है, या जिसके संबंध में संघ या उसके पूर्ववर्ती द्वारा गारंटी दी गई है।

राष्ट्रीय राजनीतिक या वित्तीय आपातकाल के समय, राज्य केवल ऐसी विधायी और कार्यपालिका शक्तियों का प्रयोग कर सकते हैं जिनकी संघ अनुमति देता है। जब आपातकाल की स्थिति घोषित की जाती है तो संसद को राज्य सूची और बनाए गए कानूनों के किसी भी मामले के संबंध में भारत के पूरे या किसी भी हिस्से के लिए कानून बनाने की शक्ति होती है। प्रतिकूलता की स्थिति में संसद राज्य के कानूनों पर हावी होती है। अगर परिणाम के रूप में युद्ध, बाहरी आक्रामकता या आंतरिक अशांति से भारत या किसी क्षेत्र की सुरक्षा खतरे में पड़ जाए तो राष्ट्रपति आपातकाल की स्थिति घोषित कर सकता है और उसके बाद संघ की कार्यकारी

शक्ति राज्यों को निर्देश देने तक विस्तारित होगी, कि राज्यों की कार्यकारी शक्ति का उपयोग किस तरीके से किया जाना है, और संसद की कानून बनाने की शक्ति का विस्तार संघ या उसके अधिकारियों और अधिकारियों को किसी भी मामले के संबंध में शक्तियों को प्रदान करने या कर्तव्यों को लागू करने के लिए कानून बनाने तक होगा, भले ही ऐसा मामला संघ सूची में सूचीबद्ध न हो। राष्ट्रपति आपातकाल के दौरान भी कला के संचालन को निलंबित कर सकते हैं। 268 279 तक और यह अपेक्षा करता है कि सभी धन विधेयक राज्य के विधानमंडल द्वारा पारित किए जाने के बाद राष्ट्रपति को उनके विचार के लिए प्रस्तुत किए जाएंगे।

{

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 405

राज्यों का सामान्य निगमित अस्तित्व उन्हें अनुबंध करने का अधिकार देता है और उन्हें व्यापार या व्यवसाय करने की शक्ति देता है और राज्यों को संपत्ति रखने का अधिकार है। लेकिन संविधान की कुछ बुनियादी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, उनकी शक्तियों के प्रयोग पर प्रतिबंध

कार्यपालिका और विधायी और कराधान की शक्तियों और वित्त के लिए केंद्र सरकार पर निर्भरता को बनाए रखना सही नहीं होगा कि पूर्ण संप्रभुता राज्यों में निहित रहती है। यह हमारी संवैधानिक व्यवस्था की कुछ उल्लेखनीय विशेषताओं से स्पष्ट होता है। भारत में दोहरी नागरिकता नहीं है: सभी नागरिक भारत के नागरिक हैं न कि उन विभिन्न राज्यों के जिनमें वे अधिवासित हैं। संघ के राष्ट्रीय संविधान के अलावा राज्यों का कोई स्वतंत्र संविधान नहीं है।

भारत: च. II, कला से भाग VI। 152 धारा 237 राज्यों, राज्यों के विधानमंडलों की शक्तियों, कार्यपालिका और न्यायपालिका की शक्तियों से संबंधित है। राज्य की संप्रभुता के संबंध में इस सिद्धांत के खिलाफ जो बात लड़ती प्रतीत होती है, वह व्यापक शक्ति है जिसके साथ संसद को राज्यों की सीमाओं को बदलने और यहां तक कि एक राज्य के अस्तित्व को समाप्त करने के लिए निवेश किया जाता है। राज्यों की सीमाओं में परिवर्तन के खिलाफ कोई संवैधानिक गारंटी नहीं है। कला द्वारा। 2 संविधान की संसद ऐसे नियमों और शर्तों पर संघ में प्रवेश कर सकती है या नए राज्यों की स्थापना कर सकती है जो वह उचित समझती है, और अनुच्छेद द्वारा। 3 संसद कानून द्वारा एक नया गठन करने के लिए अधिकृत है।

राज्य, किसी भी राज्य की सीमाओं को बदलें, और किसी भी राज्य का नाम बदलें। जो विधान राज्यों के अस्तित्व को इतना महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, उसे राष्ट्रपति की सिफारिश पर पेश किया जा सकता है, जिसका व्यवहार में अर्थ है संघ की सिफारिश।

मंत्रालय, और यदि [विधेयक में प्रस्ताव किसी भी राज्य के क्षेत्र, सीमाओं या नाम को प्रभावित करता है, तो 406 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल।

राष्ट्रपति को विधेयक को विधानमंडल को भेजना होता है -

उस राज्य को केवल उस पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए। इसलिए संसद को कानून द्वारा किसी भी राज्य की सीमाओं को बदलने और उसके क्षेत्र को कम करने के लिए अधिकृत किया जाता है ताकि किसी राज्य को उसकी सभी शक्तियों और अधिकार के साथ नष्ट किया जा सके। कि संसद की शक्ति की सीमा होने के नाते यह मान लेना मुश्किल होगा कि संसद जो सक्षम है

किसी राज्य को नष्ट करना कुछ धारणाओं के कारण है कि राज्य की पूर्ण संप्रभुता उस उद्देश्य के लिए बनाए गए कानून द्वारा प्रभावी ढंग से अधिग्रहण करने में अक्षम है जो राज्य के स्वामित्व वाली संपत्ति को मानसिक उद्देश्य से नियंत्रित करने के लिए है।

संपत्ति अर्जित करने के लिए कानून बनाने की संसदीय शक्ति, संविधान के स्पष्ट प्रावधानों के अधीन, अप्रतिबंधित है। राजनीतिक संप्रभुता की उस डिग्री की धारणा पर उस शक्ति पर सीमाएं लागू करना, जो राज्यों को संघ के साथ समन्वय और संघ से स्वतंत्र बनाता है,

एक ऐसी संवैधानिक योजना की परिकल्पना करें जो कानून या व्यवहार में मौजूद न हो। संविधान के विविध प्रावधानों की समीक्षा पर यह निष्कर्ष अपरिहार्य है कि शक्तियों का वितरण-दोनों

विधायी और कार्यपालिका-राज्यों में पूर्ण संप्रभुता के सिद्धांत का समर्थन नहीं करती है ताकि इसे केंद्रीय संसद की विधायी शक्ति के प्रयोग से मुक्त किया जा सके-विशेष रूप से सहमति के संबंध में। राज्यों की संपत्ति। कि संसद सामान्य रूप से बाधा डालने की कोशिश न करे

उन शक्तियों का सामान्य प्रयोग जो राज्यों के पास क्षेत्र में विधायी और कार्यपालिका दोनों हैं। उन्हें आबंटित किया जाना यह अभिनिर्धारित करने का आधार नहीं होगा कि संसद के पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है, यदि वह चाहती है, तो उन शक्तियों का प्रयोग करते हुए जो हमने संक्षेप में दी हैं। यह आग्रह किया गया था कि यह अभिनिर्धारित करने के लिए कि राज्य में संपत्ति का अधिग्रहण संघ द्वारा किया जा सकता है, इसका अर्थ होगा, जैसा कि बंगाल के विद्वान महाधिवक्ता द्वारा स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया था, कि संघ लेखक के भवनों का अधिग्रहण और कब्जा कर सकता है 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 407

जहाँ राज्य सरकार का सचिवालय काम कर रहा है और इस प्रकार सभी राज्य सरकारों को रोक दिया गया है।

गतिविधि। इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि यदि संघ ने ऐसा किया, तो वह अपनी अधिग्रहण की शक्ति का उपयोग नहीं करेगा, बल्कि इसका दुरुपयोग करेगा, लेकिन यह तथ्य कि एक शक्ति का दुरुपयोग करने में सक्षम है, कानून में कभी भी इसके अस्तित्व को नकारने का कारण नहीं रहा है, क्योंकि इसका अस्तित्व होना चाहिए।

बहुत अलग विचारों पर निर्धारित किया गया।

हम यह जोड़ सकते हैं कि यह प्रस्तुति है, क्योंकि यह

थे, अब विस्फोटित सिद्धांत का पुनरुत्थान उत्पन्न होने वाले उपकरणों की प्रतिरक्षा

मार्शल, सी. जे. की टिप्पणियाँ

मैक कुलोच बनाम। मैरीलैंड (1), को प्रिंसीपल काउंसिल द्वारा निर्णायक रूप से खारिज कर दिया गया है क्योंकि संबंधित शक्तियों की व्याख्या के लिए लागू नहीं है कनाडाई और ऑस्ट्रेलियाई संविधान संविधान के तहत राज्य और केंद्र (बैंक ऑफ टोरंटो बनाम। लैम्बे (2), और वेब बनाम। आउट्रिम (3), और व्यावहारिक रूप से संयुक्त राज्य में भी छोड़ दिया गया है

राज्यों। लैम्बे के मामले में लॉर्ड हॉबहाउस के फैसले में निम्नलिखित अंश, हालांकि यह प्रांतीय शक्ति में सीमाओं को नहीं पढ़ने के विपरीत मामले से निपटता है, उपयोगी रूप से निर्धारित किया जा सकता है:

" अपीलार्थी समर्थन के लिए उस सिद्धांत का आह्वान करता है

यह निष्कर्ष कि संघ अधिनियम होना चाहिए

इस तरह से प्रो को कोई शक्ति की अनुमति नहीं देने के लिए

संप्रदाय के तहत प्रांतीय विधायिकाएँ। 92 , जो हो सकता है

संभावना से, और यदि कुछ अतिरिक्त में प्रयोग किया जाता है

अव्यवस्थित तरीके से, वस्तु के साथ हस्तक्षेप करें
अधीन अपनी शक्तियों का प्रयोग करने में प्रभुत्व

संप्रदाय। 91. बहस करना काफी असंभव है
 एक मामला दूसरे के लिए। उनकी प्रभुताएँ
 किसी अधिनियम के स्पष्ट शब्दों का अर्थ निकालना होगा
 संसद जो एक विस्तृत जिला बनाती है।
 विधायी प्राधिकरण के पूरे क्षेत्र का गठन
 दो विधायी निकायों के बीच, और उसी समय
 समय संघीय प्रांतों के लिए प्रदान करता है a
 सावधानीपूर्वक संतुलित संविधान, जिसके तहत

(1) (1819) 4 गेहूँ। 316 .

(2) (1887) 12 ऐप. कैस। 575 .

(3) [1907] ए. सी. 81, वाय

408 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

कोई नहीं है: भाग पूरे के नियंत्रण के अलावा अपने लिए कानून पारित कर सकते हैं। गवर्नर-जनरल के माध्यम से कार्य करना। और उन्हें जिस प्रश्न का उत्तर देना है, वह यह है कि क्या एक निकाय या दूसरे के पास कोई कानून बनाने की शक्ति है। यदि वे पाते हैं कि अधिनियम के उचित निर्माण पर एक विधायी शक्ति संप्रदाय के भीतर आती है। 92 , उनके लिए इसके अस्तित्व से इनकार करना काफी गलत होगा क्योंकि कुछ संभावनाओं से इसका दुरुपयोग हो सकता है, या उस सीमा को सीमित कर सकता है जो अन्यथा डोमिनियन संसद के लिए खुला होगा।

1962

वेस्ट का खाना

बंगाल

वी.

भारत का सियेन

इनहा, सी. जे.

:

यह भी ध्यान देने योग्य है कि सूची I की कई प्रविष्टियों के तहत यह केंद्रीय संसद के लिए खुला है।

राज्यों में निहित संपत्तियों सहित राज्य में स्थित संपत्तियों पर सीधे कानून बनाना, उदाहरण के लिए, रेलवे (प्रवेश संख्या 22), संसद द्वारा कानून द्वारा या उसके तहत राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित राजमार्ग (प्रवेश संख्या 23), संसद द्वारा कानून द्वारा राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित अंतर्देशीय जलमार्गों पर नौवहन और नौवहन, (प्रवेश संख्या 24), लाइटशिप सहित प्रकाशस्तंभ आदि। (प्रविष्टि: 26), संसद या मौजूदा कानून द्वारा बनाए गए कानून द्वारा या उसके तहत प्रमुख बंदरगाहों के रूप में घोषित बंदरगाह

(प्रविष्टि 27), एयरवेज, एयरक्राफ्ट और एयर नेविगेशन, हवाई अड्डों का प्रावधान आदि। (प्रविष्टि 29), रेलवे, समुद्र या हवाई मार्ग से या राष्ट्रीय मार्ग से यात्रियों और वस्तुओं का परिवहन। यांत्रिक रूप से चलने वाले जहाजों में जलमार्ग (प्रविष्टि 30), संघ की संपत्ति और उससे राजस्व, लेकिन राज्य द्वारा कानून के अधीन किसी राज्य में स्थित संपत्ति के संबंध में, कानून द्वारा अब तक संसद में छोड़कर, अन्यथा (प्रविष्टि 32), उद्योगों का प्रावधान करता है, जिनका संघ द्वारा नियंत्रण है: संसद द्वारा कानून द्वारा सार्वजनिक हित में समीचीन घोषित (प्रविष्टि 52), तेल क्षेत्रों और खनिज तेल संसाधनों, पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पादों, अन्य तरल पदार्थों और पदार्थों के विनियमन और विकास को संसद द्वारा कानून द्वारा खतरनाक रूप से ज्वलनशील घोषित किया गया (प्रविष्टि 53),

" 1

:

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 409

खान और खनिज विकास (प्रविष्टि 54), रेगुला

अंतर-राज्यीय नदियों और नदी घाटियों का निर्माण और विकास (प्रविष्टि 56), प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारक और अभिलेख और पुरातात्विक स्थल और अवशेष

राष्ट्रीय महत्व का घोषित (प्रविष्टि 67)। ये कानून बनाने के कुछ ऐसे मामले हैं जिन पर संसद राज्यों में संपत्ति के संबंध में सीधे कानून बना सकती है।

राज्य में और यहां तक कि राज्य में भी स्थित संपत्ति के संबंध में कानून बनाने का अधिकार संवैधानिक तंत्र को प्रदान करना होगा। व्यावहारिक रूप से अव्यवहारिक। यह देखा जा सकता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में अधिकार

कांग्रेस इनमें से अधिकांश मामलों पर कानून बनाएगी

यह "वाणिज्य खंड" से लिया गया था। " द.

वाणिज्य खंड को इतना अनन्य नहीं माना जाता है कि

राज्य विधायी प्राधिकरण के प्रयोग को रोकने के लिए

उन मामलों में जो स्थानीय हैं, उनकी प्रकृति या नाटक में

या केवल वाणिज्य के लिए सहायक हैं। जैसा कि देखा गया है

कूली की संवैधानिक सीमाएँ-8 वाँ संस्करण

पी। 1004 " श्री न्यायमूर्ति ह्यूज, प्रस्तुत करते हुए

संयुक्त राज्य अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय की राय,

सिम्पसन वी। शेपर्ड (1) ने कहा:

" संविधान में प्रदत्त अनुदान

कांग्रेस पर हर समय एक अधिकार

अंतर-राज्य की स्वतंत्रता को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त

राज्य नियंत्रण से वाणिज्यिक संबंध, और राष्ट्रीय हित की मांग के अनुसार उस अंतर पाठ्यक्रम का प्रभावी विनियमन प्रदान करना: कई राज्यों के बीच के शब्द वाणिज्य के बीच अंतर करते हैं जो एक से अधिक राज्यों से संबंधित हैं, और वह वाणिज्य जो एक राज्य के भीतर सीमित है और अन्य राज्यों को प्रभावित नहीं करता है। मुख्य न्यायाधीश मार्शल ने कहा कि पूरी सरकार की प्रतिभा और चरित्र यह प्रतीत होता है कि इसकी कार्रवाई राष्ट्र की सभी बाहरी चिंताओं और उन आंतरिक चिंताओं पर लागू होती है जो राज्यों को प्रभावित करती हैं।

(1) (1913) 230 अमेरिका 352: 57 एल, एड। 1511 .

410 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

आम तौर पर; लेकिन उन लोगों के लिए नहीं जो किसी विशेष राज्य के भीतर पूरी तरह से हैं, जो अन्य राज्यों को प्रभावित नहीं करते हैं और जिनके साथ सरकार की कुछ सामान्य शक्तियों को निष्पादित करने के उद्देश्य से हस्तक्षेप करना आवश्यक नहीं है। तब किसी राज्य के पूरी तरह से आंतरिक वाणिज्य को आरक्षित माना जा सकता है। स्वयं राज्य के लिए। राज्यों के लिए यह 'आरक्षण स्पष्ट रूप से केवल उस अधिकार का है जो कांग्रेस को अनुदान के अनुरूप है, और इसका विरोध नहीं करता है। हमारे अंदर कोई जगह नहीं है

के अधिकृत अभ्यास के विरोध में राज्य शक्ति के दावे के लिए सरकार की योजना

संघीय शक्ति। कांग्रेस का अधिकार अंतर-राज्यीय वाणिज्य के हर हिस्से और हर साधन या एजेंसी तक फैला हुआ है।

जिसे चलाया जाता है; और इसके विनियमन के लिए प्रतिबद्ध विषयों पर कांग्रेस द्वारा पूर्ण नियंत्रण को अंतरराज्यीय और अंतरराज्यीय संचालन के संयोजन से इनकार या विफल नहीं किया जाना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि राष्ट्र राज्य की आंतरिक चिंताओं से निपट सकता है, लेकिन अंतर-राज्यीय वाणिज्य को विनियमित करने की अपनी संवैधानिक शक्ति का कांग्रेस द्वारा निष्पादन इस तथ्य से सीमित नहीं है कि राज्य के भीतर लेनदेन इतने परस्पर बुने हुए हो सकते हैं। कि पूर्व की प्रभावी सरकार संयोग से उत्तरार्द्ध को नियंत्रित करती है। यह निष्कर्ष अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय शक्ति की सर्वोच्चता का परिणाम है।

अंतर्निर्मित क्षेत्र "।

हमारा संविधान स्थानीय और अंतरराज्यीय मामलों में राज्य के कानून के संचालन में इस तरह के किसी भी भेदभाव को मान्यता नहीं देता है। यदि कोई अधिनियम संघ सूची के अंतर्गत आता है, तो चाहे उसका संचालन स्थानीय हो या अन्यथा उसके अनुरूप राज्य विधान, कला के अधीन होगा।

254 (2) 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 411

सवाल दूसरे से संपर्क किया जा सकता है

कोण। यहां तक कि संविधानों के तहत जो वास्तव में संघीय हैं और राज्यों की पूर्ण संप्रभुता को अवशिष्ट क्षेत्र में कार्यकारी और विधायी दोनों में मान्यता प्राप्त है, उपयोग करने की शक्ति या जैसा कि कहा जाता है कि संघ के उद्देश्यों के लिए राज्य की संपत्ति की "निंदा" करने से इनकार नहीं किया जाता है।

भूमि अधिग्रहण की शक्ति का उपयोग करने की मांग की गई

संघ द्वारा प्रदत्त, जिसे पश्चिम बंगाल राज्य द्वारा चुनौती दी गई है, एस. एस. द्वारा प्रदत्त अधिकार के प्रयोग में प्राप्त करने की शक्ति है। 6, 7 और कोयला वहन क्षेत्र (अधिग्रहण और विकास) अधिनियम, 1957 की धारा 9। यह अधिनियम भारत के आर्थिक हित में कोयला खनन उद्योग और इसके विकास पर अधिक से अधिक सार्वजनिक नियंत्रण स्थापित करने के लिए लागू किया गया था, जिसमें कोयले के भंडार वाली या होने की संभावना वाली भूमि राज्य द्वारा अधिग्रहण का प्रावधान किया गया था। ऐसी भूमि में या उस पर किसी समझौते, पट्टे, लाइसेंस या अन्यथा के आधार पर उपार्जित ऐसे अधिकारों के उन्मूलन या संशोधन के लिए और उससे जुड़े मामलों के लिए अधिकार। सूची I की प्रविष्टियों 52 और 54 द्वारा संसद को निम्नलिखित के संबंध में कानून बनाने की शक्ति दी गई है:

(52) " उद्योग, जिनका नियंत्रण संघ द्वारा किया जाता है

संसद द्वारा कानून द्वारा घोषित किया जाता है

" }

जनहित में।

(54) " खानों और खनिजों के नियमन का विकास

संसद द्वारा कानून द्वारा घोषित

जनहित में।

भारत सरकार अधिनियम, 1935 की प्रविष्टि 36 के तहत शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जो संविधान की प्रविष्टि 52 के अनुरूप है, केंद्रीय विधानमंडल ने खनिज और खनन (विनियमन और विकास) अधिनियम, 1948 (1948 का एल. आई. आई.) अधिनियमित किया। एस द्वारा। 2 अधिनियम के अनुसार यह घोषित किया गया था कि यह 412 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल में समीचीन था।

जनहित जो केंद्र सरकार को करना चाहिए

1962

खानों के विनियमन को अपने नियंत्रण में लेना और

वेस्ट का खाना

तेल क्षेत्र और खनिजों का विकास

बंगाल

अधिनियम में निर्दिष्ट। माइन 'को इसके तहत परिभाषित किया गया था

एन ऑफ इंडिया

के उद्देश्य के लिए किसी भी खुदाई के रूप में कार्य करें

न्हा, सी. जे.

खनिजों को खोजना या प्राप्त करना और इसमें एक तेल अच्छी तरह से डालें। इसके बाद कोई खनन पट्टा नहीं दिया जा सका।

अधिनियम का प्रारंभ, अन्यथा

अधिनियम के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार। के द्वारा

एस. 13 अधिनियम के प्रावधान बाध्यकारी होने थे

सरकार, चाहे वह डोमी के अधिकार में हो

राज्य या किसी राज्य का। एस द्वारा घोषणा द्वारा। 2

खनिज स्थिर हो गए। अधिनियम चालू है

कानून पुस्तक, और घोषणा, भविष्य में

अधिनियम का अनुप्रयोग। क्योंकि संविधान को यह भी लागू रहता है, जैसे कि यह कला के तहत बनाया गया था। 52

संविधान से।

संविधान के बाद, उद्योग (देव)

भागीदारी और विनियमन) अधिनियम, 1951 (1951 का 65)

संसद द्वारा अधिनियमित। एस द्वारा। 2 यह घोषित किया गया था

कि यह लोक हित में समीचीन है कि

संघ को उद्योगों को अपने नियंत्रण में लेना चाहिए

पहली अनुसूची में निर्दिष्ट। अनुसूची मद में

(3) " कोक और अन्य व्युत्पन्न सहित कोयला "

इसे ऐसे उद्योगों में से एक के रूप में शामिल किया गया था। द लेजिस

आई.

लैचर ने तब खान और खनिज (विनियमन) को अधिनियमित किया

राष्ट्र और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का एलएक्सवीआईआई)।

एस द्वारा। 2 घोषणा के समान शब्दों में एक घोषणा

1948 के अधिनियम एल. आई. आई. में यह बनाया गया था।

अधिनियम से संबंधित है

तेल को छोड़कर सभी खनिजों के साथ, और कुछ निश्चित करता है

1948 के अधिनियम III में संशोधन। वहाँ एक है

संसद की मद 52 के संदर्भ में घोषणा

के संबंध में कानून बनाने के लिए अनन्य अधिकार प्राप्त किया
अधिनियम 65 की अनुसूची में निर्धारित कोयला उद्योग

1951 और राज्य सरकार के पास कोई अधिकार नहीं था

उस तरफ से।

अमेरिकी संविधान में कोई अभिव्यक्ति नहीं है

कांग्रेस को आई. एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 413 के लिए
कानून बनाने की शक्ति प्रदान की गई

सार्वजनिक उद्देश्य के लिए किसी भी संपत्ति का अधिग्रहण। लेकिन निर्णयों की एक लंबी अवधि के कारण यह माना गया है कि कांग्रेस अपनी क्षमता के भीतर मामलों के संबंध में कानून बनाने के लिए तैयार है, भले ही इस तरह के कानून का राज्यों के अधिकारों, संपत्ति पर सीधा प्रभाव पड़ सकता है। ओक्लाहोमा एक्स रिले के राज्यों में। लियोन कं. फिलिप्स बनाम। गाय एफ. एटकिंसन कंपनी (1) ने यह अभिनिर्धारित किया कि बाढ़ नियंत्रण कानून बनाने में जो एक जलाशय के निर्माण को अधिकृत करता है,

कांग्रेस के पास एक घटक राज्य के स्वामित्व वाली भूमि की निंदा करने की शक्ति थी। यह देखा गया कि "दसवां संशोधन राष्ट्रीय सरकार को सभी साधनों का सहारा लेने के अधिकार से वंचित नहीं करता है।

एक प्रदत्त शक्ति का प्रयोग जो उपयुक्त है और स्पष्ट रूप से अनुमत अंत के लिए अनुकूलित है 'संयुक्त राज्य अमेरिका बनाम। डार्वी (312 यू. एस. पी. 124) x x x चूंकि इस बांध और जलाशय का निर्माण एक वैध है

कांग्रेस द्वारा अपनी वाणिज्य शक्ति का प्रयोग करते हुए, राज्य की संप्रभुता में कोई हस्तक्षेप नहीं है। संयुक्त राज्य अमेरिका। वी. एपलाचियन विद्युत शक्ति

कं. (311 यू. एस. 428)। यह तथ्य कि भूमि किसी राज्य के स्वामित्व में है, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा इसकी निंदा करने में कोई बाधा नहीं है। वेन कंट्री बनाम। संयुक्त राज्य, 53 सी. टी. सी. एल. (एफ) 417,252 यू. एस. 574 में पुष्टि की गई। इसी तरह यह द चैरोकी नेशन बनाम में आयोजित किया गया था। दक्षिणी कान्सास रेलवे कं. (), कि कांग्रेस के पास चैरोकेक राष्ट्र के क्षेत्र के माध्यम से एक रेलवे के निर्माण के लिए एक निगम को अधिकृत करने की शक्ति है, क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका संविधान द्वारा सामान्य सरकार को दी गई शक्तियों के निष्पादन के लिए आवश्यक उद्देश्यों के लिए कई राज्यों की सीमाओं के भीतर भी प्रतिष्ठित क्षेत्र के अधिकार का प्रयोग कर सकता है।

अपने विधायी अधिकार को प्रभावी बनाने की शक्ति जो पूर्ण रूप से सौंपी गई है, शक्तियों को पूरा करने के लिए आवश्यक है, राज्यों की सहमति पर निर्भर नहीं करती है, और राज्यों की ओर से किसी भी विरोध द्वारा इसे विफल नहीं किया जा सकता है। इसकी सीमा

इस शक्ति का वर्णन स्ट्रॉन्ग, जे. द्वारा किया गया था।

(1) (1940) 313 अमेरिका 508: 85 एल. एड. 1487 . (2) (1889) 135 यू. एस. 641 : 34 एल, एड। 295 .

1 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

वी. संयुक्त राज्य अमेरिका (1) " इस तर्क के दौरान यह गंभीरता से तर्क नहीं दिया गया है कि संयुक्त राज्य सरकार

उपयुक्त भूमि के लिए शक्ति के बिना है या अपने स्वयं के उपयोग के लिए राज्यों के भीतर अन्य संपत्ति और इसे अपने उचित कार्यों को करने में सक्षम बनाना।

इस तरह का अधिकार इसके स्वतंत्र अस्तित्व और निरंतरता के लिए आवश्यक है। इन्हें संरक्षित नहीं किया जा सकता है यदि एक निजी की हठधर्मिता व्यक्ति, या यदि कोई अन्य प्राधिकरण, उन साधनों या उपकरणों के अधिग्रहण को रोक सकता है जिनके द्वारा अकेले सरकारी कार्यों को किया जा सकता है। सामान्य सरकार में संविधान द्वारा निहित शक्तियां सभी राज्यों में भूमि अधिग्रहण की मांग करती हैं। इनकी आवश्यकता किलों, शस्त्रागारों और शस्त्रागारों के लिए, नौसेना यार्ड और लाइट हाउसों के लिए, कस्टम हाउसों, डाकघरों और कोर्ट हाउसों के लिए और अन्य सार्वजनिक उपयोगों के लिए होती है। यदि ऐसे उपयोगों के लिए संपत्ति अर्जित करने के अधिकार को बंजर बनाया जा सकता है।

संपत्ति धारकों की बेचने की अनिच्छा के अधिकार से, या संघीय सरकार को बिक्री पर प्रतिबंध लगाने वाली किसी राज्य की कार्रवाई से, शक्ति के स्थायी अनुदान प्रदान किए जा सकते हैं।

निरर्थक, और सरकार अपने व्यावहारिक अस्तित्व के लिए एक की इच्छा पर निर्भर है

राज्य, या यहाँ तक कि एक निजी नागरिक पर भी। यह नहीं हो सकता। किसी को भी राज्य सरकारों में प्रतिष्ठित क्षेत्र के अधिकार के अस्तित्व पर संदेह नहीं है-एक अधिकार जो अंतिम स्वामित्व के अधिकार से अलग और सर्वोपरि है। यह उनके अस्तित्व की आवश्यकताओं से बढ़ता है, न कि उस कार्यकाल से जिसके द्वारा भूमि धारण की जाती है। इसका उपयोग किया जा सकता है, हालांकि भूमि सरकार से अनुदान द्वारा या तो मध्यस्थता से या तुरंत नहीं ली जाती है, और इस सहमति से स्वतंत्र है कि क्या वे उत्तराधिकारियों की विफलता के मामले में सरकार को छोड़ देंगे। अधिकार राजनीतिक आवश्यकता की संतान है; और

(1) (1876) 91 सी. एस. 449

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 415

यह संप्रभुता से अविभाज्य है, जब तक कि इनकार नहीं किया जाता है इसे अपने मूल कानून द्वारा "।

संयुक्त राज्य अमेरिका में लेने की शक्ति सार्वजनिक उपयोग के लिए निजी संपत्ति को अमेरिकी वकीलों द्वारा प्रतिष्ठित डोमेन कहा जाता है। सार्वजनिक उपयोग के लिए उचित मुआवजे के भुगतान पर संपत्ति लेने की राज्य की शक्ति है: यह संप्रभुता की एक अंतर्निहित विशेषता है-संविधान से भी नहीं, बल्कि इससे स्वतंत्र रूप से उत्पन्न होती है, और इसका उपयोग राज्यों में सभी संपत्ति के संबंध में प्रभावी होने के लिए किया जा सकता है।

राज्य की निजी संपत्ति या संपत्ति के खिलाफ संघ के अधिकार का प्रवर्तन।

इन अटॉर्नी-ब्रिटिश कोलंबिया के लिए जनरल बनाम।

कैनेडियन पैसिफिक रेलवे (1), उन प्रश्नों में से एक है जिसे न्यायिक आयोग के समक्ष निर्धारित किया जाना था।

समिति यह थी कि क्या एस के तहत शक्ति है। 91 एस के साथ पढ़ें। 92 ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम 1867 जो डोमिनियन संसद को भाप की लाइनों या अन्य जहाजों, रेलवे, नहरों, तारों और किसी भी प्रांत को जोड़ने वाले अन्य कार्यों और उपक्रमों के संबंध में विशेष विधायी प्राधिकरण प्रदान करता है।

किसी अन्य के साथ, या अन्य का उपयोग किया जा सकता है ताकि रेलवे के लिए प्रांत में क्राउन भूमि के उपयोग को अधिकृत किया जा सके। न्यायिक समिति ने कहा कि

पी। 2100:

" अपीलार्थी के लिए यह तर्क दिया गया था कि ये

अधिनियमों का इस तरह से अर्थ नहीं लगाया जाना चाहिए कि

डोमिनियन संसद को निपटाने में सक्षम बनाएँ

परियोजनाओं के लिए प्रांतीय क्राउन भूमि

उल्लेख किया है। लेकिन उनके प्रभुत्व सहमत नहीं हो सकते

उस तर्क में। कनाडाई प्रशांत में Ry. कं.

वी. नोट्रे के पैरिश का निगम

दामाद

डी बोसेकोर्स (1899 ए. सी. 367)

(उसी से संबंधित एक मामला

कंपनी

वर्तमान में) के लिए कानून बनाने का अधिकार

सभी प्रांतों में रेलवे जिसके माध्यम से

यह पास पूरी तरह से मान्यता प्राप्त था। टोरंटो में

निगम बनाम। बेल। कनाडा की टेलीफोन कंपनी

(1) [1906] ए. सी. 204

416 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

(1905 ए. सी. 52) जो एक टेलीफोन से संबंधित है।

1962

कंपनी जिसका संचालन सीमित नहीं था

पश्चिम का

एक प्रांत के लिए, और जो एक ही अनुभागों पर निर्भर था, इस बोर्ड ने डोमिनियन संसद के कानून को पूरा प्रभाव दिया

भारत का एन रा, सी. जे.

टोरंटो के क्षेत्र जो नगर निगम में निहित हैं। अब इस धारा का इस तरह से अर्थ लगाना कि प्रांतीय शाही भूमि पर संसद की शक्ति को बाहर कर दिया जाए, उनके अधिपतियों की राय में, उन धाराओं की शर्तों के साथ असंगत होगा जिनका उन्हें विधान के पूरे दायरे और उद्देश्यों के साथ अर्थ लगाना है, और इस बोर्ड के पिछले निर्णयों में कार्य किए गए

सिद्धांत के साथ। इसलिए उनके अधिपतियों का मानना है कि डोमिनियन संसद के पास इस रेलवे के उद्देश्यों के लिए कंपनी द्वारा प्रांतीय क्राउन भूमि के उपयोग को अधिकृत करने की पूरी शक्ति थी।

इसे ट्रूक के साथ असंगत नहीं माना जाता है।

ऑस्ट्रेलिया जैसे महासंघ के पास इस तरह का प्रावधान होगा

एस। 51 (31) ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रमंडल

अधिनियम, 1900 जो विशेष रूप से सामान्य संपत्ति को मुआवजे के भुगतान की शर्तों पर, यदि राष्ट्रमंडल उद्देश्य के लिए आवश्यक हो, तो "राज्य" संपत्ति का अधिग्रहण करने का अधिकार देता है। इस संबंध में यह ध्यान देने योग्य है कि

ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रमंडल अधिनियम के तहत एक है

राज्यों में संपत्ति निहित करने के संबंध में प्रावधान और

राष्ट्रमंडल में कुछ हद तक समान रेखाओं पर

कला. 294. कनाडा में, प्रिंसी का निर्णय

परिषद ने माना है कि संपत्ति का अधिग्रहण लागू करने के लिए डोमिनियन द्वारा

पार्लिया में निहित शक्तियों के तहत डोमिनियन कानून

एस द्वारा उस ओर से। 91 के साथ असंगत नहीं था

जिसे विधायी संप्रभुता कहा जा सकता है

उनके लिए चिह्नित क्षेत्रों में प्रांत

एस। 92. और अंत में, यहां तक कि अमेरिका में भी संघ, चूंकि यू. एस. का संविधान बनाता है

राज्य के संविधान के लिए कोई प्रावधान नहीं है, ये सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 417 हैं।

1 एस सी आर।

इसलिए संपत्ति के संबंध में कानून बनाने की संघ की शक्ति राज्यों में निहित है, भले ही राज्यों को संघ के रूप में संप्रभु माना जाता है, अप्रतिबंधित रहता है, और राज्य की संपत्ति इसके संचालन से मुक्त नहीं है। विभिन्न प्रविष्टियों के तहत शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जिन्हें पहले संदर्भित किया गया है, केंद्रीय संसद कानून बना सकती है ताकि उनमें निहित संपत्ति में राज्य के अधिकारों को कम किया जा सके। यदि संघ के विधान के दायरे से राज्य की संपत्ति का अपवर्जन निहित माना जाता है सूची I में जो प्रविष्टियाँ हैं, वे केंद्र सरकार के लिए राष्ट्रीय महत्व के मामलों के संबंध में अपने दायित्वों को पूरा करना असंभव नहीं तो मुश्किल होगा। जिन प्रविष्टियों का हमने पहले उल्लेख किया है, यदि वे सुझाए गए किसी भी प्रतिबंध के अधीन नहीं हैं, तो यह मानने का कोई कारण नहीं होगा कि सूची III की प्रविष्टि 42 इस सीमा के अधीन है कि उस मद में निर्दिष्ट संपत्ति व्यक्तियों या निगमों की है, न कि राज्य की। इसके अंतिम विश्लेषण में सवाल विधायी क्षमता का है। क्या प्रविष्टि 42 सूची III द्वारा प्रविष्टि 52 और 54 के तहत शक्ति के प्रभाव के लिए सहायक के रूप में प्रदान की गई शक्ति राज्यों की संपत्ति के संबंध में प्रयोग करने में असमर्थ है? इसके प्रयोग के खिलाफ कोई सकारात्मक हस्तक्षेप संविधान में बोधगम्य नहीं है और इस तरह के निर्णय का निहितार्थ राज्यों में संप्रभुता की एक डिग्री मानता है जो व्यक्त विधायी 418 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल को पार करता है।

संघ की शक्ति। संघ और राज्यों के बीच विधायी और कार्यकारी शक्तियों का विभाजन करने वाला संविधान पहले से ही कई पहलुओं में राज्यों पर संघ की श्रेष्ठता की अवधारणा पर आधारित नहीं है

जाँचने पर यह नकारात्मक हो जाता है।

री. (2) .

कला द्वारा। 294 (क) सभी संपत्ति और परिसंपत्तियाँ जो शुरू होने से ठीक पहले

संविधान भारत के अधिराज्य के लिए ब्रिटिश ताज में निहित था, संघ में निहित हो गया, और प्रांतों की सरकार के उद्देश्यों के लिए निहित संपत्ति संबंधित राज्यों में निहित हो गई। भारत सरकार अधिनियम के तहत सरकारी उद्देश्यों के लिए सभी संपत्ति ब्रिटिश क्राउन में निहित थी।

और संविधान के आधार पर वह संपत्ति संघ और राज्यों में निहित हो गई। सीएल के आधार पर। (ख) भारत सरकार के अधिकार, देनदारियाँ और दायित्व

और प्रांत, संघ और संबंधित राज्यों को हस्तांतरित किए गए।

इस तथ्य का एक महत्वपूर्ण बिंदु बनाया गया था कि कला। 294 राज्य में कुछ संपत्ति निहित थी और

यह प्रस्तुत किया गया था कि अनुच्छेद के तहत उस संपत्ति को संप्रेषित करने के लिए समझौते द्वारा राज्य के अधिकार के अधीन। 298, संविधान का उद्देश्य था कि राज्य को

वह उस संपत्ति का स्वामी बना रहेगा और यह निहित होना राज्य में निहित किसी भी संपत्ति को प्राप्त करने के संघ के अधिकार के खिलाफ माना जाना चाहिए। अपनी सहमति दें। विद्वान महान्यायवादी द्वारा यह इंगित किया गया था कि जहां तक वादी-पश्चिम बंगाल राज्य-का संबंध है, वह संविधान की तारीख को कोयले वाली भूमि का मालिक नहीं था, और उसे इसका अधिकार 1954 के बंगाल अधिग्रहण संपदा अधिनियम (1954 का 1 ईसा पूर्व) के प्रावधानों के आधार पर राज्य में निहित होने के बाद ही मिला और इस प्रकार अधिग्रहित उप-संपत्ति अनुच्छेद के दायरे में नहीं थी।

294. हम 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 419

संदेह है कि यह दावे का जवाब होगा

इस वाद में और विशेष रूप से वादी में

अधिसूचना की वैधता के लिए चुनौती का संदर्भ
आराम नहीं करना चाहते हैं

कैटायन अब विवादित है लेकिन हम

इस तरह के किसी भी संकीर्ण आधार पर हमारा निर्णय।

अनुच्छेद 298 कहता है:

किसी भी व्यापार या व्यवसाय और संपत्ति के अधिग्रहण, धारण और निपटान और

एम.

ए.

सी.

किसी भी उद्देश्य के लिए अनुबंध करना:

बशर्ते कि

(क) संघ की उक्त कार्यकारी शक्ति

जहां तक ऐसा व्यापार या व्यवसाय या ऐसा उद्देश्य वह नहीं है जिसके संबंध में संसद कानून बना सके, प्रत्येक राज्य में राज्यों द्वारा विधान के अधीन होगा; और

(ख) प्रत्येक राज्य की उक्त कार्यकारी शक्ति

जहां तक ऐसा व्यापार या व्यवसाय या ऐसा उद्देश्य वह नहीं है जिसके संबंध में राज्य विधानमंडल

कानून, द्वारा कानून के अधीन होना संसद "।

तर्क यह था कि संविधान अनुच्छेद के प्रावधानों के तहत किसी राज्य को आवंटित या निहित उस संपत्ति को संपादित और अधिनियमित करने का इरादा रखता है। 294 या 296 उस राज्य से संबंधित तब तक बना रहेगा जब तक कि राज्य द्वारा प्रदत्त शक्ति के आधार पर

कला. 298 इसने इसके साथ भाग लेने का फैसला किया, और इसके बिना

इन अनुच्छेदों का संवैधानिक संशोधन ऐसी संपत्ति को राज्य से विभाजित नहीं किया जा सकता है। हम मानते हैं कि यह प्रस्तुति कला के कार्य के गलत अनुमान पर आगे बढ़ती है। 294 और संविधान की योजना में 298।

इसे शुरू करने के लिए 420 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल की आवश्यकता होती है।

इंगित किया जाए कि जब कला। 298 राज्यों को प्रदान करता है

संपत्ति के अधिग्रहण या निपटान की शक्ति, रेफरी

राज्य की कार्यकारी शक्ति प्राप्त करने के लिए है

या ऐसी संपत्ति का निपटान करना जो इसके बिना लागू होगी
संपत्ति का भेद। 294 या इसके तहत

कला के तहत निहित

296 एस्कीट या लैप्स या बोनो रिक्तता, या प्रो के रूप में

अन्यथा अर्जित संपत्ति। इसके अलावा, कला। 298 यह केवल एक सक्षम करने वाला अनुच्छेद है-जो राज्य को संपत्ति के मालिक के रूप में, निपटान की शक्ति प्रदान करता है। इसका किसी भी उचित व्याख्या पर अर्थ नहीं लगाया जा सकता है।

के रूप में

संविधान के अन्य प्रावधानों के संचालन से राज्य के स्वामित्व के खो जाने की संभावना को नकारना। कला. 298 इसलिए कला के उचित निर्माण पर इसकी कोई प्रासंगिकता नहीं है। 294

अनुच्छेद 295 एस पर मॉडल किया गया था। 172 में से

भारत सरकार अधिनियम, 1935। जैसा कि संघीय न्यायालय ने भूमि के पुनः आवंटन में बताया है मुख्य आयुक्त के प्रांत में इमारतें (1)।

" 1 अप्रैल, 1937 तक, जब अधिकांश भाग

अधिनियम के लागू होने के बाद, सरकार भारत एक एकात्मक सरकार थी, जिसके लिए सभी

प्रांतीय सरकारें अधीनस्थ थीं।

और इसलिए संबंधित सभी भूमि और भवन

सरकार या सरकारी उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है

के उद्देश्य के लिए महामहिम में निहित थे

भारत सरकार की ओर से। यह हुआ था सरकार के बाद से कानूनी स्थिति

भारत अधिनियम, 1858 (एस. सी. ई. एस.) 39 उस अधिनियम का, और एस. 28 (1) और (3) भारत सरकार अधिनियम।

जो 1935 के अधिनियम से तुरंत पहले था)।

लेकिन कई स्वायत्त संस्थाओं की स्थापना

प्रांत, केंद्रीय सरकार से स्वतंत्र

बाद वाले के साथ विभाजित करना और समग्रता

अंग्रेजों में कार्यकारी और विधायी शक्तियाँ भारत, और शक्तियों का पृथक्करण परस्पर जुड़ा हुआ है।

भारतीय राज्य के साथ अपने संबंधों में ताज;
(जिनका प्रयोग आगे किया जाना था

(1) [1: 43] एफ. सी. आर. 20,23।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 421

सी. आर.

विशेष रूप से महामहिम के प्रतिनिधि द्वारा

उस उद्देश्य के लिए नियुक्त) एक आवंटन किया गया

इन तीन प्राधिकरणों के बीच आवश्यक

के उद्देश्यों के लिए महामहिम में निहित अकेले भारत सरकार। यह एलोका है

जो प्रभावित किया गया था या होने का प्रयास किया गया था

एस के प्रावधानों द्वारा प्रभावित। 172 , उप-एस। (1) ,

पैरा, (ए), (बी) और (सी) "।

172 पर जो इस वितरण को प्रभावित करता है:

“ 172. (1) सभी भूमि और इमारतें जो व्याप्त हैं। भाग III के प्रारंभ से पहले

इस अधिनियम का भारत सरकार के उद्देश्य के लिए महामहिम में निहित किया गया था

उस तारीख से -

(क) किसी प्रांत में स्थित भूमि और भवनों के मामले में, उस प्रांत की सरकार के प्रयोजनों के लिए महामहिम को निहित करें, जब तक कि उनका उपयोग किसी किरायेदारी के तहत नहीं किया गया हो।

गवर्नर-जनरल के बीच समझौता

परिषद में और उस प्रांत की सरकार में, उन उद्देश्यों के लिए जो बाद में भारतीय राज्यों के साथ अपने संबंधों में क्राउन के कार्यों के प्रयोग के लिए संघीय सरकार या महामहिम के प्रतिनिधि के उद्देश्य होंगे, या जब तक कि वे भूमि और भवन न हों जिनका उपयोग पहले ऐसे उद्देश्यों के लिए किया जाता था जैसा कि पहले कहा गया था, या जिनका इरादा या पूर्व में इस तरह से उपयोग करने का इरादा था और जिन्हें संघ द्वारा प्रमाणित किया जाता है।

गवर्नर-परिषद में जनरल या, के रूप में मामला, महामहिम का प्रतिनिधि हो सकता है, जिसे ऐसे उद्देश्यों के लिए भविष्य में उपयोग के लिए रखा गया हो, या रखा गया हो।

अस्थायी रूप से अधिक 422 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वी. ओ. एल. के उद्देश्य के लिए।

बिक्री द्वारा या अन्यथा लाभप्रद निपटान;

3 की तरह। 172 कला का अग्रदूत है। 294 , एसएस। 174 और 175 को समान रूप से शब्दबद्ध किया गया है और कला के अनुरूप हैं। 296 और 298।

राज्यों का संपत्ति का अधिकार, जो

कला द्वारा उन्हें हस्तांतरित किया गया। 294 (क) इसलिए अर्जित संपत्ति में उनके अधिकार से अलग नहीं था: संविधान की स्थापना के समय अर्जित संपत्ति और कार्यकारी अधिकार के प्रयोग के बीच संविधान में कोई अंतर नहीं है। अनुच्छेद 295 में राज्य की संपत्ति के हस्तांतरण के खिलाफ कोई निषेध नहीं है और यदि संपत्ति हस्तांतरण करने में सक्षम है। राज्य द्वारा ले जाया गया यह अनिवार्य रूप से सक्षम है

अर्जित किया।

क्यूबेक के लिए महान्यायवादी बनाम। निपिसिंग

सेंट्रल रेलवे कंपनी और कनाडा के अटॉर्नी जनरल (1) इस संदर्भ में निर्देशात्मक हैं। डोमिनियन कानून-कनाडा का रेलवे अधिनियम, 1919-ने एक्सप्रोप्रिय के लिए प्रावधान किया। रेलवे के प्रयोजन के लिए और इस प्रकार ली गई और एस के तहत भूमि के मुआवजे के भुगतान के लिए भूमि का गठन। 189 अधिनियम के तहत रेलवे कंपनी को गवर्नर जनरल-इन-काउंसिल की सहमति से रेलवे के उपयोग के लिए "क्राउन लैंड" लेने का अधिकार दिया गया था।

ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम की धारा 109 जो कला से मेल खाती है। 294 दौड़ा:

" 109. संघ में कनाडा, नोवा स्कोटिया और न्यू ब्रंसविक के कई प्रांतों से संबंधित सभी भूमि, खान, खनिज और रॉयल्टी और ऐसी भूमि, खानों, खनिजों या रॉयल्टी के लिए देय या देय सभी राशियां संबंधित होंगी।

(1) (1926) ए. सी. 715.

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 423

ओंटारियो, क्यूबेक, नोवा स्कोटिया और न्यू ब्रंसविक के कई प्रांतों के लिए, जिनमें वे स्थित हैं या उत्पन्न होते हैं, उनके संबंध में मौजूद किसी भी न्यास के अधीन, और उसी में प्रांत के अलावा किसी भी हित के लिए।

इस प्रकार निहित अपनी संपत्ति को बनाए रखने और आनंद लेने के प्रांतों के अधिकार पर एस द्वारा और जोर दिया गया। 117 जिसमें लिखा है:

" 117. कई प्रांत अपनी सभी संबंधित सार्वजनिक संपत्ति को बनाए रखेंगे, जिसका इस अधिनियम में अन्यथा निपटान नहीं किया गया है, जो कनाडा के किलेबंदी या रक्षा के लिए आवश्यक किसी भी भूमि या सार्वजनिक संपत्ति को ग्रहण करने के अधिकार के अधीन है। देश "।

कनाडा के गवर्नर-जनरल ने इन प्रावधानों के प्रभाव और प्रांतीय क्राउन लैंड्स के संबंध में इसकी क्षमता के बारे में सर्वोच्च न्यायालय के प्रश्नों का उल्लेख किया।

यह देखा जाएगा कि भूमि की रक्षा के लिए किलेबंदी के लिए भूमि की मांग नहीं की गई थी।

एस के भीतर देश। 117. कनाडा के सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि प्रावधान प्रांतीय पर लागू होता है

भूमि और डोमिनियन संसद द्वारा सक्षम रूप से अधिनियमित किया गया था, सर जॉन साइमन अपीलार्थी-प्रांत ने दो प्रस्तुतियाँ कीं: (1) कि रेलवे अधिनियम के उचित निर्माण पर, यह

यह केवल डोमिनियन में निहित क्राउन भूमि पर लागू किया जा सकता है और प्रांतीय क्राउन भूमि पर नहीं, इस उद्देश्य के लिए बड़े पैमाने पर एस में प्रावधान पर भरोसा किया जा सकता है। 189 गवर्नर-जनरल-इन-काउंसिल की सहमति लेने के लिए विवादित अधिनियम। , (2) प्रांतीय क्राउन भूमि के निहित होने के कारण एस द्वारा अपीलार्थी। 109 शाही

अधिनियम, एस के साथ पढ़ा जाता है। 117 , प्रांत अपनी-अपनी संपत्ति को बनाए रखने के हकदार थे, जिसका अधिनियम द्वारा अन्यथा निपटान नहीं किया गया था, और यह कि जिस उद्देश्य के लिए रेलवे 424 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल।

अधिनियम द्वारा बनाया गया प्रावधान एस के अंतिम अंग के भीतर नहीं आता था। 117 डोमिनियन सरकार को कुछ सीमित उद्देश्यों के लिए संपत्ति लेने का अधिकार देना। इस कारण से, यदि इसके उचित निर्माण पर अधिनियम में प्रांतीय भूमि के साथ हस्तक्षेप शामिल है, तो यह असंवैधानिक था। रेस्पॉन डेंट के लिए समझौता-डोमिनियन-वह था जब एस। 117 ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम के तहत डोमिनियन को रक्षा आदि के लिए डोमिनियन भूमि लेने की शक्ति निहित थी, यह कार्यकारी का संदर्भ था न कि विधायी कार्यवाई का। उन्होंने कहा कि इस धारा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना नहीं था कि प्रांत अपनी सार्वजनिक संपत्ति को हर समय बनाए रखें, बल्कि इसका उद्देश्य केवल परिसंघ की तारीख को सार्वजनिक संपत्ति का वितरण करना था। विस्काउंट गुफा, एस के निर्माण से संबंधित प्रश्न का निपटान करने के बाद। 189 निम्नलिखित में

शर्तें:

" यह खंड रेलवे के मार्ग पर स्थित क्राउन की सभी भूमि के संदर्भ में लागू होता है, डोमिनियन और डोमिनियन के बीच कोई अंतर नहीं किया जा रहा है।

प्रांतीय क्राउन भूमि "।

यह कहते हुए खारिज कर दिया गया कि विवाद बहुत महत्वपूर्ण नहीं है

कि राज्यपाल को संदर्भ के रूप में दिया गया था।
दिया कि यह केवल था

जनरल-इन काउंसिल ने संकेत

डोमिनियन संपत्ति जिसे कवर करने का इरादा था

उस प्रावधान से।

मुख्य संवैधानिक आपत्ति से निपटना

प्रांतीय संपत्ति लेने की वैधता के लिए,

विस्काउंट गुफा ने बताया कि यह पहला नहीं था

अवसर जब डोमिनियन विधायी का प्रभाव

ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम की धारा 91 के तहत शक्ति

प्रांतों में निहित संपत्ति का उदय हुआ

प्रिवी काउंसिल के समक्ष, अटॉर्नी जनरल के लिए

ब्रिटिश कोलंबिया बनाम। कैनेडियन पैसिफिक रेलवे कं।

(1906 ए. सी. 204) यह तर्क दिया गया था कि डोमिनियन की विधायी शक्ति का अर्थ इस तरह नहीं लगाया जाना चाहिए कि प्रांतों को उनकी 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 425 से वंचित किया जाए।

उनमें जो निहित था उसमें स्वामित्व हित

ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम द्वारा।

विस्काउंट गुफा ने फैसले में अंश का हवाला दिया

हम पहले ही निकाल चुके हैं और जारी रखे हैं:

" यह तर्क दिया गया था कि एसएस का प्रभाव। 109 और

117 ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम का था

प्रत्येक प्रांत में निहित लाभप्रद

क्राउन भूमि में ब्याज में स्थित है

प्रांत, केवल कनाडा के अधिकार के अधीन

एस में निहित आरक्षण के तहत। 117 को

रक्षा के उद्देश्यों के लिए आवश्यक भूमि ग्रहण करें।

लेकिन विचाराधीन आरक्षण का उल्लेख प्रतीत होता है

कार्यपालिका के लिए, न कि विधायी, कार्यवाई के लिए; और

जबकि प्रत्येक प्रांत का स्वामित्व अधिकार

इसकी अपनी क्राउन भूमि विवाद से परे है, कि
अधिकार कानून द्वारा प्रभावित होने के अधीन है
कनाडा की संसद द्वारा पारित
उस पर प्रदत्त प्राधिकारी की सीमाएँ

.....जहाँ विधायी

संसद।

बिना शक्ति के प्रभावी रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

दोनों के स्वामित्व अधिकारों को प्रभावित करना

एक प्रांत और प्रांतीय में युगल

सरकार, उन अधिकारों को प्रभावित करने की शक्ति

अनिवार्य रूप से विधायी में शामिल है

शक्ति "।

री. (3) .

भूमि अधिग्रहण करने की शक्ति निहित थी

द.

भारत सरकार अधिनियम, 1935 द्वारा

सातवीं अनुसूची की सूची II में प्रविष्टि 9, विशेष रूप से प्रांतों में। किसी ऐसे मामले से संबंधित किसी भी उद्देश्य के लिए जिसके संबंध में केंद्रीय विधानमंडल कानून बनाने के लिए सक्षम था, केंद्रीय कार्यपालिका प्रांत से संघ की ओर से और उसके खर्च पर भूमि अधिग्रहण करने की अपेक्षा कर सकती थी। हालाँकि इसका मतलब यह नहीं था कि यह रेलवे, बंदरगाहों, लाइट हाउसों, नागरिकों के अधिकार को प्रभावित करने की शक्ति और 426 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल के संबंध में कानून बनाने के अधिकार के प्रयोग के लिए आकस्मिक था।

निगमों और भूमि में प्रांतों का उपयोग करने योग्य नहीं था। जैसा कि पहले से ही संविधानों के तहत भी देखा गया है जहां संप्रभुता का एक बड़ा टुकड़ा बना हुआ है।

प्रभावी रूप से (घटक एकता) में निहित है जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका की कानून बनाने की शक्ति

केंद्रीय या राष्ट्रीय विषयों में निहित विषयों में शामिल हैं:

राज्य की संपत्ति में अधिकारों को समाप्त करने के लिए कानून बनाने की शक्ति।

भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत केंद्र सरकार प्रांत से यह माँग कर सकती थी कि यदि यह निजी भूमि थी तो संघ की ओर से भूमि का अधिग्रहण करना और यदि यह राज्य की भूमि थी तो इसे संघ को हस्तांतरित करना। प्रांतीय सरकार ने स्पष्ट रूप से

निर्देश का पालन करने से इनकार करने का कोई विकल्प नहीं है। मुआवजे के निर्धारण के प्रावधान ने उस अधिकार की प्रकृति को प्रभावित नहीं किया जिसका केंद्रीय सरकार प्रयोग कर सकती थी।

व्यापक रूप से संघ और राज्यों के साथ संविधान के तहत सरकारी संरचना उस संबंध पर आधारित है जो भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत केंद्र सरकार और प्रांतों के बीच मौजूद था और इस संबंध में संविधान ने काफी हद तक पहले के संवैधानिक दस्तावेज से उधार लिया है। लेकिन यहां तक कि जब प्रांत उन्हें आवंटित क्षेत्रों के भीतर स्वायत्त होते हैं और केंद्र के बीच संपत्ति और परिसंपत्तियों का वितरण होता है

के भाग III के तहत सरकार और प्रांत

च. VII लगभग उन्हीं शब्दों में जो संबंधित कलाओं में पाए जाते हैं। 294 और 298, यह कॉन्सी नहीं था। केंद्र सरकार को ऐसी शक्ति सौंपने के लिए प्रांतों की स्वायत्तता का उल्लंघन किया। 127 भारत सरकार अधिनियम अधिनियमित:

" 127. संघ, यदि वह किसी प्रो में स्थित किसी भी भूमि का अधिग्रहण करना आवश्यक समझता है:

विन्स किसी ऐसे मामले से संबंधित किसी भी उद्देश्य के लिए जिसके संबंध में संघीय विधानमंडल 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 427

उसे कानून बनाने की शक्ति है, वह प्रांत से संघ की ओर से और उसके खर्च पर भूमि का अधिग्रहण करने की अपेक्षा करता है, या यदि भूमि प्रांत की है, तो उसे ऐसी शर्तों पर संघ को हस्तांतरित करने की आवश्यकता होती है, जिन पर सहमति हो, या समझौते की चूक में, जो भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा नियुक्त एक आरबी ट्रेटर द्वारा निर्धारित की जा सकती है।

और इस प्रकार एस के तहत एक प्रांत में निहित संपत्ति। 172

यदि किसी केंद्रीय उद्देश्य के लिए इसकी आवश्यकता हो तो इसे केंद्र सरकार को हस्तांतरित करने की आवश्यकता हो सकती है।

इसलिए यह स्पष्ट होगा कि केंद्र का अधिकार है कि वह प्रांत से अलग होने की मांग करे।

केंद्रीय फर के प्रभावी प्रदर्शन के लिए संपत्ति। सीशनों को प्रांतीय से विचलित करने वाला नहीं माना जाता था

स्वायत्तता।

हालाँकि जो प्रासंगिकता है वह एस की उपस्थिति है। 127 उस अधिनियम में जिसने अधिकार दिया

यदि भारत सरकार के प्रयोजनों के लिए इसकी आवश्यकता थी तो केंद्र सरकार प्रांतों से उनकी स्वामित्व वाली संपत्ति को अलग करने की मांग करेगी। हालाँकि यह सुझाव दिया गया था कि केंद्र सरकार द्वारा प्रांतीय संपत्ति का अनिवार्य अधिग्रहण था

वहाँ विशेष रूप से प्रावधान किया गया था और इस तरह के प्रावधान की अनुपस्थिति ने सभी अंतर पैदा कर दिए। लेकिन यह, हमारी राय में, केवल मामले के एक सतही दृष्टिकोण पर आगे बढ़ता है। भारत सरकार अधिनियम के तहत संपत्ति के अनिवार्य अधिग्रहण के संबंध में विधायी शक्ति के वितरण की योजना की बारीकी से जांच से पता चलता है कि हालाँकि यह अधिकार है। पूर्ण रूप से अर्जित संपत्ति विशेष रूप से प्रांतों में निहित थी, केंद्र सरकार प्रांतीय तंत्र का उपयोग करके केंद्रीय उद्देश्य के लिए संपत्ति की अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती थी, और यह उस संदर्भ में था कि एक विशिष्ट प्रावधान

केंद्र सरकार के निर्देश पर प्रांतीय संपत्ति का हस्तांतरण करने वाले प्रांत नहीं थे। डीड। इसलिए 428 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वी. ओ. एल. की सराहना करना मुश्किल है।

जिस पर शासन में एक प्रावधान का अस्तित्व है। भूमि के लिए मुआवजे के आकलन के लिए भारत अधिनियम, जिस पर प्रांत हस्तांतरण करने के लिए बाध्य थे

केंद्र सरकार द्वारा इस प्रकार की आवश्यकता होने पर और संविधान को लागू करने में उस प्रावधान को हटाने से केंद्रीय संसद में निहित शक्ति का प्रयोग प्रभावित हो सकता है।

री. (4) :

ऑस्ट्रेलियाई संविधान में पार द्वारा कानून को अधिकृत करने की एक व्यक्त शक्ति है। राज्य संपत्ति के अधिग्रहण के लिए ऑस्ट्रेलिया का दायित्व।

लेकिन संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के संविधानों में ऐसा कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं है। घटक राज्यों में निहित संपत्ति के अधिकार को प्रभावित करने वाले कानून को लागू करने की केंद्रीय संसद की शक्ति को इस कारण से बाहर नहीं रखा गया है। यदि पर्याप्त विस्तार के संदर्भ में हमारे संविधान के अन्य प्रावधान राज्य की संपत्ति प्राप्त करने के लिए कानून बनाने की शक्ति प्रदान करते हैं, तो उस शक्ति का प्रयोग करने के अधिकार को पराजित नहीं किया जा सकता है क्योंकि संपत्ति प्राप्त करने की व्यक्त शक्ति आम तौर पर विशेष रूप से और शब्दों में राज्य की संपत्ति को संदर्भित नहीं करती है।

री. (5) :

मूल रूप से अधिनियमित भारत के संविधान में संपत्ति के अधिग्रहण और अधिग्रहण से संबंधित तीन प्रविष्टियां प्रदान करके शक्तियों का एक विस्तृत विभाजन किया गया था। सूची I प्रविष्टि 33 "संघ के प्रयोजनों के लिए संपत्ति का अधिग्रहण या अधिग्रहण"। सूची II प्रविष्टि 36 "का अधिग्रहण या अधिग्रहण

संघ के उद्देश्य को छोड़कर, संपत्ति, सूची III की प्रविष्टि 42 के प्रावधानों के अधीन; सूची III

प्रविष्टि 42 "ऐसे सिद्धांत जिन पर संघ या किसी राज्य के प्रयोजन के लिए या किसी अन्य सार्वजनिक उद्देश्य के लिए अर्जित या अधिग्रहित संपत्ति के लिए क्षतिपूर्ति की जाती है। मुद्रा निर्धारित की जानी है, और वह रूप और व्यक्ति जिसमें ऐसा मुआवजा दिया जाना है। संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम, 1956 द्वारा 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 429

तीन प्रविष्टियों को निरस्त कर दिया गया और समवर्ती सूची "संपत्ति का अधिग्रहण और अधिग्रहण" में एक एकल प्रविष्टि 42 को प्रतिस्थापित किया गया। संपत्ति अर्जित करने या अधिग्रहण करने की शक्ति का प्रयोग संशोधन के बाद से संघ और राज्यों द्वारा समवर्ती रूप से किया जा सकता है। लेकिन इस कारण से सत्ता के परस्पर विरोधी प्रयोग की कल्पना नहीं की जा सकती है। अनुच्छेद 31 (2), जो सभी संपत्ति के अधिग्रहण से संबंधित है, के लिए दो शर्तों की आवश्यकता होती है।

जिन शर्तों को पूरा किया जाना है (1) अधिग्रहण या अधिग्रहण सार्वजनिक उद्देश्य के लिए होना चाहिए (2) जिस कानून के तहत संपत्ति का अधिग्रहण या अधिग्रहण किया जाता है, उसे या तो उसके द्वारा निर्धारित मुआवजे के भुगतान के लिए या उसके द्वारा निर्दिष्ट सिद्धांतों पर प्रावधान करना चाहिए। सीएल द्वारा। (3) कला की। 31 ऐसा कोई कानून नहीं है जिसका उल्लेख सी. एल. में किया गया है। (2) किसी राज्य के विधानमंडल द्वारा बनाई गई विधि तब तक प्रभावी होगी जब तक कि ऐसी विधि राष्ट्रपति के विचार के लिए आरक्षित नहीं की गई हो और उसे उसकी सहमति प्राप्त न हो गई हो। जैसा कि राष्ट्रपति केंद्रीय मंत्रालय की सलाह के साथ अपने अधिकार का प्रयोग करता है, संघ और राज्य द्वारा एक ही विषय वस्तु के संबंध में अधिग्रहण की शक्ति के प्रभावी प्रयोग से या संघ द्वारा विधान का पालन करने वाले राज्य द्वारा संघर्ष की परिकल्पना व्यवहार में इस रूप में नहीं की जा सकती है कि -

संभावना है। अनुच्छेद 254 इस तरह के परस्पर विरोधी कानून की संभावना को भी नकारता है। सीएल द्वारा। (1) उस अनुच्छेद का, यदि किसी राज्य के विधानमंडल द्वारा बनाई गई कोई विधि है -

संसद द्वारा सक्षम रूप से बनाए गए कानून के किसी भी प्रावधान के प्रतिकूल। राज्य का कानून सी. एल. के अधीन है। (2) , खण्ड (2) की सीमित वैधता को मान्यता देता है

समवर्ती सूची के मामलों पर एक राज्य कानून यदि वह

कानून संसद द्वारा बनाए गए किसी मौजूदा या पहले के कानून के प्रतिकूल है, केवल तभी जब ऐसा कानून आरक्षित किया गया हो।

राष्ट्रपति का विचार, और प्राप्त किया है

उसकी सहमति। परंतु क द्वारा प्राधिकरण आरक्षित है

संसद इस सीमा की वैधता वाले कानून को निरस्त करने के लिए। राज्य के कानून को राष्ट्रपति की मंजूरी

पार्लिया द्वारा अधिनियमित कानून को रद्द करने का इरादा
अधिग्रहण के लिए प्रस्ताव

राज्य की संपत्ति के

उद्देश्य

संघ का व्यावहारिक दायरे से बाहर है
संभावना है।

430 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964]। वीओएल।

री. (6) :

1962

वेस्ट का खाना

उस कला को प्रस्तुत करना। 31 कोई अनुप्रयोग नहीं है

बंगाल।

सम्पत्ति के अधिग्रहण या अधिग्रहण की स्थिति

भारत का आयन

किसी राज्य का गठन किसी ठोस आधार पर नहीं होता है। यह

इन्हा, सी. जे.

तर्क तीन आधारों पर आधारित था:

(क) भारत के राज्य क्षेत्र के भीतर या भारत सरकार के नियंत्रण में सभी स्थानीय या अन्य प्राधिकरणों की विधायी या कार्यकारी कार्रवाई के खिलाफ नागरिकों और अन्य लोगों के पक्ष में मौलिक अधिकार घोषित किए जाते हैं, न कि संघ के खिलाफ राज्यों के पक्ष में।

(ख) अनुच्छेद 31 व्यक्तियों के अधिकारों को संरक्षण प्रदान करता है, और एक राज्य इसके अंतर्गत आने वाला व्यक्ति नहीं है।

उस लेख का अर्थ।

(ग) समवर्ती सूची में प्रविष्टि 42 गुण से है। कला की। 13 और 245 कला के अधीन। 31 . इसलिए निजी। संपत्ति का अधिग्रहण संविधान में प्रतिबंधों के अनुरूप किया जा सकता है, लेकिन राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण सार्वजनिक उद्देश्य के बिना किया जा सकता है। और मुआवजे के भुगतान के बिना।

इस दृष्टिकोण से सहमत होना मुश्किल है कि

संविधान की योजना मौलिक अधिकार हो सकते हैं

केवल व्यक्तियों या निगमों द्वारा दावा किया जाए और राज्य द्वारा कभी नहीं

कला द्वारा। 13 (1) इससे पहले लागू सभी कानून

असंगतता की सीमा तक संविधान

च. III को शून्य घोषित किया गया है: और सी. एल. (2) राज्य

कोई भी कानून बनाने से प्रतिबंधित है जो लेता है

मौलिक अधिकारों और कानूनों का हनन या हनन

निषेध के उल्लंघन में किए गए कार्य अमान्य हैं।

:

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 431
अधिकार मुख्य रूप से आश्रितों के लिए हैं।

मौलिक

व्यक्तियों और निगमों के अधिकारों को लागू करना

एक के कार्यकारी या विधायी कार्यवाई के खिलाफ सक्षम

सरकारी एजेंसी, लेकिन इसे याद रखना होगा

कि सभी पूर्व-विद्यमान कानून जो इसके साथ असंगत हैं

और संवैधानिक कानूनों के बाद जो उल्लंघन करते हैं

निषेध विसंगति की सीमा तक हैं

या उल्लंघन शून्य है। इनमें से कुछ अधिकार हैं - सकारात्मक रूप में घोषित
लेकिन प्रतिबंध के अधीन

राज्य को अपमानजनक कानून बनाने के लिए अधिकृत करने वाले राज्य

सुरक्षा की पूर्णता से ई। जी। 15 (4) ,

16 (3) , 16 (4) , 16 (5) , 19 (2) , (3) , (4) , (5) , (6) , 22
(3) , 22 (6) , 23 (2) , 25 (2) , 28 (2) & (3) : वहाँ

कुछ ऐसे अनुच्छेद हैं जो केवल अधिकार घोषित करते हैं। जी। 17 , 25 (1) ,
26 , 29 (1) और 30, (1): और वहाँ हैं

अन्य केवल संदर्भ के बिना निषेधात्मक किसी भी व्यक्ति का अधिकार। उन्हें लागू
करने के लिए निकाय या एजेंसी

उदाहरण के लिए 18 (1), 23 (1), 24 और 28 (1)।

प्रथम दृष्टया, इन घोषणाओं में एक शामिल है

न केवल "राज्य" पर अधिरोपित दायित्व, बल्कि

इस प्रकार घोषित अधिकारों का सम्मान करने के लिए सभी व्यक्तियों पर, और
अधिकार लागू करने योग्य हैं जब तक कि संदर्भ इंगित न करे

अन्यथा प्रत्येक व्यक्ति या एजेंसी के खिलाफ

उनका उल्लंघन करें। के रूप में घोषित अधिकार

निषेध में एक संगत सकारात्मक होना चाहिए

सामग्री; इस तरह की सकारात्मक सामग्री के बिना वे हो सकते हैं

व्यर्थ है। उच्च से राहत का दावा किया जा सकता है न्यायालय या इस न्यायालय से, के
उल्लंघन के विरुद्ध

निषेध, किसी भी एजेंसी द्वारा, जब तक कि संरक्षण स्पष्ट रूप से राज्य की कार्यवाही तक ही
सीमित न हो।

अभी भी अन्य लेख इस रूप में नहीं हैं

अधिकार लेकिन मौलिक अक्षमताएँ। जी। 18 (2) , 18 (3) , 18 (4) . फिर से कुछ लेख हैं जैसे।

19 (जी)। भाग II, 24 (2) जो राज्यों के सकारात्मक अधिकारों को मान्यता देता प्रतीत होता है। अनुच्छेद 31 इस प्रकार है

नकारात्मक रूप में निहित, लेकिन प्रत्येक संप्रभु राज्य में निहित कम से कम एक महत्वपूर्ण शक्ति के अस्तित्व को मान्यता देता है, न कि उसके संविधान के आधार पर, बल्कि 432 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1946] वीओएल।

सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए संपत्ति अर्जित करने की शक्ति
जो अमेरिकी

मुआवजे का भुगतान

न्यायविद 'प्रतिष्ठित क्षेत्र' कहते हैं। अनुच्छेद 31 (2) में उस प्रतिबंध का उल्लेख किया गया है जिसके अधीन प्रमुख क्षेत्र की इस शक्ति का प्रयोग किया जाना है। उद्देश्यों के लिए

वर्तमान मामले में यह विचार करना अनावश्यक है कि क्या कला। 31 (1) पुलिस शक्ति के अस्तित्व को मान्यता देता है। कला से पहले। 31 संविधान (चौथा संशोधन अधिनियम, 1955) द्वारा संशोधित किया गया था, इस न्यायालय में सी. एल. के अंतर संबंध के बारे में राय का टकराव था। (1) और (2)। कुछ न्यायाधीशों ने यह अभिनिर्धारित किया कि कल. (1) & (2) प्रतिष्ठित क्षेत्र के विषय से निपटना: अन्य न्यायाधीशों की राय थी कि कला। 31 (1) पुलिस की शक्ति और कला से निपटा। 31 (2) प्रतिष्ठित क्षेत्र के साथ; कुछ न्यायाधीशों ने कुछ भी व्यक्त नहीं किया

निश्चित दृष्टिकोण। संविधान (चौथा संशोधन) अधिनियम, 1955 द्वारा संशोधन के बाद, सी. एल. (1) , (2) और (2 ए) कला का। 31 इस प्रकार पढ़िए:

(1) किसी भी व्यक्ति को उसकी संपत्ति से वंचित नहीं किया जाएगा।

कानून के अधिकार से बचाएँ।

(2) सार्वजनिक उद्देश्य के अलावा किसी भी संपत्ति का अनिवार्य रूप से अधिग्रहण या अधिग्रहण नहीं किया जाएगा, सिवाय उस कानून के प्राधिकरण के जो इस तरह से अर्जित या अधिग्रहित संपत्ति के लिए मुआवजे का प्रावधान करता है और या तो मुआवजे की राशि तय करता है।

उन सिद्धांतों को निर्दिष्ट करता है जिन पर और जिस तरीके से क्षतिपूर्ति निर्धारित की जानी है और दी जानी है; और ऐसी किसी भी कानून पर किसी भी मामले में सवाल नहीं उठाया जाएगा।

न्यायालय एहि आधार पर कि ओहि कानून द्वारा प्रदत्त कम्पेन सेशन अनुचित नहि अछि।

कुछ नहीं।

(2 ए) जहां एक कानून के लिए प्रावधान नहीं करता है

राज्य को किसी भी संपत्ति के स्वामित्व या कब्जे के अधिकार का हस्तांतरण 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 433

या राज्य के स्वामित्व या नियंत्रण वाले निगम के लिए, यह अनिवार्य अधिग्रहण या मांग के लिए प्रावधान नहीं माना जाएगा। संपत्ति का राजकरण, इसके बावजूद कि यह किसी भी व्यक्ति को उसकी संपत्ति से वंचित करता है।

कवलाप्पारू कोट्टाराथिल कोचुनी बनाम। राज्य

या माँग। खंड अनिवार्य अधिग्रहण या संपत्ति की मांग के खिलाफ व्यापक आयाम के संदर्भ में सुरक्षा प्रदान करता है, और अनुच्छेद में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इंगित करता है कि संपत्ति संरक्षित है। यह व्यक्तियों या निगमों का होना है। यहां तक कि अभिव्यक्ति 'व्यक्ति' जिसका उपयोग सी. एल. में किया जाता है। (1) नहीं है।

सीएलएस में उपयोग किया जाता है। (2) और (2 ए), और संदर्भ इस व्याख्या की गारंटी नहीं देता है कि संरक्षण नहीं है। राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण के विरुद्ध उपलब्ध होना। किसी भी अन्य निर्माण का अर्थ यह होगा कि नगर पालिकाओं या अन्य स्थानीय प्राधिकरणों की संपत्तियां-जो निश्चित रूप से भाग III में राज्य की परिभाषा के भीतर आती हैं, या तो बिल्कुल भी अधिग्रहित नहीं की जा सकती हैं या यदि अधिग्रहित की जाती हैं, तो कंपनी के भुगतान के बिना ली जा सकती हैं।

सेशन। सूची III और सी. एल. में प्रविष्टि 42। (2) कला की। 31 , कानून के एक ही क्षेत्र में कार्य करना: पहला विधायी शक्ति की सामग्री का प्रतिपादन करता है, और दूसरा उस शक्ति

के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाता है। यह पता लगाने के लिए कि क्या प्रो पर्टी के अधिग्रहण या अधिग्रहण के संबंध में कोई विवादित कानून विधायी क्षमता के भीतर है, दोनों प्रावधानों को एक साथ पढ़ा जाना चाहिए। अधिकार के प्रयोग से संबंधित एकल विधायी स्वरूप के भाग होने के कारण, जिसे सुविधा के लिए प्रतिष्ठित क्षेत्र कहा जा सकता है, दोनों प्रावधानों में 'संपत्ति' का अधिकार की सीमा को परिभाषित करने और उस पर प्रतिबंधों को निरूपित करने में समान महत्व होना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो

कला. 31 (2) के अभ्यास पर प्रतिबंध लगाता है

(1) [1960] 3 एससीआर 887।

434 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

सूची III की प्रविष्टि 42 के तहत विधायी शक्ति। इसलिए राज्य में निहित संपत्ति का अधिग्रहण नहीं किया जा सकता है।

1962

वेस्ट का खाना

विधायी के प्रयोग में अधिनियमित एक कानून के तहत

बंगाल

1 .

प्रविष्टि के तहत शक्ति। 42 जब तक कानून अनुपालन नहीं करता है

आयोन ऑफ इंडिया

संबंधित खंडों की आवश्यकता के साथ

फिन्हा, सी. जे.

कला. 31 .

रे. (7) :

राशन और वितरण निदेशक v. कलकत्ता निगम (1), यह इस द्वारा आयोजित किया गया था

बहुमत से न्यायालय:

" संविधान से पहले भारत में लागू कानून एल. आर. 73 आई. ए. 271 में प्रिवी काउंसिल द्वारा अधिकृत रूप से निर्धारित किया गया था। संविधान ने कानूनी स्थिति में कोई बदलाव नहीं किया है। दूसरी ओर इसने स्पष्ट रूप से संकेत दिया है कि 26 जनवरी, 1950 से पहले लागू कानूनों को नए ढांचे में भी वैध माना जाएगा, सिवाय इसके कि वे संविधान के स्पष्ट प्रावधानों के साथ संघर्ष कर रहे थे। विधियों की व्याख्या का नियम कि राज्य किसी कानून द्वारा बाध्य नहीं है जब तक कि यह स्पष्ट शब्दों में प्रदान नहीं किया गया है: या आवश्यक निहितार्थ से, अभी भी अच्छा कानून है।

यह पी में देखा गया था। 172 :

" ओपेरा से सरकार की प्रतिरक्षा: कुछ कानूनों और विशेष रूप से अपराधों को पैदा करने वाले कानूनों का गठन इस बुनियादी मानसिक अवधारणा पर आधारित है कि सरकार या उसके अधिकारी किसी अपराध को करने के लिए पक्षकार नहीं हो सकते हैं-जो कि 'पूर्णता' के विशेषाधिकार के अनुरूप है कि राजा कोई गलत काम नहीं कर सकता है। इस नियम का ऐतिहासिक कारण चाहे जो भी रहा हो, इसे हमारे देश में सार्वजनिक नीति के आधार पर कानूनों के अंतर-नाटक के नियम के रूप में अपनाया गया है। कि यह नियम नहीं है

(1) [1961] आई. एस. सी. आर. 158

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 435

विशिष्ट या सरकार के राजतन्त्रीय रूप तक सीमित।

न्यायालय ने इस प्रकार उदाहरण के सिद्धांत को मंजूरी दी

बॉम्बे प्रांत में न्यायिक समिति द्वारा प्रतिपादित एक कानून के सामान्य शब्दों से संप्रभु की घोषणा। बॉम्बे नगर निगम (1), निम्नलिखित शब्दों में:

" कोन में लागू होने वाला सामान्य सिद्धांत

क्राउन एक कानून में सामान्य शब्दों से बंधा है या नहीं, इस पर कोई संदेह नहीं है। प्रारंभिक समय में कानून की उक्ति यह थी कि कोई भी कानून क्राउन को तब तक बाध्य नहीं करता जब तक कि ताज को स्पष्ट रूप से उसमें नामित नहीं किया जाता था, "रॉय नेस्ट लाइ पार असकुन कानून सी ने सोइट एक्सप्रेशन नोस्मे"। " " लेकिन इस तरह से निर्धारित नियम कम से कम के अधीन है

एक अपवाद। मुकुट बंधा हो सकता है, जैसे

अक्सर कहा जाता है, "आवश्यक निहितार्थ द्वारा"। यदि, कहने का अर्थ है, यह कानून की शर्तों से ही स्पष्ट है कि यह विधानमंडल का इरादा था कि क्राउन को बाध्य किया जाना चाहिए, तो परिणाम वैसा ही है जैसे क्राउन को स्पष्ट रूप से नामित किया गया था। इसके बाद यह अनुमान लगाया जाना चाहिए कि क्राउन ने कानून को मंजूरी देकर सहमति व्यक्त की

इसके प्रावधानों से बंधे रहना।

कानून व्याख्या का एक है। विचार करते हुए द्वारा उपयोग किए गए शब्दों या अभिव्यक्ति का सही अर्थ

विधायिका न्यायालय को उद्देश्य को ध्यान में रखना चाहिए,

कानून के उद्देश्य और दायरे को इसके संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिए।

संपूर्ण। अदालत को इरादे का पता लगाना चाहिए

व्याख्या की जाती है। एक बार फिर व्याख्या करते हुए कानूनी अधिकार प्रदान करने वाले संवैधानिक दस्तावेज प्रावधान

लैटिव पावर की व्याख्या आम तौर पर उदारता से की जानी चाहिए।

(1) (1946) एल. आर. 73 आई. ए. 271,274

436 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

और उनके सबसे व्यापक आयाम में। वीडियो-नवीनचंद्र

मफतलाल बनाम। आय-कर आयुक्त, बॉम्बे सिटी (1), सूची III में प्रविष्टि 42, प्रथम नहीं है।

फ्यूसी में, कोई भी संकेत है कि उसमें अभिव्यक्ति "संपत्ति" को किसी भी प्रतिबंधित में समझा जाना है।

अर्थ: न ही संविधान के अन्य प्रावधान

पहले से बताए गए कारणों से एक सीमित अर्थ का सुझाव मिलता है।

राज्यों की पूर्ण संप्रभुता का आधार
जिसमें संपत्ति लेने से हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता है
संसदीय विधान द्वारा राज्यों में निहित है
कोई कानूनी आधार नहीं। संघ को फिर से सत्ता से वंचित करना
संसद विधि के आवंटित विषयों पर कानून बनाएगी।
में निहित संपत्ति को प्रभावित करने वाले तरीके से
राज्य, वस्तुतः संसदीय विधान बना सकता है

संविधान

'संपत्ति' शब्द के सीमित अर्थ का सुझाव देना विधायी शक्ति के संदर्भ में लाया गया है
आप ध्यान दें। व्यापक रूप से ध्यान दिया जा रहा है
केंद्रीय संसद और कार्यपालिका की शक्तियाँ
राज्य की संपत्ति का उपयोग करने के लिए, बड़े पैमाने पर सार्वजनिक
ब्याज, प्रतिबंध ने सुझाव दिया कि शक्ति करता है
राज्यों की संपत्ति के अधिग्रहण तक विस्तार नहीं
ऐसा लगता है कि इस पर विचार नहीं किया गया है। बनाने से सूची I की प्रविष्टियाँ
51 के तहत अपेक्षित घोषणाएँ
केंद्रीय संसद ने खदानों को विनियमित करने की शक्ति ग्रहण की
संघ के नियंत्रण में, काम करने का अधिकार खदानें। यह शायद ही कल्पना की जा
सकती है कि कॉन्स्टी
ट्यूशन निर्माता एक विशेष प्रदान करने का इरादा रखते हुए नियंत्रण में खदानों और
खनिजों को काम करने की शक्ति
इसे अनिवार्य रूप से असंभव बनाकर शक्ति राज्यों में निहित भूमि का अधिग्रहण
खनिज। शक्ति का प्रभावी प्रयोग होगा

निर्भर करता है-यदि ऐसा तर्क स्वीकार किया जाता है-पर नहीं विनियमन करने की शक्ति का प्रयोग और

प्रविष्टि 54 के तहत एक अधिसूचना जारी करके नियंत्रण, लेकिन

राज्य की इच्छा पर जिसके क्षेत्र में

खनिज भूमि स्थित है। कानून बनाने की शक्ति

मिनक और खनिजों के विनियमन और विकास के लिए

(i) [1955] 1 एस. सी. आर. 829।

1 एस. सी. आर. * सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 437

संघ के नियंत्रण में, आवश्यक रूप से

निहितार्थ में खानों और खनिजों को प्राप्त करने की शक्ति शामिल है। अधिग्रहण के लिए कानून बनाएगी पी. सी. डब्ल्यू. आर.

में से

इसलिए राज्यों में निहित संपत्ति को संसद को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है यदि इसका उपयोग सहमति से किया जाता है।

कला द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा के साथ। 31 .

तदनुसार निम्नलिखित निष्कर्ष होंगे:

मुद्दों पर लिखा गया:

सकारात्मक में।

मुद्दा I.

2

ऐसा नहीं है कि शीर्षक को अस्वीकार कर दिया जाए

केंद्रीय संसद अभ्यास करेगी

इसके तहत विधायी शक्ति

प्रविष्टि 42 सूची III।

3

उत्तर द्वारा कवर किया गया उत्तर

मुद्दा 2.

नकारात्मक में।

4

.....

नकारात्मक में:

.....

5

अतिरिक्त पर खोजें

पुष्टि में।

मुद्दा

इसलिए मुकदमा खारिज हो जाएगा

लागतें।

सुब्बा राव, जे। -- मुझे सहमत होने में असमर्थता का खेद है।

अभिवचनों का सारांश और उन पर उठाए गए मुद्दे विद्वान मुख्य न्यायाधीश के फैसले में दिए गए हैं और मुझे उन्हें फिर से बताने की आवश्यकता नहीं है।

विद्वान महाधिवक्ता-पश्चिम बंगाल के

उन्होंने तर्क दिया कि पश्चिम बंगाल राज्य और भारत संघ संविधान द्वारा उन्हें आवंटित अपने-अपने क्षेत्रों में संप्रभु प्राधिकरण हैं, और इसलिए यह अकल्पनीय होगा कि एक संप्रभु प्राधिकरण दूसरे की संपत्ति का अधिग्रहण कर सकता है: वे ऐसा केवल आपसी सहमति से ही कर सकते थे।

438 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

इसके अलावा, तर्क प्रासंगिक प्रविष्टि के सही निर्माण पर आगे बढ़ा, अर्थात्। सी।, संविधान की योजना और विशेष रूप से कला के संदर्भ में सूची III की धारा 42। 31 अतः, यह स्पष्ट होगा कि उक्त प्रविष्टि को संघ द्वारा राज्य की भूमि का अधिग्रहण करने के लिए लागू नहीं किया जा सकता था। मध्य प्रदेश, उड़ीसा, असम और मद्रास राज्यों की ओर से पेश हुए विद्वान वकील ने पश्चिम बंगाल के महाधिवक्ता का उल्लेख किया। पंजाब के महाधिवक्ता ने पश्चिम बंगाल के महाधिवक्ता के तर्क का समर्थन करते हुए एक वैकल्पिक तर्क भी उठाया, अर्थात्, यदि राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण अनिवार्य रूप से संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची I और III के तहत संसद को प्रदत्त किसी भी शक्ति के प्रभावी प्रयोग के लिए आकस्मिक था, तो वह ऐसी संपत्ति के अधिग्रहण के लिए एक कानून बना सकता है, बशर्ते वह राज्य के सरकारी मानसिक कार्यों के प्रयोग में हस्तक्षेप न करे; और यह कि राज्य की भूमि अधिग्रहण करने की शक्ति आवश्यक रूप से खानों के विनियमन के लिए प्रारंभिक नहीं थी। बिहार राज्य के विद्वान सरकारी वकील ने भारत संघ के इस तर्क का समर्थन किया कि संसद सूची III की प्रविष्टि 42 के आधार पर राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण के लिए एक कानून बना सकती है।

भारत संघ की ओर से उपस्थित विद्वान महान्यायवादी ने तर्क दिया कि सूची III की प्रविष्टि 42 पर

इसकी प्राकृतिक और व्याकरणिक संरचना, विवादित कानून को बनाए रखती है; वह 1 की प्रविष्टियों 52 और 51 के आधार पर भी इसका समर्थन करेगा।

33 सूची III। उन्होंने तर्क दिया कि किसी भी स्थिति में, विवादित कानून संसद द्वारा बनाया जा सकता है कला के गुण। 148 संविधान और सूची I की प्रविष्टि 97. उन्होंने इस प्रस्ताव की शुद्धता पर भी सवाल उठाया कि संघ और राज्य हैं

अपने-अपने क्षेत्रों में संप्रभु प्राधिकारी और
संविधान के तहत राज्य संघ के अधीनस्थ हैं।

इस सिद्धांत को आगे बढ़ाया कि हमारे

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 439

इससे पहले कि मैं संविधान के प्रासंगिक प्रावधानों का अर्थ लगाने का प्रयास करूं, यह सुविधाजनक होगा -

जहां तक वर्तमान जांच के लिए सामग्री है, संविधान का एक पहलू है, क्योंकि तर्क, कुछ हद तक, संघ और उसके तहत राज्यों की शक्तियों के दायरे और प्रकृति से जुड़े हुए हैं।

संविधान का उद्देश्य भारत के लोगों द्वारा अधिनियमित किया गया है जिन्होंने भारत को एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में गठित करने का गंभीरता से संकल्प लिया है। भारत को राज्यों के संघ के रूप में वर्णित किया गया है। संविधान की प्रस्तावना यह इंगित करती है कि देश की राजनीतिक संप्रभुता भारत के लोगों में निहित है और कानूनी संप्रभुता भारत गणराज्य की संवैधानिक संस्थाओं के बीच विभाजित है।

अर्थात्, संघ और विभिन्न राज्य। संविधान का भाग 5 संघ और उन साधनों से संबंधित है जिनके माध्यम से यह कार्य करने के लिए अधिकृत है, अर्थात् विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। भाग VI राज्यों और अंगों के लिए प्रावधान करता है जिनके माध्यम से वे कार्य कर सकते हैं, अर्थात् विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। भाग 11 संघ और राज्यों के बीच संबंधों को रेखांकित करता है: यह विधायी शक्तियों का वितरण करता है

और उनके बीच प्रशासनिक संबंधों को नियंत्रित करता है; यह उन संघर्षों को हल करने के लिए विभिन्न तरीके तैयार करता है जो उनकी शक्तियों के प्रयोग में उत्पन्न हो सकते हैं। अनुच्छेद 246 विधायी क्षेत्रों को सटीकता के साथ सीमांकित करता है। और सातवीं अनुसूची में सूचियों में उल्लिखित और संघ या राज्यों को आवंटित मामलों के संबंध में कानून बनाने के लिए संघ और राज्यों की अनन्य शक्ति पर जोर देता है, जैसा भी मामला हो। यहां तक कि कार्यकारी शक्ति, कला के संबंध में भी। 73

और 162 संघ और राज्यों के संबंधित क्षेत्रों को चिह्नित करते हैं। भाग 11 के अध्याय 2 में कुछ निर्दिष्ट मामलों में राज्यों पर संघ के नियंत्रण का प्रावधान है। भाग बारहवाँ वित्त, प्रतिभूति, अनुबंधों, अधिकारों, देनदारियों, दायित्वों और मुकदमों से संबंधित है; यह संघ और राज्यों के बीच राजस्व का वितरण करता है, संघ द्वारा एकत्र किए गए कुछ करों के उनके बीच आवंटन का प्रावधान करता है, 440 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल बनाता है।

कन्सोली के रूप में वर्णित अलग समेकित निधियाँ

भारत की दिनांकित निधि और राज्य की समेकित निधि, और अन्य बातों के अलावा, राज्य की संपत्तियों को केंद्रीय कराधान और संघ से कुछ छूट देता है।

राज्य कराधान से संपत्ति और संघ के साथ-साथ राज्यों को धन उधार लेने के लिए अधिकृत करता है

निश्चित सीमाओं के अधीन उनकी संबंधित संपत्तियों की सुरक्षा। भाग XII का अध्याय III किससे संबंधित है

कला के तहत कुछ मामलों में संपत्ति, परिसंपत्तियों, अधिकारों, देनदारियों और दायित्वों का अधिग्रहण। 294 ,

" इस संविधान की शुरुआत से

टचूशन

(क) ऐसी सभी संपत्ति और परिसंपत्तियाँ जो इस तरह के प्रारंभ से तुरंत पहले भारत अधिराज्य की सरकार के प्रयोजनों के लिए महामहिम में निहित थीं और सभी संपत्ति और परिसंपत्तियाँ जो तुरंत

इस तरह के प्रारंभ से पहले प्रत्येक राज्यपाल के प्रांत के शासन के प्रयोजनों के लिए महामहिम में निहित किया गया था, जो क्रमशः संघ और प्रतिउत्तर देने वाले राज्य में निहित होगा, और

((ख) भारत अधिराज्य की सरकार और प्रत्येक राज्यपाल के प्रांत की सरकार के सभी अधिकार, देनदारियाँ और दायित्व, चाहे वे किसी संविधि से उत्पन्न हों या अन्यथा, भारत सरकार और प्रत्येक राज्य की सरकार के क्रमशः अधिकार, देनदारियाँ और दायित्व होंगे।

संबंधित स्टेटक,।

कला के तहत। 296 , के माध्यम से उपार्जित कोई संपत्ति

यदि यह संपत्ति है तो चोरी या चूक, या वास्तविक रिक्तता के रूप में

किसी राज्य में स्थित, राज्य में निहित होगा और किसी भी

अन्य मामले में यह संघ में निहित होगा। अनुच्छेद 297
अन्य मूल्यवान चीजें निहित हैं।

सभी भूमि, खनिज और

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 441 के क्षेत्रीय जल के भीतर समुद्र के अंतर्गत

संघ में भारत। अनुच्छेद 298, जिसे संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम, 1956 द्वारा उपशीर्षक दिया गया था, संघ और प्रत्येक राज्य की कार्यकारी शक्ति को किसी भी व्यापार या व्यवसाय को चलाने और अधिग्रहण, धारण और निपटान तक विस्तारित करता है। यथास्थिति, संघ या राज्य की विधायी शक्तियों के अधीन रहते हुए किसी भी प्रयोजन के लिए संपत्ति और अनुबंध बनाना। अनुच्छेद 300 कहता है कि भारत सरकार और सरकार

या मुकदमा किया जाए

किसी राज्य का सदस्य भारत संघ के नाम पर या राज्य के नाम पर, जैसा भी मामला हो, मुकदमा कर सकता है, यानी उन पर न्यायिक व्यक्तित्व के रूप में मुकदमा चलाया जा सकता है। भाग XIV के अध्याय I में संघ और राज्यों में विभिन्न सेवाओं की सेवा की शर्तों की भर्ती और विनियमन के तरीके का प्रावधान है। भाग XV में संसद और राज्य विधानमंडलों के चुनावों के लिए एक स्वतंत्र तंत्र का प्रावधान है। भाग XVIII आपातकालीन प्रावधानों से संबंधित है जिसके तहत राष्ट्रपति, जब

भारत या उसके क्षेत्र के किसी भी हिस्से की सुरक्षा को युद्ध, बाहरी आक्रामकता या आंतरिक गड़बड़ी से खतरा है या जब राज्यों की संवैधानिक मशीनरी विफल हो जाती है या जब भारत या उसके किसी हिस्से की वित्तीय स्थिरता या साख को खतरा होता है, तो घोषणा द्वारा उस प्रभाव के लिए आपातकाल घोषित किया जा सकता है; उन घटनाओं में, कुछ सुरक्षा उपायों के अधीन, केंद्र प्रशासन को संभालने के लिए अधिकृत है।

एक निर्दिष्ट अवधि के लिए संपूर्ण या आंशिक रूप से राज्य का।

अनुच्छेद 368 अनुच्छेद के संशोधन का प्रावधान करता है; और उसके कुछ प्रावधानों के संबंध में, जैसे कि सातवीं अनुसूची की सूचियों, संसद में राज्यों के प्रतिनिधि को पहले भेजने के संबंध में, संशोधन को उन विधानमंडलों द्वारा पारित उस आशय के प्रस्ताव द्वारा कम से कम आधे राज्यों के विधानमंडलों द्वारा अनुमोदित करने की भी आवश्यकता होगी।

हमारे संविधान की योजना के तहत, अब तक

संघ और राज्यों के बीच उन्हें आवंटित क्षेत्रों के भीतर संप्रभु शक्तियों का बंटवारा किया जाता है। संघ अपने क्षेत्र 442 के भीतर संप्रभु शक्तियों का प्रयोग करता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

भारत के सभी क्षेत्रों और राज्यों में

1962 .

अपनी संप्रभु शक्तियों को अपने-अपने दायरे में रखें

वेस्ट का खाना

उनके आवंटित क्षेत्रों के संबंध में राज्यक्षेत्र। द.

बंगाल

वी.

राज्यों के विधानमंडलों के साथ-साथ संसद

भारत का आयन

वयस्क मताधिकार पर चुने जाते हैं। विधायी क्षेत्र

· बी. ए. राव, जे.

संघ का कानून राज्यों की तुलना में बहुत व्यापक है और उन्हें आवंटित सामान्य क्षेत्र में संघर्ष के मामले में, संघ का कानून आम तौर पर राज्य के कानून पर हावी होता है। किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा पारित विधेयकों के संबंध में, राज्यपाल और उच्च न्यायालय की शक्तियों का अवमूल्यन करने वाले विधेयकों के मामले में, उन्हें राष्ट्रपति के विचार के लिए आरक्षित रख सकता है: यद्यपि यह सिद्धांत रूप में राज्य की विधायी शक्ति पर एक सीमा है, व्यवहार में राज्यपाल केवल उस मंत्रालय की सलाह पर कार्य करता है जिसके पास विश्वास है

विधानमंडल से। बिल के मामले को छोड़कर उच्च न्यायालय की शक्तियों का अनादर करते हुए जब राज्यपाल इसे राष्ट्रपति को भेजने के लिए बाध्य होता है, तो अन्य मामलों में यह संभावना नहीं है कि राज्यपाल मंत्रालय की सलाह के विपरीत राष्ट्रपति को एक विधेयक भेजेगा। कानून के कुछ मामलों में जहाँ

अंतर-राज्य तत्व या कानूनों का टकराव शामिल है, राष्ट्रपति की मंजूरी को उनकी वैधता के लिए एक शर्त बनाया जाता है: कलाएँ देखें। 200 , 254 , 304 आदि।

कार्यकारी क्षेत्र की बात करें तो केंद्र और राज्य दोनों के अधिकारियों का संचालन मंत्रियों द्वारा किया जाता है।

वयस्क मताधिकार पर चुने गए अपने संबंधित विधानमंडलों के प्रति उत्तरदायी। संघ के साथ-साथ राज्यों की कार्यकारी शक्तियां उन मामलों तक फैली हुई हैं जिनके संबंध में उनके पास है: कानून बनाने की शक्ति, हालांकि संघ की कार्यपालिका किसी राज्य को संसद द्वारा बनाए गए कानूनों और उस राज्य में लागू होने वाले किसी भी मौजूदा कानून का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए निर्देश दे सकती है। राज्य को इसका प्रयोग करने का भी आदेश दिया गया है

इस तरह से शक्तियां जो संघ की कार्यपालिका की शक्ति के प्रयोग में बाधा या प्रतिबंध न डालें; और

संघ की कार्यपालिका को देने का अधिकार है

राज्य को निर्देश जो उस उद्देश्य के लिए आवश्यक हो, इसलिए भी संघ की कार्यपालिका दे सकती है।

1 एस. सी. आर. सुप्रीम कोर्ट रिपोर्ट 443

राष्ट्रीय महत्व के घोषित संचार के साधनों के निर्माण और मुख्य किरायेदारी के बारे में किसी राज्य को निर्देश। यह भी अधिकृत है कि

राज्यों को उन मामलों के संबंध में शक्तियाँ प्रदान करता है जिन पर संघ की कार्यकारी शक्ति का विस्तार होता है। मोटे तौर पर, मामूली अपवादों के साथ, संघ के साथ-साथ राज्य कार्यकारी अपने विशेष क्षेत्र में कार्य करते हैं, और संघ कार्यकारी के निर्देशों का उद्देश्य संघ के उद्देश्यों को पूरा करने में सुविधा प्रदान करना है।

प्रत्येक राज्य की अपनी न्यायपालिका होती है और किसी भी राज्य का सर्वोच्च न्यायालय उच्च न्यायालय होता है।

राज्य न्यायपालिका का खर्च संबंधित राज्य की समेकित निधि पर लगाया जाता है, लेकिन उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति राज्य द्वारा की जाती है।

राष्ट्रपति; और कुछ मामलों में अपील भारत के सर्वोच्च न्यायालय में होती है और इसके पास अन्य मामलों में अपील करने या मौलिक अधिकारों को लागू करने के लिए रिट जारी करने की असाधारण शक्तियां भी होती हैं। लेकिन उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय दोनों राज्य और संघ के कानूनों की व्याख्या करते हैं और यदि कोई विवाद हो तो उसे हल करते हैं। न्यायपालिका

की एक एकीकृत प्रणाली को संविधान द्वारा स्वीकार किया गया है और न्यायिक नियंत्रण दोनों तरीकों से संचालित होता है, हालांकि अंतिम शब्द के साथ है

सुप्रीम कोर्ट। यह अपने आप में संघीय सिद्धांत को प्रभावित नहीं कर सकता है, क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में भी कुछ परिस्थितियों में, ऑस्ट्रेलिया के सामान्य धन के उच्च न्यायालय के फैसलों के खिलाफ प्रिवी काउंसिल में अपील की जाती है।

वित्तीय मामलों में, हालांकि राज्यों और संघ के पास अपनी खुद की समेकित निधि है,

राज्यों को आबंटित स्रोत तुलनात्मक रूप से कम हैं और संघ को आबंटित स्रोत बारहमासी प्रतीत होते हैं; राज्य अपने द्वारा एकत्र किए गए करों से और बाहर धन के आवंटन के लिए और अनुदान के लिए भी संघ पर निर्भर हैं; हालांकि राज्यों के वित्त के क्षेत्र पर संघ का कोई प्रत्यक्ष नियंत्रण नहीं है, लेकिन उस क्षेत्र में राज्यों पर हमेशा अप्रत्यक्ष दबाव रहेगा।

पर्स के तार, हमेशा, एक सौम्योक्ति का उपयोग कर सकते हैं
उसकी सलाह लेने के लिए प्रेरित करना। मामले में

अवधि, राज्यों को

आपात स्थिति जैसे युद्ध, बाहरी आक्रामकता,
विफलता

आंतरिक अशांति, संवैधानिक

मशीनरी और वित्तीय अस्थिरता, असाधारण

राज्यों के प्रशासन में हस्तक्षेप करने के लिए कुछ सीमाओं के अधीन, संघ को शक्तियाँ प्रदान की जाती हैं; लेकिन आपातकालीन स्थितियों से संबंधित प्रावधान

वास्तव में संसद की रक्षा के लिए सुरक्षा वाल्व की प्रकृति में भी शक्ति है

देश का भविष्य। क्षेत्रों की सीमाओं को बदलना या नए क्षेत्र बनाना, लेकिन यह कुछ आपात स्थितियों को पूरा करने के लिए एक असाधारण प्रावधान भी है।

तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है।

संसद में क्रमशः राष्ट्रपति और दो सदन होंगे जिन्हें राज्य परिषद और लोक सभा के रूप में जाना जाता है; राज्य परिषद में 12 नामित सदस्यों के अलावा राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 238 से अधिक प्रतिनिधि नहीं होंगे। अतः संसद के एक भाग में राज्य विधानमंडलों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। यद्यपि राज्य परिषद की शक्तियाँ लोक सभा की शक्तियों के बराबर नहीं हैं, लेकिन जिस हद तक यह अपनी विधायी शक्तियों का प्रयोग करती है, संघ पर भी

राज्यों का नियंत्रण होता है। संविधान के कुछ प्रावधानों के संशोधन के मामले में राज्यों से परामर्श करने का भी अधिकार है। 368 .

के प्रावधानों का पूर्वगामी सारांश

संविधान निम्नलिखित तस्वीर प्रकट करता है: द.

राजनीतिक संप्रभुता भारत के लोग हैं और कानूनी संप्रभुता संवैधानिक के बीच विभाजित है।

इकाइयाँ i. ई. , संघ और राज्य, जो संविधान द्वारा सृजित साधनों के माध्यम से संपत्तियों और मनोरंजन रखने वाले न्यायिक व्यक्ति हैं। हालाँकि संघ का अधिकार क्षेत्र कुछ विषयों तक ही सीमित है, लेकिन यह पूरे भारत में फैला हुआ है, जबकि राज्यों का अधिकार क्षेत्र उनकी 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 415 तक ही सीमित है।

क्षेत्रीय सीमाएँ। अपने-अपने क्षेत्रों में विधायी और कार्यकारी दोनों क्षेत्रों में वे सर्वोच्च हैं; उनके अंतर संबंध विशिष्ट प्रावधानों द्वारा विनियमित होते हैं। संघ के बीच संबंध

और राज्यों को सूचियों द्वारा सीमांकित विधायी क्षेत्रों में नहीं पाया जा सकता है, लेकिन केवल विशिष्ट संवैधानिक प्रावधानों में शामिल किया जा सकता है।

उनके बीच संबंध बनाना। असाधारण परिस्थितियों से निपटने के लिए संघ की आपातकालीन शक्तियाँ सामान्य समय में संचालन के अपने अनन्य क्षेत्रों को प्रभावित नहीं करती हैं।

अमेरिकी संविधान के साथ भारतीय संविधान की तुलना के आधार पर, यह तर्क दिया जाता है कि भारतीय संविधान में संघ का कोई भी महत्वपूर्ण मानदंड मौजूद नहीं है। संयुक्त राज्य अमेरिका में संघवाद निम्नलिखित तत्वों को शामिल करता है: (1) जैसा कि सभी संघों में होता है, आम उद्देश्यों के लिए कई स्वायत्त राजनीतिक अधिकारों या "राज्यों" का संघ; (2) एक ओर "राष्ट्रीय सरकार" और दूसरी ओर घटक "राज्यों" के बीच विधायी शक्तियों का विभाजन, जो विभाजन इस नियम द्वारा शासित होता है कि पूर्व "गणना की गई शक्तियों का एक शासन" है, जबकि बाद की "अवशिष्ट शक्तियों" की चाप सरकारें; (3) अधिकांश भाग के लिए, सरकार के इन केंद्रों में से प्रत्येक का प्रत्यक्ष संचालन, अपने निर्दिष्ट क्षेत्र के भीतर, अपनी क्षेत्रीय सीमाओं के भीतर सभी व्यक्ति और संपत्ति; (4) कार्यपालिका और न्यायिक दोनों, कानून प्रवर्तन के पूर्ण उपकरण के साथ प्रत्येक केंद्र का प्रावधान; (5) "राज्य" शक्ति के किसी भी परस्पर विरोधी दावे पर अपने निर्दिष्ट क्षेत्र के भीतर "राष्ट्रीय सरकार" की सर्वोच्चता; (6)

दोहरी नागरिकता। उपरोक्त तत्व निस्संदेह अमेरिकी संविधान में मौजूद हैं, लेकिन यह तर्क देना संभव नहीं है कि जब तक सभी उक्त मानदंड मौजूद नहीं हैं, तब तक संविधान को संघीय के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता है। यद्यपि कागज पर अमेरिकी संविधान एक विशिष्ट संघ है, व्यवहार में संयुक्त राज्य अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय के पास कई कानूनी सिद्धांतों और निहित शक्तियों को विकसित और विकसित करके 446 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल है।

संघीय सरकार को राज्य के क्षेत्र में अप्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप करने में सक्षम बनाने के लिए बड़ी शक्तियों के साथ निवेश किया। न्यायिक शक्ति के संबंध में भी, हालांकि अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय की मूल रूप से संघीय कानूनों से संबंधित एक संघीय न्यायालय के रूप में कल्पना की गई थी, वास्तव में यह संघीय कानूनों के साथ टकराव में आने पर राज्य के कानूनों की आधिकारिक रूप से व्याख्या करता है। मुद्दा यह है कि अमेरिका में भी: इस शब्द के रूढ़िवादी अर्थ में कोई संघ नहीं है।

1962

ई ऑफ वेस्ट

बंगाल

वी.

भारत के बारे में बा. राव, जे।

इसी तरह, ऑस्ट्रेलिया का संविधान स्पष्ट रूप से राष्ट्रमंडल और राज्यों के विशेष क्षेत्रों का सीमांकन करता है और ईश्या से राज्य के अधिकारों की रक्षा करता है, लेकिन व्यवहार में राज्यों को राष्ट्रमंडल सरकार की एजेंसियों के पद तक सीमित कर दिया गया है। यह राज्य पर केंद्र की वित्तीय पकड़ के कारण लाया गया था: देखें - "संघीय सरकार" पर कहाँ।

लेकिन कनाडा में स्थिति इसके विपरीत है। हालांकि केंद्र और प्रांतों के पास है

शक्तियों की विशिष्ट सूचियाँ, केंद्र सरकार के पास कनाडा के दस प्रांतों की सरकारों पर नियंत्रण की कुछ सीमित शक्तियाँ हैं; अवशिष्ट शक्तियाँ केंद्र को दी जाती हैं न कि राज्यों को। हालांकि निस्संदेह सरकार के एकात्मक रूप के कुछ तत्व मौजूद हैं, लेकिन संवैधानिक प्रथा व्यावहारिक रूप से एक संघीय राज्य के रूप में विकसित हुई और जैसा कि एक लेखक कहते

हैं, "कोई अधिराज्य शासन नहीं है जो संघीय की कीमत पर संविधान में एकात्मक तत्वों पर जोर देने का प्रयास करता है।

1

तत्व जीवित रहेंगे।" इसलिए, यह स्पष्ट है कि प्रत्येक संघीय संविधान में या तो पाठ्य सहयोगी हैं या पारंपरिक रूप से कुछ एकात्मक तत्व हैं। यह पता लगाने के लिए कि क्या किसी विशेष संविधान ने संघीय सिद्धांत को स्वीकार किया है या नहीं, वास्तविक परीक्षा यह है कि क्या उक्त संविधान में शक्तियों के विभाजन का प्रावधान इस तरह से किया गया है कि सामान्य और क्षेत्रीय सरकारें अपने क्षेत्र के भीतर एक-दूसरे से समान रूप से स्वतंत्र हों।

आरक्षण 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 447

संघ में आपात स्थितियों में शक्ति के अवशेष या राज्य के मामलों में हस्तक्षेप करने की शक्ति एक संघ में शक्ति के संतुलन को प्रभावित कर सकती है, लेकिन इसके चरित्र को नष्ट नहीं करती है। कुछ संविधान संघ के प्रति और अन्य राज्यों के प्रति एक स्पष्ट पूर्वाग्रह दिखाते हैं, लेकिन अलग-अलग जोर देने के बावजूद वे संघीय सिद्धांत को अपने आधार के रूप में स्वीकार करते हैं। हालांकि कुछ लेखक, अमेरिकी संविधान को एक संघ के लिए मापदंड के रूप में स्वीकार करते हुए, संघ के प्रति पूर्वाग्रह रखने वाले संविधानों को अर्ध-संघ के रूप में वर्णित करना पसंद करते हैं, मुझे नहीं लगता कि सभी संविधानों का वर्णन करना अनुचित है जो काफी हद तक

संघीय सिद्धांत को संघों के रूप में स्वीकार करें।

आवे

दन करें।

संविधान एक संघ है, नोरिनल में इकाइयों के रूप में
शक्तियों का प्रयोग

समय के भीतर अनन्य संप्रभु

उन्हें आवंटित क्षेत्र।

:

एक और अंतर करने की कोशिश की जाती है

अमेरिकी संविधान और भारतीय संविधान के बीच

के ऐतिहासिक विकास के आधार पर कथन

दो देश। जबकि अमेरिका में, तर्क समर्थक
राज्यों को लाया गया था

सी. ई. डी. एस, पूर्व-विद्यमान संप्रभु

एक साथ एक संघ के तहत, भारत में संविधान

राज्य ने मौजूदा प्रशासकों को कुछ शक्तियां प्रदान की हैं

तुरी इकाइयाँ या ऐसी इकाइयाँ जिनका नव गठन किया गया है। द.

एक विशेष संविधान के तहत एक राजनीतिक इकाई की स्थिति

यह इसके इतिहास पर नहीं बल्कि प्रो पर निर्भर करता है।

संविधान के दर्शन। पूर्व-विद्यमान स्वतंत्र

कमजोर राज्यों को कोई सराहनीय शक्ति नहीं दी जा सकती है

एक संविधान के तहत, जबकि नवगठित राज्य कर सकते हैं
संविधान के तहत अधिक शक्ति का आनंद लें। ए.

एक अन्य

इसे उप-महाद्वीप के रूप में वर्णित किया गया है। ऐतिहासिक रूप से, इससे पहले
संविधान के आगमन, वहाँ अलग थे

प्रांत व्यवहार में उचित मात्रा में ऑटो का आनंद ले रहे हैं

अलग-अलग नामों के साथ असंख्य राज्य थे

शुद्ध निरंकुशता से लेकर सरकार के रूप।

निर्देशित लोकतंत्र के लिए। भाषा, नस्ल, धर्म आदि में भी भिन्नताएँ थीं। विदेशी पॉकिट्स को
भी जल्द या बाद में मुख्य देश के साथ शामिल किए जाने की उम्मीद थी। उन स्थितियों में हमारे
संविधान ने केंद्र के प्रति एक मजबूत पूर्वाग्रह के साथ एक संघीय व्यवस्था को अपनाया। के
तहत ऐसी संरचना, जबकि केंद्र विखंडनीय प्रवृत्तियों के विकास को रोकने के लिए
मजबूत रहता है, राज्यों को उन्हें आवंटित क्षेत्रों के भीतर सामान्य समय में व्यावहारिक रूप से
स्वायत्त बनाया जाता है।

इस पृष्ठभूमि के साथ अब मैं आगे बढ़ूंगा

विद्वान वकील द्वारा दिए गए तर्कों पर विचार करें। मैं सबसे पहले सूची III की प्रविष्टि 12, यानी संपत्ति के अधिग्रहण और अधिग्रहण के आधार पर तर्क दूंगा। उक्त प्रश्न से संबंधित प्रावधान इस प्रकार हैं:

अनुच्छेद 245: (1) इसके प्रावधानों के अधीन

संविधान, संसद के लिए कानून बना सकते हैं

भारत के राज्य क्षेत्र का पूरा या कोई भी भाग और किसी राज्य का विधानमंडल
इसके लिए कानून बना सकता है -
राज्य का पूरा या कोई भी भाग।

(2) संसद द्वारा बनाया गया कोई कानून नहीं होगा

इस आधार पर अमान्य माना जाता है कि यह

अतिरिक्त-क्षेत्रीय संचालन होगा।

अनुच्छेद 216: (1) कुछ भी होने के बावजूद
खंड (2) और (3), संसद के पास अनन्य अधिकार हैं।

इनमें से किसी के संबंध में कानून बनाने की शक्ति

सातवीं सूची में सूचीबद्ध मामले

अनुसूची (इस संविधान में के रूप में संदर्भित

" संघ सूची ")।

(2) खंड (3) में किसी बात के होते हुए भी, संसद और खंड (1) के अधीन रहते
हुए, विधानमंडल। किसी भी राज्य की प्रकृति को भी बनाने की शक्ति है

सम्मिलित किसी भी मामले के संबंध में कानून

सातवीं अनुसूची में सूची III में मूल्यांकन (1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय
रिपोर्ट 449 में)

इस संविधान को समवर्ती के रूप में संदर्भित किया गया है

सूची ")।

(3) खंड (1) और (2) के अधीन रहते हुए,

किसी राज्य के विधानमंडल के पास विशेष शक्ति होती है -

ऐसे राज्य या उसके किसी भाग के लिए कानून बनाएँ
सूचीबद्ध किसी भी मामले के संबंध में

सातवीं अनुसूची की सूची II में (इस में)

संविधान को राज्य सूची के रूप में संदर्भित किया गया है)।

अधिग्रहण से संबंधित प्रविष्टियाँ, जैसा कि वे संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम, 1956 से पहले थीं।

इस प्रकार पढ़िए:

सूची I की प्रविष्टि 33. अधिग्रहण या मांग

संघ के प्रयोजन के लिए संपत्ति का अधिग्रहण।

सूची 11 की प्रविष्टि 36। अधिग्रहण या मांग

संघ के प्रयोजनों को छोड़कर, संपत्ति की प्रविष्टि 42 के प्रावधानों के अधीन

सूची III.

सूची III की प्रविष्टि 12। किन सिद्धांतों पर काम करें
अर्जित या अधिग्रहित संपत्ति के लिए क्षतिपूर्ति

संघ या किसी राज्य के प्रयोजनों के लिए या

किसी अन्य सार्वजनिक उद्देश्य के लिए निर्धारित किया जाना है, और जिस रूप और
तरीके से ऐसा किया जाता है

मुआवजा दिया जाना है।

उक्त संशोधन के बाद, सूची I की प्रविष्टि 33 और सूची II की प्रविष्टि 36 को हटा दिया
गया था; और सूची III की प्रविष्टि 42, जैसा कि सातवें संशोधन द्वारा प्रतिस्थापित किया गया
है:

" संपत्ति का अधिग्रहण और अधिग्रहण "।

अनुच्छेद 31। (1) कोई भी व्यक्ति वंचित नहीं रहेगा।

उसका। कानून के अधिकार द्वारा संरक्षित संपत्ति।

(2) सार्वजनिक उद्देश्य के अलावा किसी भी संपत्ति को अनिवार्य रूप से अधिग्रहित या अधिग्रहित नहीं किया जाएगा।

और एक कानून के अधिकार द्वारा छोड़कर जो 450 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वी. जी. आई. प्रदान करता है।

इस प्रकार अर्जित संपत्ति के लिए मुआवजे के लिए

या मांग की जाती है और या तो राशि तय करती है क्षतिपूर्ति या सिद्धांतों को निर्दिष्ट करता है

सेशन निर्धारित और दिया जाना है; और नहीं ऐसे कानून पर किसी भी मामले में सवाल उठाया जाएगा।

अदालत ने इस आधार पर कि क्षतिपूर्ति

इसके द्वारा प्रदान किया जाना पर्याप्त नहीं है।

(2(क) जहाँ कोई कानून स्वामित्व या अधिकार के हस्तांतरण का प्रावधान नहीं करता है। राज्य या निगम की किसी संपत्ति का

राज्य के स्वामित्व या नियंत्रण में होने के कारण, यह अनिवार्य प्रावधान करने के लिए नहीं समझा जाएगा

संपत्ति का अधिग्रहण या अधिग्रहण, नहीं

यह मानते हुए कि यह किसी भी व्यक्ति को उससे वंचित करता है

संपत्ति।

(3) राज्य के विधान-मंडल द्वारा बनाई गई ऐसी कोई विधि जो खंड (2) में निर्दिष्ट है, नहीं होगी।

प्रभावी है जब तक कि ऐसा कानून, राष्ट्रपति के विचार के लिए पुनर्निर्धारित नहीं किया गया है,

उनकी सहमति प्राप्त की।

मैंने पहले ही माना है कि संप्रभु शक्तियों को संवैधानिक संस्थाओं, अर्थात् संघ और राज्यों के बीच वितरित किया गया है; ऐसी एक संप्रभु शक्ति सार्वजनिक उद्देश्य के लिए एक नागरिक की संपत्ति प्राप्त करने या उसकी मांग करने की शक्ति है। "प्रख्यात क्षेत्र" के सिद्धांत को विलिस ने "के रूप में परिभाषित किया है। न्यायसंगत मुआवजे के भुगतान पर सार्वजनिक उपयोग के लिए निजी संपत्ति लेने के लिए संप्रभु, या उसके सरकारी एजेंटों में से एक की कानूनी क्षमता। निकोलस ने अपनी पुस्तक एमिनेन्ट डोमेन, वॉल्यूम I, इसे स्वामी की सहमति के बिना सार्वजनिक उपयोग के लिए संपत्ति लेने की संप्रभु की शक्ति के रूप में वर्णित करता है। चिरनजीत लाल चौधरी बनाम। भारत संघ (1), मुखर्जी, जे., जैसा कि वे उस समय थे, ने इस परिभाषा को स्वीकार किया जब उन्होंने कहा:

" इसे लेना प्रत्येक संप्रभु का अंतर्निहित अधिकार है।

और उपयुक्त निजी संपत्ति

(1) [1950] एस. सी. आर. 869,901-902।

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 451

सार्वजनिक उपयोग के लिए व्यक्तिगत नागरिकों के लिए। यह अधिकार, जिसे अमेरिकी कानून में प्रतिष्ठित क्षेत्र के रूप में वर्णित किया गया है, कराधान की शक्ति, राजनीतिक आवश्यकता की संतान की तरह है, और यह माना जाता है कि यह एक निहित आरक्षण पर आधारित है

सरकार द्वारा अधिग्रहित निजी संपत्ति इसके संरक्षण के तहत इसके नागरिकों को लिया जा सकता है या सार्वजनिक लाभ के लिए इसका उपयोग नियंत्रित किया जा सकता है।

मालिक की इच्छाओं के अनुसार "।

इसलिए, यह स्पष्ट है कि सार्वजनिक उद्देश्य के लिए एक नागरिक की संपत्ति हासिल करने की शक्ति संप्रभु की निहित शक्तियों में से एक है। संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम, 1956 से पहले हमारे संविधान के अनुलेखन में, इस शक्ति को संघ और राज्यों के बीच विभाजित और

वितरित किया गया था; संघ, सूची I की प्रविष्टि 33 के आधार पर संघ के उद्देश्यों के लिए एक संपत्ति प्राप्त कर सकता था, और सूची II की प्रविष्टि 36 के आधार पर एक राज्य राज्य के उद्देश्यों के लिए संपत्ति का अधिग्रहण कर सकता था: इसका परिणाम यह हुआ कि कोई राज्य संघ के उद्देश्य से किसी नागरिक की संपत्ति का अधिग्रहण नहीं कर सकता था और संघ राज्य के उद्देश्य से किसी नागरिक की संपत्ति का अधिग्रहण नहीं कर सकता था। इस कठिनाई से बचने के लिए सूची I की प्रविष्टि 33 और सूची II की प्रविष्टि 36 को हटा दिया गया था और सूची III की वर्तमान प्रविष्टि 42 को उक्त सूची में कैरिलर प्रविष्टि 42 के लिए प्रतिस्थापित किया गया है। अब किसी राज्य की संसद और विधानमंडल दोनों केंद्र या राज्य के लिए संपत्ति के अधिग्रहण और अधिग्रहण का प्रावधान करने वाला कानून बना सकते हैं। लेकिन एक संप्रभु द्वारा अधिग्रहण की शक्ति में निहित महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि इसे केवल शासित की संपत्ति से संबंधित होना चाहिए, क्योंकि एक संप्रभु स्पष्ट रूप से अपनी संपत्ति हासिल नहीं कर सकता है। हमारे अधीन महाद्वीप क्षेत्र की यह संप्रभु शक्ति

संविधान संघ और राज्यों को प्रदान किया जाता है या उनके बीच विभाजित किया जाता है। इसलिए, प्रथम दृष्टया, सूची III की प्रविष्टि 42 का अर्थ केवल किसी राज्य द्वारा निजी संपत्ति का अधिग्रहण और अधिग्रहण ही हो सकता है। यह अधिग्रहण या मांग की अवधारणा में भी निहित है।

यह मानते हुए कि अधिग्रहण या अधिग्रहण 452 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल के लिए होगा।

न्यायसंगत मुआवजे के भुगतान पर एक सार्वजनिक उद्देश्य।

उक्त अवधारणा ने न केवल उन विदेशों में एक अच्छी तरह से परिभाषित अर्थ प्राप्त किया है जिनसे इसे उधार लिया गया है, बल्कि हमारे देश के विधायी इतिहास में भी है। यही कारण है कि हमारा संविधान बनाया गया है

स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि बनाया गया कोई भी कानून मौलिक अधिकारों का उल्लंघन नहीं करेगा। फंडा में से एक

मानसिक अधिकार वह है जो कला में निहित है। 31 (2) और

यह कहता है कि किसी भी संपत्ति का अधिग्रहण अनिवार्य रूप से नहीं किया जाएगा।

सार्वजनिक उद्देश्य के लिए आरक्षित या अधिग्रहीत और
 कानून के अधिकार से बचाएँ, जो कम्पेन के लिए प्रावधान करता है
 इस प्रकार अर्जित या अधिग्रहित संपत्ति के लिए रियायत।
 सूची III की प्रविष्टि 42 का दायरा स्पष्ट होगा।

यदि इसे उक्त लेख के साथ पढ़ा जाता है। जब तक कि ऐसा न हो उस कला को धारण
 किया। 31 (2) संघ द्वारा राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण के कानून पर भी लागू होता है, इसका
 परिणाम यह होगा कि संसद एक कानून बना सकती है जो

किसी उद्देश्य के लिए किसी राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण
 जो एक सार्वजनिक उद्देश्य नहीं है और बिना भुगतान के है
 मुआवजे का, जबकि वह मामले में ऐसा नहीं कर सकता है

किसी निजी संपत्ति का अधिग्रहण। अगर कला। 31 , करता है राज्य की संपत्ति
 के अधिग्रहण के कानून को नियंत्रित नहीं करता है,

यह इंगित करता है कि सूची III की प्रविष्टि 42 से संबंधित नहीं है।

राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण के साथ, अन्यथा इसके लिए

किसी राज्य के अधिग्रहण में विसंगति पैदा होगी

सुरक्षा उपायों के बिना संसद के कानून द्वारा संपत्ति

यही कारण है कि विद्वान अटॉर्नी-जनरल ने एक हमें उस कला को धारण करने के
 लिए मनाने का प्रयास करें। 31 (2) किसी राज्य के अधिग्रहण के लिए प्रावधान करने वाले
 कानून पर भी लागू होता है।

संपत्ति। उन्होंने तर्क दिया कि संविधान के बाद

(चौथा संशोधन) अधिनियम, 1955, अनुच्छेद। 31 (1) कला से अलग किया गया है।
 31 (2) और यह कि वाक्यांश

इस स्थिति में उन्होंने निर्णय पर भरोसा किया। इनमें से कवलाप्परा
 कोट्टाराथिल कोचुनी बनाम में न्यायालय। द.

मद्रास राज्य (1)। वहाँ इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि

संविधान (चौथा संशोधन) अधिनियम के बाद,

1955, सीएलएस। (1), (2) और कला का (2 ए)। 31 निपटा लिया गया

(1) [1960] 3 एससीआर 887।

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 453

विभिन्न विषय-सीएलएस। (2) और (2 क) अधिग्रहण और अधिग्रहण से संबंधित, और कल। (1) कानून के अधिकार के साथ संपत्ति से वंचित होना। कि

सी. एल. के निर्माण पर निर्णय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। (2) राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण के प्रश्न के संबंध में उक्त अनुच्छेद। तथ्य यह है कि इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि अनुच्छेद के दो खंड दो अलग-अलग विषयों से संबंधित हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि कल। (1) सी. एल. की व्याख्या से कोई संबंध नहीं है। (2) उसी लेख से। कला का खंड (2)। 31 पढ़ता है:

" सार्वजनिक प्रयोजन के अलावा किसी भी संपत्ति को अनिवार्य रूप से अर्जित या अधिग्रहित नहीं किया जाएगा, सिवाय किसी ऐसे कानून के प्राधिकरण के जो इस प्रकार अर्जित या अधिग्रहित संपत्ति के लिए मुआवजे का प्रावधान करता है और या तो मुआवजे की राशि निर्धारित करता है या उन सिद्धांतों को निर्दिष्ट करता है जिन पर क्षतिपूर्ति निर्धारित की जानी है और किस तरीके से दी जानी है; और ऐसी किसी भी कानून पर किसी भी अदालत में इस आधार पर सवाल नहीं उठाया जाएगा कि -

कि कानून पर्याप्त नहीं है। '

खंड (2 ए) में कहा गया है:

" जहां कोई कानून किसी संपत्ति के स्वामित्व या कब्जे के अधिकार को राज्य को या राज्य के स्वामित्व या नियंत्रण वाले निगम को हस्तांतरित करने का प्रावधान नहीं करता है, तो यह अनिवार्य अधिग्रहण या संपत्ति की मांग के लिए प्रावधान नहीं माना जाएगा, यह मानते हुए कि यह किसी व्यक्ति को उसके स्वामित्व से वंचित करता है।

संपत्ति "।

यह सच है कि सी. एल. (1) "कोई व्यक्ति नहीं" शब्दों के साथ खुलता है जबकि सी. एल. (2) उस अभिव्यक्ति को दोहराता नहीं है; लेकिन संदर्भ में, मुझे उस सी. एल. को पकड़ना मुश्किल लगता है। (1) किसी व्यक्ति की संपत्ति से संबंधित और

सी. एल. (2) व्यक्तियों और राज्यों की संपत्ति से संबंधित है। अनुच्छेद 31 454 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वी. ओ. एल. के संबंध में एक मौलिक अधिकार से संबंधित है।

1952

संपत्ति-सी. एल. (1) संपत्ति के अभाव के साथ,
और सी. एल. (2) संपत्ति के अधिग्रहण के साथ।

पश्चिमी राज्य

सीएल के रूप में। (1) यह स्पष्ट करता है कि
संपत्ति एक की होगी

बंगाल

वी.

व्यक्ति, यह फिर से उल्लेख करने की आवश्यकता
नहीं है कि

लिनियन ऑफ इंडिया

अर्जित संपत्ति किसी व्यक्ति की होनी चाहिए। द.

सुल्बा राव, जे।

सी. एल. में अनिवार्य अधिग्रहण और अधिग्रहण का
विचार। (2) यह इंगित करता है कि अधिग्रहण या अधिग्रहण एफ किसी व्यक्ति की संपत्ति के
राज्य द्वारा किया जाता है। ऐसा किया जाता है।

पहले से

सी. एल. द्वारा साफ़ करें। (2 ए) जो कहता है कि अधिग्रहण का कानून स्वामित्व या अधिकार के हस्तांतरण के लिए प्रावधान करेगा

राज्य को या राज्य के स्वामित्व या नियंत्रण वाले निगम को किसी संपत्ति का कब्जा। संपत्ति का हस्तांतरण राज्य को किया जाता है और हस्तांतरणकर्ता राज्य के अलावा किसी अन्य राज्य का होना चाहिए। संदर्भ में इसका अर्थ केवल सी. एल. में उल्लिखित व्यक्ति हो सकता है। (1) . "राज्य" अभिव्यक्ति में निश्चित अनुच्छेद का उपयोग एक और संकेत है कि 818 राज्य और राज्य या संघ और राज्य के बीच अंतर-हस्तांतरण उस खंड द्वारा विचार नहीं किया गया है। यदि यह इरादा होता तो यह किसी राज्य और राज्य के बीच हस्तांतरण के लिए पूर्व प्रेस प्रदान करता। फिर भी, विद्वान महान्यायवादी का तर्क है कि राज्य भी एक व्यक्ति है। संविधान में व्यक्ति की अवहेलना नहीं की गई है; लेकिन भाग III के विभिन्न प्रावधानों के अवलोकन से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि व्यक्त "व्यक्ति" का उपयोग "राज्य" के विरोधाभास में किया जाता है। ". वास्तव में, अधिकांश मौलिक अधिकार किसी व्यक्ति या नागरिक को किसी राज्य द्वारा उसके अधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ प्रदान किए जाते हैं। कला में अभिव्यक्ति "व्यक्ति"। 14 , 18 , 20 , 21 , 22 , 25 और 27 में "राज्य" शामिल नहीं है और न ही हो सकता है। वास्तव में, इस भाग में कोई अन्य अनुच्छेद नहीं है जिसमें "व्यक्ति" अभिव्यक्ति का उपयोग "राज्य" के अर्थ में किया गया है। इसलिए, प्रथम दृष्टया, कला में अभिव्यक्ति "व्यक्ति" है। 31 शामिल नहीं होगा

बेटा।

" राज्य "। उक्त अनुच्छेद में ऐसा कुछ भी नहीं है जो मुझे एक तनावपूर्ण अर्थ देने के लिए मजबूर करता है, विशेष रूप से जब यह अनुच्छेद मान्यता प्राप्त अनुच्छेद के अनुरूप हो।

प्रख्यात क्षेत्र की अवधारणा और मौलिक अधिकारों की योजना के साथ पूरी तरह से फिट बैठती है। लेकिन यह कहा जाता है कि यदि कोई राज्य "व्यक्ति" नहीं हो सकता है, तो निगम या

;

कंपनी को इसके दायरे से बाहर रखना होगा। संविधान में "व्यक्ति" अभिव्यक्ति की कोई परिभाषा नहीं है; लेकिन इसे सामान्य खंड अधिनियम, 1897 में परिभाषित किया गया है, जिसमें किसी भी कंपनी या संगठन या व्यक्तियों के निकाय को शामिल किया गया है, चाहे वह निगमित हो या नहीं। हालाँकि यह परिभाषा "व्यक्ति" अभिव्यक्ति के प्राकृतिक अर्थ का विस्तार है, यहाँ तक कि विस्तारित अर्थ में भी राज्य शामिल नहीं है। वैसे भी यह सवाल कि उक्त अभिव्यक्ति एक निगम में लेती है या नहीं, इस मामले में निर्णय की आवश्यकता नहीं है। इस संदर्भ में इस न्यायालय के दो निर्णयों को उपयोगी रूप से संदर्भित किया जा सकता है। राशन और वितरण निदेशक v. कलकत्ता निगम (1) ने यह माना कि "व्याख्या का नियम"। विधानों की स्थिति जिसके द्वारा राज्य बाध्य नहीं है - कानून जब तक कि इसे स्पष्ट शब्दों में या आवश्यक निहितार्थ द्वारा प्रदान नहीं किया जाता है, तब भी अच्छा कानून है। यद्यपि उस नियम को एक के संदर्भ में निर्धारित किया गया है

कानून के अनुसार, संविधान के अनुच्छेदों के निर्माण में एक अलग सिद्धांत लागू होने का कोई कारण नहीं है। यदि व्याख्या का वह नियम कला पर लागू होता है। 31 (2) संविधान के अनुसार, यह अभिनिर्धारित करना होगा कि चूंकि उक्त नियम राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण के लिए शर्तों या आवश्यक निहितार्थ का प्रावधान नहीं करता है, इसलिए राज्य की संपत्ति उक्त नियम का विषय नहीं हो सकती है। बिहार राज्य बनाम में इस न्यायालय के एक अन्य फैसले पर भरोसा रखा गया है। रानी सोनाबती कुमारी (2), इस तर्क के समर्थन में कि अभिव्यक्ति "व्यक्ति" एक राज्य को गले लगाती है। वहाँ, निर्णय यह था कि जब राज्य ने न्यायालय द्वारा जारी निषेधाज्ञा के आदेश की अवज्ञा की, तो उक्त आदेश को ओ. XXXIX द्वारा निर्धारित तरीके से राज्य के खिलाफ लागू किया जा सकता था। आर. 2 (3) , सिविल प्रक्रिया संहिता। एक वादी एक प्रतिवादी को शिकायत की गई चोट से रोकने के लिए एक अस्थायी निषेधाज्ञा के लिए अदालत में आवेदन कर सकता है। ओ. XXXIX के तहत, आर. 2 (3) कोड से,

" अवज्ञा, या किसी के उल्लंघन के मामले में

(1) [1961] आई. एस. सी. आर. 158

(2) [1961] 1 एससीआर

728।

456 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

ऐसी शर्तों पर, निषेधाज्ञा देने वाला न्यायालय इस तरह की अवज्ञा या उल्लंघन के दोषी व्यक्ति की संपत्ति को कुर्क करने का आदेश दे सकता है, और ऐसे व्यक्ति को छह से अधिक अवधि के लिए सिविल जेल में रखने का भी आदेश दे सकता है।

महीनों, जब तक कि इस बीच अदालत उसकी रिहाई का निर्देश देता है। "

यह न्यायालय, सी. एल. एस. के निर्माण पर। (1) और (3) आर। 2 सिविल प्रक्रिया संहिता के ओ. XXXIX

अभिनिर्धारित किया कि r में 'व्यक्ति' अभिव्यक्ति। 2 (3) समूह में सभी को "प्रतिवादी, उसके एजेंटों, नौकरों और कामगारों" को नामित करने के लिए व्यापक रूप से नियोजित किया गया है और किसी भी प्रतिवादी को बाहर करने के लिए नहीं जिसके खिलाफ

निषेधाज्ञा का आदेश मुख्य रूप से पारित किया गया है। लेकिन साथ ही, इस न्यायालय ने यह स्पष्ट कर दिया कि निरोध का प्रावधान राज्य पर लागू नहीं होता है और यह केवल इसलिए हो सकता है क्योंकि राज्य एक "व्यक्ति" नहीं है जिसे हिरासत में लिया जा सकता है। निर्णय के दो खंडों के वाक्यांश विज्ञान पर आधारित है

ओ. XXXIX, आर. 2 , सिविल प्रक्रिया संहिता और एक सामान्य प्रस्ताव के रूप में निर्धारित नहीं करता है कि "व्यक्ति" अभिव्यक्ति जहां भी दिखाई देती है, उसमें एक "राज्य" शामिल होगा।

कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। 31 और सूची III की प्रविष्टि 42 भी निर्माण की पुष्टि नहीं करती है।

कि किसी राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण पर सूची III की प्रविष्टि 42 द्वारा विचार किया गया है। भारत सरकार अधिनियम, 1935 में अधिग्रहण एक प्रांतीय विषय था।

सूची II की प्रविष्टि 9, सरकार की धारा 299

भारत अधिनियम, 1935 में कहा गया है:

(1) ब्रिटिश भारत में किसी भी व्यक्ति को कानून के अधिकार से उसकी संपत्ति से वंचित नहीं किया जाएगा।

(2) न तो संघीय और न ही किसी प्रांतीय कानून को किसी भी भूमि के सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए अनिवार्य अधिग्रहण को अधिकृत करने वाला कोई कानून बनाने की शक्ति होगी, या कोई 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 457

वाणिज्यिक या औद्योगिक उपक्रम, या किसी भी वाणिज्यिक या औद्योगिक उपक्रम में या उसके स्वामित्व वाली किसी भी कंपनी में कोई हित, जब तक कि कानून अर्जित संपत्ति के लिए मुआवजे के भुगतान का प्रावधान नहीं करता है और या तो कंपनी की राशि तय करता है।

कथन, या उन सिद्धांतों को निर्दिष्ट करता है जिन पर, और जिस तरीके से यह होना है

तय किया "।

मोटे तौर पर, सीएलएस। (1) और (2) एस। 299 उक्त अधिनियम की धारा क्रमशः सी. एल. एस. के अनुरूप है। (1) और (2) कला। 31 संविधान के, उक्त अधिनियम के तहत, संघीय

विधानमंडल इस साधारण कारण से किसी प्रांत की भूमि का अधिग्रहण करने के लिए कानून नहीं बना सकता था कि भूमि अधिग्रहण का विषय विशेष रूप से एक प्रांतीय विषय था। लेकिन एस। 127 संघ की आकस्मिकता के लिए किसी प्रांत से संबंधित भूमि की आवश्यकता होती है। इस खंड में लिखा है:

" यदि संघ आवश्यक समझता है तो वह ऐसा कर सकता है

किसी ऐसे मामले से संबंधित किसी भी उद्देश्य के लिए किसी प्रांत में स्थित किसी भी भूमि का अधिग्रहण करना जिसके संबंध में संघीय विधानमंडल के पास शक्ति है। कानून बनाने के लिए, प्रांत की ओर से और उसकी कीमत पर भूमि का अधिग्रहण करने की आवश्यकता होती है।

संघ या, यदि भूमि का संबंध है

प्रांत, इसे संघ को ऐसी शर्तों के रूप में हस्तांतरित करना जिन पर सहमति हो सकती है या सहमति की चूक में, जो एक मध्यस्थ द्वारा निर्धारित की जा सकती है।

भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा नियुक्त।

उक्त प्रावधानों का एक संयुक्त अध्ययन इंगित करता है

कि हालांकि भारत सरकार अधिनियम के तहत

संघीय विधानमंडल सशक्त बनाने वाला कानून नहीं बना सका

संघ एक से संबंधित भूमि का अधिग्रहण करने के लिए

प्रांत, संघ को प्रांत की आवश्यकता हो सकती है

प्रांत द्वारा देय भूमि को हस्तांतरित करने के लिए

उनके बीच सहमत शर्तें या, डिफ़ॉल्ट रूप से

एक मध्यस्थ द्वारा निर्धारित समझौता:

यह 458 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल के लिए है।

मान लीजिए, भारत सरकार अधिनियम के तहत किसी प्रांत के स्वामित्व वाली भूमि का संघ को हस्तांतरण केवल एक समझौते या पुरस्कार के तहत किया जा सकता है। संविधान के तहत, 1956 में इसके संशोधन से पहले, संसद के साथ-साथ राज्य विधानसभाओं को अपने-अपने उद्देश्यों के लिए भूमि अधिग्रहण के लिए कानून बनाने का अधिकार था-संघ के उद्देश्यों के लिए संसद और राज्य के उद्देश्यों के लिए एक राज्य विधानमंडल। प्रथम दृष्टया प्रासंगिक

प्रविष्टियाँ, अर्थात् सूची I की प्रविष्टि 33 और सूची II की प्रविष्टि 36, केवल संघ या राज्य के प्रयोजनों के लिए निजी भूमि के अधिग्रहण से संबंधित हो सकती हैं, जैसा भी मामला हो। लेकिन अगर संघ या राज्य दूसरे के कब्जे वाली भूमि चाहता है, तो वह इसे केवल अनुच्छेद के तहत ही सुरक्षित कर सकता है। 298 (1) , जैसे वह उस समय खड़ा था। उक्त लेख में लिखा है:

" संघ और केंद्र की कार्यकारी शक्ति

राज्य द्वारा बनाए गए किसी भी कानून के अधीन रहते हुए राज्य का विस्तार होगा अनुदान, बिक्री के लिए उपयुक्त विधानमंडल,

किसी भी संपत्ति का निपटान या बंधक संघ या ऐसे राज्य के प्रयोजनों के लिए,

जैसा भी मामला हो, और खरीद के लिए या

उनके लिए संपत्ति का अधिग्रहण

उद्देश्य

क्रमशः, और अनुबंध बनाने के लिए।

इस अनुच्छेद में प्रयुक्त वाक्यांश स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि संघ या राज्य द्वारा क्रमशः संघ या राज्य के उद्देश्यों के लिए धारित भूमि को अनुच्छेद में बताए गए तरीके से ही दूसरे को हस्तांतरित किया जा सकता है। 298 (1) . संविधान (सातवां संशोधन) अधिनियम, 1956 द्वारा भूमि अधिग्रहण और अधिग्रहण के विषय को सूची III में प्रविष्टि 42 के रूप में रखा गया था, और सूची I की प्रविष्टि 33 और सूची II की प्रविष्टि 36 को हटा दिया गया था और अनुच्छेद। 298 एक नए अनुच्छेद द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था। कला में किए गए परिवर्तन। 298 वर्तमान उद्देश्यों के लिए सामग्री नहीं हैं। अतः यह स्पष्ट है कि भारत सरकार के अधीन

अधिनियम, 1935, भूमि का अनिवार्य अधिग्रहण एक प्रांतीय विषय था, जो संविधान के तहत 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 459 के रूप में था।

मूल रूप से खड़ा था, संसद एक कानून बना सकती थी

संघ के प्रयोजनों के लिए ऐसी संपत्ति का अधिग्रहण और राज्य के प्रयोजनों के लिए राज्य विधानमंडल द्वारा

विभिन्न प्रविष्टियों का गुण और वह, संशोधन के बाद

अर्थात्, संसद और राज्य विधानमंडल दोनों सूची III की प्रविष्टि 42 के आधार पर ऐसी संपत्ति के अधिग्रहण के लिए कानून बना सकते हैं। लेकिन अगर संघ या भारत सरकार अधिनियम के तहत एक प्रांत, या संविधान के तहत संघ या राज्य दूसरे के स्वामित्व वाली संपत्ति चाहते हैं, तो वह इसे केवल एक समझौते के तहत सुरक्षित कर सकता है, अन्यथा नहीं।

यह योजना स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि संसद या राज्य विधानमंडल द्वारा बनाया गया कानून दूसरे के स्वामित्व वाली संपत्ति के अधिग्रहण का प्रावधान नहीं कर सकता है। इसलिए, मेरा मानना है कि संसद किसी राज्य के स्वामित्व वाली संपत्ति के संघ द्वारा अधिग्रहण के लिए सूची III की प्रविष्टि 44 के आधार पर कानून नहीं बना सकती है।

इसके बाद रिलायंस को आर्ट पर रखा जाता है। 248 संविधान की सूची I की प्रविष्टि 97 के साथ पढ़ा गया

संसद की व्यापक शक्ति को बनाए रखने के लिए सातवीं अनुसूची। अनुच्छेद 248 में कहा गया है:

(1) संसद के पास समवर्ती सूची या राज्य में सूचीबद्ध किसी भी मामले के संबंध में कोई भी कानून बनाने की अनन्य शक्ति है।

सूची.

(2) ऐसी शक्ति में कर लागू करने वाला कोई भी कानून बनाने की शक्ति शामिल होगी।

इनमें से किसी भी सूची में उल्लेख किया गया है।

सूची I की प्रविष्टि 97. कोई अन्य विषय नहीं सूची II या सूची III में उल्लिखित किसी भी कर सहित जो उन सूचियों में से किसी में भी उल्लिखित नहीं है।

यह तर्क दिया जाता है कि यदि किसी राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण सूची III की प्रविष्टि 42 के तहत नहीं आता है, तो इसे सूची I की प्रविष्टि 97 के तहत आना चाहिए।

वीओएल।

इस तर्क के दो उत्तर हैं: सबसे पहले, एक अवशिष्ट प्रविष्टि शक्तियों के विभाजन के दायरे से परे नहीं जा सकती है। संप्रभु विधायी शक्ति विभिन्न संस्थाओं के बीच विभाजित है। पूरा मामला विधायी क्षेत्र संघ और संघ के बीच विभाजित है

राज्यों। आबंटन की अपनाई गई विधि है -

विषयों की गणना। अवशिष्ट वस्तु और प्रविष्टि, गलती से या अन्यथा हटाए गए किसी भी विषय को संघ को सौंपने के लिए अपनाए गए उपकरण हैं। अवशिष्ट विधायी क्षेत्र संभवतः शामिल नहीं हो सकता है।

अंतर-राज्य संबंध; उस मामले के लिए केंद्र और राज्यों के बीच विधायी सूचियों के माध्यम से वितरित नहीं किया जाता है। इसके अलावा, जब किसी संपत्ति के अधिग्रहण के लिए एक विशिष्ट प्रावधान किया जाता है, तो यह होगा

राज्यों और राज्यों के अलावा अन्य संपत्तियों में उस प्रवेश को सीमित करना असंगत है। अवशिष्ट का सहारा लें

राज्यों की संपत्तियों के अधिग्रहण की शक्ति। यदि अधिग्रहण की शक्ति का अर्थ केवल राज्यों में संपत्तियों का अधिग्रहण किया जा सकता है और नहीं

यह अभिनिर्धारित किया जाना चाहिए कि राज्यों की संपत्तियों के अधिग्रहण की शक्ति उस सीमा तक सीमित है। आगे अगर कला। 31 (2) केवल किसी निजी संपत्ति के अधिग्रहण की विधि पर लागू होती है जैसा कि मैंने पहले ही अभिनिर्धारित किया है, यदि उक्त खंड सूची III की धारा 42 पर लागू नहीं होता है तो जो विसंगति उत्पन्न होती है, वह सूची I-I की प्रविष्टि 97 के संबंध में क्रमिक रूप से उत्पन्न होगी। मान लीजिए कि संसद इसके लिए कानून नहीं बना सकती है

सूची I की प्रविष्टि 97 के आधार पर राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण।

संघ का तर्क होने पर संविधान के काम करने में कई विसंगतियां होंगी

स्वीकार कर लिया गया। चूंकि "अधिग्रहण और अधिग्रहण" का विषय समवर्ती सूची में है, इसलिए संसद और राज्य विधानमंडल दोनों अलग-अलग 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 461 बना सकते हैं।

यथास्थिति, राज्य या संघ की संपत्ति अर्जित करने के लिए विधियाँ। संसद द्वारा बनाए गए कानून के तहत, राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण किया जा सकता है और अधिग्रहण पर यह संघ की संपत्ति बन जाती है; फिर राज्य द्वारा बनाए गए कानून के तहत, उसी संपत्ति को राज्य द्वारा संघ की संपत्ति के रूप में फिर से प्राप्त किया जा सकता है। ऐसा कहा जाता है कि संविधान के तहत यह दुष्चक्र उत्पन्न नहीं हो सकता है। रिलायंस को कला में पहले स्थान पर रखा गया है। 31 (3) संविधान में कहा गया है:

" राज्य के विधान-मंडल द्वारा बनाए गए खंड (2) में निर्दिष्ट कोई भी विधि तब तक प्रभावी नहीं होगी जब तक कि राष्ट्रपति के विचार के लिए आरक्षित ऐसी विधि को उसकी सहमति प्राप्त न हो गई हो।

किसी राज्य के अधिग्रहण के लिए प्रावधान करने वाले कानून के लिए संपत्ति और यदि ऐसा है, तो सी. एल. (3) इस तरह के कानून पर भी यह लागू नहीं होगा। भले ही कला। 31 (3) लागू होता है, ऐसा कुछ भी नहीं है जो राष्ट्रपति को देने से रोकता है

एक विशेष कार्यपालक क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता है। यदि ऐसा है, तो कला। 31 (3) ऊपर बताए गए संघर्ष को हमेशा रोक नहीं सकता है। कहा जाता है कि कला। 254 (1) संसद द्वारा बनाए गए कानून के पक्ष में ऐसे संघर्षों का हमेशा समाधान किया जाएगा। लेकिन कला। 254 (1) संसद द्वारा बनाए गए कानून की सहायता तभी की जा सकती है जब उस कानून और उसके द्वारा बनाए गए कानून के बीच विरोधाभास हो। राज्य विधानमंडल। लेकिन दिए गए चित्रण में

द्वारा बनाए गए कानून के लिए ऐसी कोई घृणा नहीं है

संसद प्रो के अधिग्रहण के लिए प्रावधान करती है

राज्य का प्रतिभूति, जबकि राज्य द्वारा बनाया गया कानून संपत्ति के अधिग्रहण का प्रावधान करता है।

संघ के स्वामित्व में। वह क्षण जब राज्य समर्थक

पेटी को संघ द्वारा अधिग्रहित किया जाता है यह प्रो बन जाता है

संघ का लाभ।

ऐसे संदर्भ में कोई 462 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वी. ओ. एल. नहीं है।

दोनों कानूनों के बीच विरोधाभास हालांकि

कार्यपालकसँ रोकबाक अपेक्षा कयल जा सकैत अछि। • यह। संविधान इस तरह का इरादा नहीं रख सकता था। संघ और संघ के बीच संघर्ष का समाधान

राज्यों। दूसरा, यदि संघ का तर्क सही है, तो संसद बिना मुआवजे के किसी राज्य की पूरी संपत्ति के अधिग्रहण के लिए एक अनुकूल दृष्टिकोण बनाने वाला कानून बना सकती है। यह अप्रत्यक्ष रूप से राज्य को काम करने से रोक सकता है; यह राज्य के स्वामित्व वाली और उसके कार्यालयों के लिए उपयोग की जाने वाली इमारतों का अधिग्रहण कर सकता है; यह न केवल उसके कार्यालयों का अधिग्रहण करके बल्कि उसके भवनों और कार्यों का भी अधिग्रहण करके राज्य के अधिकार क्षेत्र के आधार को छीन सकता है, जिनका रखरखाव जनता के लिए किया जाता है।

अच्छा है। हालाँकि संसद से ऐसी स्थिति पैदा करने की उम्मीद नहीं की जा सकती है, लेकिन ऐसा करने से कुछ भी नहीं रोकेगा। एक ऐसा निर्माण जो संविधान द्वारा परिकल्पित रूप से राज्य को कार्य करने से रोक सकता है, उसे आसानी से स्वीकार नहीं किया जा सकता है जब तक कि इसे

संविधान में ही स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किया गया हो। ऐसा कहा जाता है कि संसद अनुच्छेद के तहत राज्य को नष्ट कर सकती है। 3 इसलिए, किसी राज्य के लिए इससे अधिक अप्रिय कुछ नहीं हो सकता है यदि इस सीमित शक्ति को सौंप दिया जाता है, क्योंकि एक बड़ी शक्ति पहले ही संसद में निहित हो चुकी है। अनुच्छेद 3 केवल संसद को सक्षम बनाता है।

एक नए राज्य के गठन, किसी राज्य की सीमाओं में परिवर्तन, किसी राज्य के क्षेत्र की वृद्धि या कमी या किसी राज्य के नाम में परिवर्तन के लिए कानून बनाना। ऐसी शक्ति स्पष्ट रूप से संसद को दी गई है और इसलिए, यह उस अनुच्छेद के तहत कार्य कर सकती है। लेकिन इसका किसी राज्य की संपत्ति हासिल करने की शक्ति से कोई लेना-देना नहीं है। तीसरा, जब संविधान ने कानूनी संस्थाओं का निर्माण किया और उनके बीच संप्रभु शक्तियों का वितरण किया, तो संविधान के अस्पष्ट प्रावधानों को इस तरह से समझना अनुचित है कि 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 463

उनके बीच संघर्ष या एक को दूसरे का प्राणी बनाना। यह कहा जाता है कि यदि ऐसी शक्ति संघ को नहीं दी जाती है, तो राज्य संघ के साथ सहयोग नहीं कर सकते हैं।

अपने-अपने संविधानों के तहत शक्तिशाली, लेकिन हमारे संविधान के तहत ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके तहत राज्य व्यावहारिक रूप से कई मायनों में संघ के प्रति समर्पित हैं। अमेरिका में राष्ट्रीय नीतियों को लागू करने के लिए निहित शक्तियों को विकसित करना आवश्यक था।

भारत के संविधान ने संघ को प्रदान किया है

उस दिशा में पर्याप्त शक्तियाँ। ऐसी स्थिति में

इस न्यायालय को राज्यों की पहले से ही सीमित शक्तियों को कम करने के लिए बहुत अनिच्छुक होना चाहिए और ऐसा नहीं होना चाहिए:

निर्माण द्वारा, संघीय संरचना को एक में परिवर्तित करें
जिसका संविधान

सरकार का एकात्मक रूप

अस्वीकार कर दिया है।

इस स्तर पर एक और तर्क आगे बढ़ा

पश्चिम बंगाल के लिए विद्वान महाधिवक्ता

बनो।

ध्यान दिया। वह कला के तहत इसका विरोध करता है। 294 में से

संविधान सभी कोयला खदानें महामहिम में निहित हैं

राज्य में निहित प्रांत के प्रयोजनों के लिए

पश्चिम बंगाल की शुरुआत से

संविधान; और वह, इसलिए, जब तक कि कोई उन्हें अलग करने के लिए संवैधानिक प्रावधान व्यक्त करना,

उन्हें पार्लिया द्वारा बनाए गए कानून द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता था।

मन में। मैं बार में दिए गए निर्णयों पर विचार करूंगा।

अगर तर्क

इस संदर्भ में बाद के चरण में।

संघ की ओर से दिया गया अग्रिम सही है, अर्थात्, कि

संसद में विधायी शक्ति है कि

राज्य की संपत्ति का अधिग्रहण, कला। 294 नहीं हो सकता

अधिग्रहण के लिए प्रावधान करने वाले संघ कानून के रास्ते में

राज्य की संपत्ति का विभाजन। इसके अलावा, कला। 294

केवल राज्य में निहित संपत्ति पर लागू होता है

संविधान का प्रारंभ और न कि संपत्ति जो बाद में उसके द्वारा अधिग्रहित की गई हो।

इस मामले में, जमींदार जहाँ कोयला खदानें हैं

:

464 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [1964] वीओएल।

बाद में पश्चिम बंगाल राज्य में निहित स्थिति

: 1962

कारण से संविधान के प्रारंभ तक

ले ऑफ वेस्ट

एक राज्य कानून। लेकिन यह तर्क दिया जाता है कि हालांकि

बंगाल

जमींदारों की सतह की मिट्टी जमींदारों के पास थी,

भारत का आगमन

कोयले की खानें इससे पहले महामहिम में निहित थीं

बी. ए. राव, जे.

संविधान और उसके प्रारंभ में

संविधान राज्य में निहित रहा। लेकिन यह

तर्क द्वारा दिए गए निर्णयों की श्रृंखला के विपरीत है

प्रिन्सीपल काउंसिल: हरिनारायण सिंह देव बनाम देखें।

श्रीराम चक्रवर्ती (1); दुर्गा प्रसाद सिंह बनाम।

ब्रजनाथ बोस (1); शशि भूषण मिश्रा बनाम। ज्योति

प्रसाद सिंह देव (3); राजकुमार ठाकुर गिरधारी

सिंह बनाम। मेघ लाल पांडे (1); और रघुनाथ राय

जमींदारों के बीच विवाद में निर्णय दिए गए थे

और उनके किरायेदारों, कुछ में टिप्पणियाँ

निर्णय विद्वानों के तर्क के विपरीत होते हैं

महाधिवक्ता। उन्होंने हमारे सामने कुछ नहीं रखा है।

उसके विवाद का समर्थन करने का अधिकार; लेकिन वह बदल जाता है
मूल रूप से सुझाव दिया कि हालांकि एस्टेट के साथ
कोयला-खदानें जमींदारों की हो सकती हैं,
उक्त संपदाओं में वापसी महामहिम के पास थी
और बाद में राज्य के साथ। यह इसके विपरीत है
स्थायी निपटान के सिद्धांत, के तहत
ब्रिटिश सरकार द्वारा दिया गया स्थायी समझौता
जमींदारों को एक स्थायी वंशानुगत संपत्ति

इसे किसी भी परिस्थिति में बढ़ाया नहीं जा सकता था। द.
स्थायी निपटान नियम के तहत दिए गए सन्नद

लेशनस के पास कोई प्रत्यावर्ती अधिकार नहीं था

सरकार। जैसा कि मैंने माना है कि, भले ही कोई ब्याज हो
राज्य में निहित था, इसे एक द्वारा विनिवेश किया जा सकता था

यदि आवश्यक हो तो उपयुक्त विधानमंडल का अधिनियम

- संविधान द्वारा इसे शक्ति प्रदान की गई थी, मैं करता हूँ

इस पर अपनी अंतिम राय व्यक्त करने का प्रस्ताव नहीं है।

सवाल करते हैं।

संवैधानिक

आक्षेपित की वैधता

अधिनियम की अगली मांग की जाती है

के आधार पर

(1) (1910) एल. एल. आर. 37 कैल. 723 .

(2) (1912)

आई. एल. आर. 39 कैल. 696 .

(3) (1916) आई. एल. आर. 44 कैल. 585 .

(4) (1917)

आई. एल. आर. 45 कैल. 87 .

(5) (1919) एल. एल. आर. 47

सीएल, 95।

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 465

संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची I की प्रविष्टि 52 और प्रविष्टि 54। वे पढ़ते हैं:

सूची I की प्रविष्टि 52: उद्योग, जिनका संघ द्वारा नियंत्रण संसद द्वारा कानून द्वारा सार्वजनिक हित में समीचीन घोषित किया जाता है।

सूची I की प्रविष्टि 54: खानों और खनिज विकास का विनियमन जिस हद तक संघ के नियंत्रण में ऐसे विनियमन और विकास को संसद द्वारा कानून द्वारा जनहित में समीचीन घोषित किया जाता है।

इन दो प्रावधानों का अर्थ लगाने से पहले, राज्य सूची, सूची 2 की प्रविष्टियों 23 और 24 को पढ़ना सुविधाजनक होगा:

सूची 2 की प्रविष्टि 23: संघ के नियंत्रण में विनियमन और विकास के संबंध में सूची I के प्रावधानों के अधीन खानों और खनिज विकास का विनियमन।

सूची II की प्रविष्टि 24: सूची I की प्रविष्टियों 7 और 52 के प्रावधानों के अधीन उद्योग।

चार प्रविष्टियों के संयुक्त अध्ययन से पता चलता है कि आम तौर पर उद्योग और खानों का विनियमन और खनिज विकास राज्य के विषय हैं। लेकिन यदि संसद यह घोषणा करते हुए कोई कानून बनाती है कि कोई भी पक्षीय उद्योग लोक हित में संघ के नियंत्रण में होना चाहिए या किसी खदान या खनिज विकास के विनियमन उसके नियंत्रण में होने चाहिए, तो उस हद तक सूची II की 24 और 23 प्रविष्टियां सूची I की प्रविष्टियों 52 और 54 पर निर्भर करेंगी। 1951 (65 1951), संसद ने घोषणा की है कि "यह जनहित में समीचीन है कि संघ को पहली अनुसूची में निर्दिष्ट उद्योगों को अपने नियंत्रण में लेना चाहिए", जिसमें कोयला शामिल है और इसलिए, यह तर्क दिया जाता है कि कोयला उद्योग का विषय संसद को पारित किया गया और उसके बाद 466 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1964] वीओएल बनाया गया।

कोयले वाली भूमि के अधिग्रहण के लिए इसकी शक्ति के भीतर था। अगर मैं ऐसा कह सकता हूं, तो इस तर्क में एक भ्रंति है। सूची I की प्रविष्टि 52 के तहत एक घोषणा निस्संदेह संसद को एक उद्योग के संबंध में एक कानून बनाने में सक्षम बनाएगी, जिसका अर्थ है कि संसद किसी मौजूदा उद्योग या उद्योग के संबंध में कानून बना सकती है जिसे बाद में शुरू किया जा सकता है। इसलिए भी, घोषणा से पहले एक राज्य विधानमंडल सूची II की प्रविष्टि 24 के आधार पर एक उद्योग के संबंध में एक कानून बना सकता था। लेकिन न तो सूची II की प्रविष्टि 24 और न ही सूची I की प्रविष्टि 52 उक्त घोषणा से पहले राज्य विधानमंडल को या उसके बाद संसद को सशक्त बनाती है।

अधिग्रहण के लिए कानून बनाने के लिए ऐसी घोषणा

भूमि। यदि घोषणा से पहले राज्य विधानमंडल या घोषणा के बाद संसद भूमि का अधिग्रहण करना चाहती है तो वह केवल सूची III की प्रविष्टि 42 के आधार पर कानून बनाने के लिए आगे बढ़ सकती है। जैसा कि मैंने माना है कि सूची III की प्रविष्टि 42 संसद को यह करने में सक्षम नहीं बनाती है कि

किसी राज्य की संपत्ति के अधिग्रहण के लिए प्रावधान करने वाली कानून, सूची I की प्रविष्टि 52 पर ऐसे उद्देश्य के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता है। कोयला खान (संरक्षण और सुरक्षा) अधिनियम, 1952 (1952 का 12 वां अधिनियम) पर भी इस तर्क के समर्थन में भरोसा रखा गया है कि उसमें निहित घोषणा ने इन बातों को महत्व दिया है -

सूची I की प्रविष्टि 54 और यह कि विवादित अधिनियम कर सकता है

उस प्रविष्टि के तहत बनाए रखा जाए। इसका खंड 2

अधिनियम कहता है:

" एतद्वारा यह घोषित किया जाता है कि जनहित में यह समीचीन है कि केंद्र सरकार को कोयला खदानों के विनियमन को अपने नियंत्रण में लेना चाहिए।

इस तर्क का सरल उत्तर यह है कि घोषणा

राशन नियंत्रण और विनियमन तक सीमित था

उस अधिनियम द्वारा प्रदान की गई सीमा तक कोयला खदानों और इस तरह की घोषणा, अपने सीमित दायरे के साथ, विवादित अधिनियम को बनाए रखने के लिए लाभ नहीं उठाया जा सकता था। इसके अलावा, प्रविष्टि "खानों के विनियमन" के तहत 1 एस. सी. आर. वाले कोयले के अधिग्रहण के लिए कोई कानून नहीं बनाया जा सकता है।

भूमि स्वयं, विशेष रूप से जब अधिग्रहण के लिए एक विशिष्ट प्रविष्टि हो। न ही खान और खनिज (विनियमन और विकास) अधिनियम 1957 (1957 का अधिनियम 67) को इस मामले में उस अधिनियम के लिए सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है, जिसमें यह घोषणा की गई है कि जनहित में यह समीचीन है कि संघ को खानों के विनियमन और खनिजों के विकास को अपने नियंत्रण में लेना चाहिए।

इसमें 28 दिसंबर, 1957 को पारित किया गया था, जबकि विवादित अधिनियम 8 जून, 1957 को पारित किया गया था। वह घोषणा भी उसके तहत प्रदान किए गए विनियमन की सीमा तक ही सीमित थी और इसलिए

उस अधिनियम द्वारा समझे गए उद्देश्यों के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए उन पर भरोसा नहीं किया जाएगा। यह इस प्रकार है कि संसद तीन अधिनियमों में से किसी में भी घोषणा पर भरोसा नहीं कर सकती है, यानी 1951 का अधिनियम 65, 1952 का अधिनियम 12 और 1957 का अधिनियम 67, विवादित कानून को बनाए रखने के लिए जो केवल कोयला वाले क्षेत्रों के अधिग्रहण के उद्देश्य से बनाया गया था।

समर्थन में अमेरी कैन, ऑस्ट्रेलियाई और कनाडाई निर्णय से निर्वाह की मांग की गई है

संघ का तर्क है कि एक संघीय कानून किसी राज्य के स्वामित्व वाली संपत्ति के अधिग्रहण के लिए प्रावधान कर सकता है। विदेशी न्यायालय के निर्णयों को स्वीकार करने से पहले, उक्त न्यायालय के संविधान के बीच प्रासंगिक मूलभूत अंतरों को जानना आवश्यक होगा।

देश और हमारा अपना। अमेरिका में कोई पूर्व नहीं है

कांग्रेस को सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए किसी भी संपत्ति के अधिग्रहण के लिए कानून बनाने में सक्षम बनाने के लिए प्रेस शक्ति प्रदान की गई। संघीय और राज्य इकाइयों के लिए संचालन का एक सामान्य क्षेत्र देने वाली कोई समवर्ती सूची भी नहीं है। अधिग्रहण की शक्ति का विकास न्यायिक निर्णयों द्वारा किया गया था

निहित शक्तियों का सिद्धांत। इसलिए, उस देश का कानून हमारे संविधान के तहत विभिन्न इकाइयों को व्यक्त शक्तियां प्रदान करने वाले प्रावधानों को लागू करने में बहुत अधिक प्रासंगिक नहीं हो सकता है। न ही संघ की ओर से उद्धृत निर्णय 468 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [1984] वी. ओ. एल. का कोई समर्थन करते हैं।

विवाद को आगे बढ़ाया। ओक्ला होमा एक्स राज्य में। रिले। लियोन सी. फिलिप्स बनाम गाय एफ. एटकिंसन कंपनी (1), 1938 का बाढ़ नियंत्रण अधिनियम

डेनिसन जलाशय के निर्माण को ध्वस्त कर दिया मिसिसिपी नदी में बाढ़ के नियंत्रण के लिए एक व्यापक योजना के हिस्से के रूप में लाल नदी और इसकी सहायक नदियाँ। वह कानून कांग्रेस ने बनाया था। दो राज्यों को एक राज्य में भूमि को जलमग्न करना था। द. सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि तथ्य यह है कि भूमि थी किसी राज्य का स्वामित्व इसकी निंदा में बाधा नहीं था

संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा। यह भी पाया गया कि राज्य सरकार इस कवायद को रोक नहीं सकी संघीय सरकार की अपनी प्रमुख शक्ति बाढ़ नियंत्रण उद्देश्यों के लिए क्षेत्र, केवल इसलिए कि राज्य की सीमा को फ्लू द्वारा मिटा दिया जाएगा ली गई भूमि का टुकड़ा। इसमें यह देखा गया था:

" इस बांध और रेसर के निर्माण के बाद से वायर कांग्रेस द्वारा अपने काम की एक वैध कवायद है। मर्से शक्ति, के साथ कोई हस्तक्षेप नहीं है राज्य की संप्रभुता। तथ्य यह है कि भूमि किसी राज्य के स्वामित्व में है संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसकी निंदा में बाधा राज्यों।

ही कोई राज्य कॉल कर सकता है प्रतिष्ठित क्षेत्र के अभ्यास को रोकें संघीय सरकार की शक्ति क्योंकि इसके बाद ली गई भूमि में बाढ़ आ जाएगी।

इसकी सीमा तय कीजिए। "

यह रिपोर्ट से प्रकट नहीं होता है, हालांकि फ्रा।

उपयोग की जाने वाली सीओलॉजी व्यापक है, कि क्या जलमग्न हो गया था या राज्य के स्वामित्व वाली संपत्ति या राज्य क्षेत्र को मिटा दिया गया था टोरी। यह मानते हुए कि राज्य की संपत्ति डूब गई थी संघीय कानून के संचालन के कारण, यह निर्णय को केवल निर्धारित किया जा सकता है

सीमित प्रस्ताव कि कांग्रेस अभ्यास में है इसकी वाणिज्य शक्ति संयोग से एक कानून बना सकती है।

राज्य की संपत्ति का अतिक्रमण करना। द चेरोकी नेशन बनाम में निर्णय। सदर्न कैनसस रेलवे कंपनी (1) इस मामले को आगे नहीं ले जाती है। वहाँ यह माना गया कि कांग्रेस के पास भारतीय जनजातियों के क्षेत्र के माध्यम से रेल सड़क बनाने के लिए एक निगम को अधिकृत करने की शक्ति थी। यह बताया गया कि चेरोकी राष्ट्र एक संप्रभु राष्ट्र नहीं था, बल्कि संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के राजनीतिक नियंत्रण में था और इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता था कि उसके क्षेत्र के भीतर प्रतिष्ठित क्षेत्र का अधिकार था।

इसका प्रयोग केवल इसके द्वारा किया जा सकता था न कि संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा। इसमें यह देखा गया था:

" चेरोकी क्षेत्र की भूमि, जैसे हर जगह निजी मालिकों द्वारा धारित भूमिसंयुक्त राज्य अमेरिका की भौगोलिक सीमाएँ, जनरल के अधिकार के अधीन आयोजित किए जाते हैं सरकार उन्हें ऐसे उद्देश्यों के लिए ले जाएगी जो हैं प्रदत्त शक्तियों के निष्पादन के लिए जर्मन इसे; केवल बशर्ते, कि उन्हें नहीं लिया जाता है उचित मुआवजे के बिना मालिक "।

इसलिए यह मामला पूरी तरह से एक अलग आधार पर आगे बढ़ा, अर्थात्, कि पूरा क्षेत्र संघीय सरकार के अधीन था और फेडरल सरकार उस क्षेत्र के संबंध में प्रतिष्ठित क्षेत्र की अपनी शक्ति का प्रयोग कर सकती थी। ऐसा भी नहीं है

कोल बनाम में निर्णय। संयुक्त राज्य अमेरिका (1), प्रतिवादी का समर्थन करता है। वहाँ यह माना गया कि संयुक्त राज्य अमेरिका सिनसिनाटी में एक डाकघर और अन्य सार्वजनिक भवनों के लिए भूमि का अधिग्रहण कर सकता है। संपत्ति को वहाँ अधिग्रहित करने की मांग की गई

क्या राज्य में निजी संपत्ति थी और उसमें लिया गया निर्णय वर्तमान प्रश्न पर बहुत कम प्रकाश डालता है।

अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय

बिन्दु पर स्पष्ट हैं।, कि कांग्रेस को दी गई शक्ति का प्रयोग करते हुए, स्पष्ट रूप से या निहितार्थ से, कानून बनाया जा सकता है

संघीय कार्य करने के लिए किसी राज्य में निजी संपत्ति

क्या उक्त कानून निंदा का प्रावधान कर सकता है
संपत्ति का अधिग्रहण।

राज्यों के स्वामित्व वाली

निकोलस ऑन एमिनेन्ट डोमेन में, तीसरा संस्करण।, खण्ड. आई, पी। 160, निम्नलिखित अंश प्रकट होता है:

" संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान के पांचवें संशोधन के वाक्यांश के बावजूद कि "निजी संपत्ति" को उचित मुआवजे के भुगतान के अलावा सार्वजनिक उपयोग के लिए नहीं लिया जाएगा, यह माना गया है कि इससे कोई निहित सीमा नहीं है जो संघीय द्वारा सार्वजनिक संपत्ति का अधिग्रहण सरकार और बाद वाला अधिग्रहण कर सकते हैं

किसी राज्य या उसकी किसी एजेंसी या उप-प्रभाग की संपत्ति। " हालाँकि संघीय सरकार के पास ऐसी संपत्ति हासिल करने की शक्ति है, लेकिन रिश्तेदार संघीय और राज्य सरकारों की स्थिति ऐसी है कि ऐसा लगता है कि संयुक्त राज्य केवल धोखाधड़ी के लिए नहीं कर सकते थे

अन्यथा, एक राज्य की संपत्ति ले लो जो जनता के उपयोग के लिए समर्पित थी जिसका नुकसान राज्य को जारी रखने में गंभीर रूप से अपंग कर देगा। उनके कार्य। आवश्यकता के मामले में, जैसा कि केवल सुविधा से अलग है, राज्य को हार माननी होगी "कोई भी घटना" ""

उक्त परिच्छेद राज्य की संपत्ति और सार्वजनिक उद्देश्य के लिए राज्य द्वारा समर्पित संपत्ति के बीच अंतर करता है-पहले को अर्जित किया जा सकता है और बाद वाले को आम तौर पर संघीय सरकार द्वारा अधिग्रहित नहीं किया जा सकता है। ये सिद्धांत कांग्रेस को दी गई किसी विशेष शक्ति पर आधारित नहीं हैं, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि वे उस देश में उत्पन्न होने वाली ठोस समस्याओं के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं।

इस तरह के दृष्टिकोण की हमारे संविधान के साथ कोई प्रासंगिकता नहीं हो सकती है जहां शक्तियों को विशिष्टता के साथ वर्णित किया गया है। "संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान पर विलोबी", खंड: 1, पी पर। 180, अर्थात्, "कि, संघर्ष के मामलों में, राज्यों के प्रमुख क्षेत्र की शक्ति को इसके अधीन होना चाहिए

प्रतिष्ठित क्षेत्र की संवैधानिक रूप से श्रेष्ठ शक्ति यह राज्यों के स्वामित्व वाली संपत्ति के अधिग्रहण से संबंधित नहीं है, बल्कि संघ के प्रमुख क्षेत्र की शक्तियों और राज्यों के बीच संघर्ष के समाधान से संबंधित है, जब वे दोनों एक राज्य के भीतर संपत्ति हासिल करना चाहते हैं। यह सिद्धांत द्वारा दी गई सर्वोच्चता पर आधारित है

संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार को उसके अधिकार क्षेत्र के भीतर सभी मामलों में संविधान इग्नोटी।

उक्त चर्चा से पता चलता है कि वर्तमान मामले में उठाए गए प्रश्न पर अमेरिका में कानून स्पष्ट नहीं है। संवैधानिक प्रावधानों में स्वीकृत मतभेदों को देखते हुए, हमारे संविधान के प्रावधानों को समझने में इस पर भरोसा करना सुरक्षित नहीं होगा।

यह।

यह प्रावधान करता है कि राष्ट्रमंडल किसी से भी न्यायसंगत शर्तों पर संपत्ति के अधिग्रहण के लिए कानून बना सकता है। राज्य या व्यक्ति: ऑस्ट्रेलिया में वाइन्स की विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शक्तियाँ देखें, पी। 441. यदि बिल्कुल भी, उक्त प्रावधान इंगित करता है कि एक संघीय रूप में

सरकार की एक संप्रभु इकाई दूसरी की संपत्ति का अधिग्रहण नहीं कर सकती है जब तक कि संविधान स्पष्ट रूप से इसके लिए प्रावधान नहीं करता है।

संघ और विपक्ष दोनों को स्पष्ट रूप से प्रतिष्ठित क्षेत्र की शक्ति प्रदान करने वाली कोई समवर्ती सूची नहीं है विशिष्ट राज्य। रिलायंस की ओर से रखा गया है

अटॉर्नी-कनाडा के डोमिनियन के लिए जनरल बनाम। ओंटारियो के प्रांतों के लिए अटॉर्नी-जनरल,

क्यूबेक और नोवा स्कोटिया (1)। ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम, 1867 की धारा 91 और 92 ने डोमिनियन और डोमिनियन के बीच विधायी शक्तियों का वितरण किया।

कनाडा के प्रांत। एस के तहत। 108 निश्चित रूप से संपत्ति की वस्तुओं को डोमिनियन में स्थानांतरित कर दिया गया था, उनमें से एक "नदियों और झीलों में सुधार" है। और सार्वजनिक बंदरगाह "। स्वामित्व का अवशेष

एस द्वारा डोमिनियन को हस्तांतरित नहीं किए गए अधिकार। 108 और अनुसूची III प्रांतों में निहित रही

जे. ई. टी. से एस. एस.। 109 और 117; और विधायी अधिकारिता का अवशेष जो एस. एस. में शामिल नहीं है। 91 और 92

डोमिनियन में निहित। में उठाए गए सवाल

डोमिनियन को स्थानांतरित किया गया, और क्या डोमिनियन एस के तहत एक कानून बना सकता है। 91 प्रभावित करता है नदी में मत्स्य पालन और मछली पकड़ने के अधिकार। द

प्रिवीपरिषद ने माना कि नदी में स्वामित्व अधिकार अंग्रेजों की तारीख को प्रांत में निहित उत्तरी अमेरिका अधिनियम, 1867 और वह। 108 द्रांस द्वारा नदियों और झीलों के परिवहन में सुधार नहीं हुआ नदियों में स्वामित्व अधिकार। दूसरे पर सवाल, यह माना जाता है कि एस। 91 डोमिनियन को सशक्त बनाया नदियों में मछली पकड़ने के अधिकार पर कर लगाने वाला कानून बनाना। लॉर्ड हर्शल ने एक व्यापक विशिष्टता दांव को मान्यता दी स्वामित्व अधिकार और विधायी क्षेत्राधिकार और यह तथ्य कि इस तरह के अधिकार क्षेत्र में एक विशेष विषय का सम्मान-विषय प्रदान किया गया था डोमिनियन विधानमंडल पर कोई सबूत नहीं दिया गया कि इसके संबंध में कोई भी स्वामित्व अधिकार थे डोमिनियन में स्थानांतरित किया गया। यह देखा जाता है कि

पी। 730 : " हालाँकि, यदि विधानमंडल अन्य स्वामित्व अधिकारों को प्रदान करने का इरादा रखता है, जहाँ उसके पास स्वयं कोई अधिकार नहीं है, तो उनके प्रभुओं की राय में विधायी अधिकार क्षेत्र का अभ्यास नहीं है।

एस द्वारा प्रदान किया गया। 91. यदि इसके विपरीत आयोजित किया जाता है, तो यह होगा कि डोमिनियन हो सकता है

1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट 473

व्यावहारिक रूप से अपनी संपत्ति को हस्तांतरित करता है जिसके पास है, ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम द्वारा, छोड़ दिया गया है

प्रांत और इसमें निहित नहीं। "

अतः यह निर्णय इस स्थिति के लिए एक प्राधिकरण है कि जब संविधान विशेष रूप से इसके पक्ष में है।

शासी इकाइयों में से एक में, दूसरा कानून द्वारा उन संपत्तियों पर कब्जा नहीं कर सकता है, क्योंकि अगर इसकी अनुमति दी जाती है तो एक दूसरे को नष्ट कर सकता है।

य

ह

निर्णय पश्चिम बंगाल के विद्वान महाधिवक्ता के व्यापक तर्क का समर्थन करता है कि संपत्तियाँ किसी राज्य में निहित किसी विधायी शक्ति का प्रयोग करते हुए संघ द्वारा उस पर कब्जा नहीं किया जा सकता है। ब्रिटिश कोलंबिया कैनेडियन पैसिफिक रेलवे कंपनी (1) के लिए अटॉर्नी-जनरल न्यायिक समिति द्वारा इस निर्णय के व्यापक विस्तार को कुछ हद तक प्रतिबंधित कर दिया

गया है। वहाँ, न्यायिक समिति ने यह अभिनिर्धारित किया। 91 और 92, एक साथ पढ़ें, डोमिनियन को प्रांतीय क्राउन भूमि का निपटान करने का अधिकार दिया, और इसलिए एक प्रांतीय फोरशोर, उद्देश्यों के लिए

उत्तरदाता रेलवे, जो कई प्रांतों को जोड़ने वाली एक अंतरमहाद्वीपीय रेलवे थी। उस निष्कर्ष पर पहुंचने में न्यायिक समिति ने कैनेडियन पैसिफिक रेलवे कंपनी v में अपने पहले के फैसलों पर भरोसा किया। नोटरे डेम डी बॉसेकोर्स () के पैरिश का निगम, और टोरॉन् से निगम बनाम। कनाडा की बेल टेलीफोन कंपनी (3)। यद्यपि क्राउन भूमि एक प्रांत में निहित थी, संविधान अधिनियम ने डोमिनियन पर एक स्पष्ट शक्ति प्रदान की, जिससे यह क्राउन भूमि को प्रभावित करने वाले अंतर-राज्य उद्देश्यों के लिए एक कानून बनाने में सक्षम हो गया। यही विचार प्रिंसीपल काउंसिल इन अटॉर्नी-जनरल फॉर क्यूबेक बनाम द्वारा दोहराया गया था। निपीसिंग सेंटरल रेलवे कंपनी एंड अटॉर्नी कनाडा के लिए जनरल (1)। कनाडाई निर्णय विद्वानों के व्यापक विवाद का समर्थन नहीं करता है।

महान्यायवादी कि किसी राज्य में निहित संपत्तियों का अधिग्रहण संघ के कानून द्वारा सूची III की प्रविष्टि 42 या हमारी सूची I की प्रविष्टि 52 के आधार पर किया जा सकता है। संविधान। इस तथ्य के अलावा कि अन्य संविधानों के प्रासंगिक प्रावधान नहीं हैं

भारतीय संविधान के समान, उद्धृत निर्णय दोनों प्रतिद्वंद्वी विवादों में से किसी का समर्थन करने के लिए एक स्पष्ट प्राधिकरण का गठन नहीं करते हैं, हालांकि उनमें कुछ टिप्पणियां हैं जिन पर दोनों पक्षों द्वारा भरोसा किया जा सकता है। इन परिस्थितियों में, इस न्यायालय के लिए यह उचित नहीं होगा कि वह विदेशी संविधानों या उसके तहत किए गए निर्णयों से कोई प्रेरणा लेकर इन स्पष्ट प्रावधानों का अर्थ निकाले:

हमारा संविधान अपनी अलग व्यवस्था के संदर्भ में। मैंने केवल सम्मान के लिए निर्णयों का उल्लेख किया है।

तर्क को आगे बढ़ाने के लिए।

निष्कर्ष निकालने के लिए: भारतीय संविधान संघीय अवधारणा को स्वीकार करता है और संप्रभुता को वितरित करता है।

समन्वित संवैधानिक संस्थाओं, अर्थात् संघ और राज्यों के बीच शक्तियाँ। यह अवधारणा

अपने आवंटित क्षेत्रों में काम करने वाली दो समन्वित इकाइयों के बीच संबंधों पर विचार करना: यह है संविधान के अन्य प्रावधानों द्वारा विनियमित और ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जो एक इकाई को समझौते के अलावा दूसरे की संपत्ति छीनने में सक्षम बनाता है।

विविधता में एकता के साथ हमारे विशाल देश की भविष्य की स्थिरता संघीय सिद्धांत के सख्त पालन पर निर्भर करती है, जिसे हमारे संविधान निर्माताओं ने इतनी बुद्धिमानी और दूरदर्शिता से इसमें शामिल किया है। इस न्यायालय के पास संवैधानिक शक्ति है और

सहसंबंधी कर्तव्य-राज्य क्षेत्र संघ द्वारा या इसके विपरीत, खुले तौर पर या गुप्त रूप से अतिक्रमण को रोकने के लिए एक कठिन और नाजुक कर्तव्य, और इस प्रकार संघ का संतुलन बनाए रखना। वर्तमान एक विशिष्ट मामला है जहाँ न्यायालय को संघ को अपनी सीमा पार करने और राज्य क्षेत्र में अतिक्रमण करने से रोकना चाहिए। इसलिए, मेरा मानना है कि विवादित अधिनियम, जहां तक यह 1 एस. सी. आर. सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट 475 को शक्ति प्रदान करता है।

राज्य के स्वामित्व वाली भूमि, जिसमें कोयला खदानें और सी. ओ. ए. वाली भूमि शामिल हैं, का अधिग्रहण करना संघ का अधिकार क्षेत्र से बाहर है। मैं प्रतिवादी के खिलाफ 1, 2 और 3 मुद्दों पर पाता हूँ: उक्त मुद्दे पर अपने निष्कर्षों को देखते हुए, मैं अतिरिक्त मुद्दे पर अपनी राय व्यक्त करने के लिए तैयार नहीं हूँ।

नतीजतन, पक्ष में एक फरमान होगा सी. एल. एस. के संदर्भ में वादी का। (अभियोग के अनुच्छेद 11 का क), (ग) और (घ)। वादी का अधिकार है खर्चों के लिए।

न्यायालय द्वारा: के निर्णय को देखते हुए बहुमत से, मुकदमा लागत के साथ खारिज कर दिया जाता है। याचिका खारिज कर दी गई।